CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय पुरातत्त्व

भाग 2

भारत में पुरातत्त्व-विज्ञान
की
प्रगति

सन् 1953 से 1956 तक

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

'इंडियन आर्क्यालोजी--ए रिव्यू' के आधार पर

913.54
श 3611 भ
2.

अनुवादक
केदारनाथ शास्त्री

3611

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारतीय पुरातत्त्व

भाग 2

भारत में पुरातत्त्व–विज्ञान

की

प्रगति

सन् 1953 से 1956 तक

सत्यमेव जयते

'इंडियन आर्क्यालोजी---ए रिव्यू' के आधार पर

अनुवादक

केदारनाथ शास्त्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

©

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

1965

913.54

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

	पृष्ठ
अध्याय 1	1
भारतीय पुरातत्त्व 1953-54	1
उत्खनन	3
बीरभानपुर, जिला बर्दवान	3
रोपड़, जिला अम्बाला	3
रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर	4
महेश्वर, जिला निमाड़ (मध्य प्रदेश)	4
लंघनाज, जिला अहमदाबाद	5
मास्की, जिला रायचूर	5
राजगिर, जिला पटना	5
कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद	6
कुम्रहार, जिला पटना	6
वड़नगर, जिला मेहसाना	6
जगत्ग्राम, जिला देहरादून	7
शालिहुंडम्, जिला श्रीकाकुलम्	7
पल्लवमेडु, जिला कांचीपुरम्	8
सीरपुर, जिला रायपुर	8
भिनमाल, जिला जोधपुर	8
मुम्माखान, श्रीनगर	8
अध्याय 2	9
भारतीय पुरातत्त्व 1954-55	9
उत्खनन	11
नेवासा, जिला अहमदनगर	11
रोपड़, जिला अम्बाला	13
बाड़ा और सलौड़ा, जिला अम्बाला	13
रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर	13
लोथल, जिला अहमदाबाद	14
प्रकाश, जिला धूलिया	14
पुराना किला, नई दिल्ली	15
आहाड़, जिला उदयपुर	15
मथुरा	16
राजगिर, जिला पटना	17
कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद	17
कुम्रहार, जिला पटना	18
तामलुक, जिला मिदनापुर	1[illegible]
अमृतमंगलम्, जिला चिंगलपट	1[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

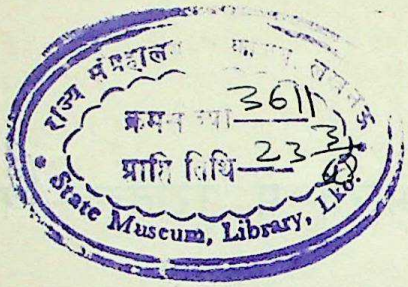

©

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

1965

913.54

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

	पृष्ठ
अध्याय 1	1
भारतीय पुरातत्त्व 1953-54	1
उत्खनन	3
बीरभानपुर, जिला बर्दवान	3
रोपड़, जिला अम्बाला	3
रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर	4
महेश्वर, जिला निमाड़ (मध्य प्रदेश)	4
लंघनाज, जिला अहमदाबाद	5
मास्की, जिला रायचूर	5
राजगिर, जिला पटना	5
कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद	6
कुम्रहार, जिला पटना	6
वड़नगर, जिला मेहसाना	6
जगत्ग्राम, जिला देहरादून	7
शालिहुंडम्, जिला श्रीकाकुलम्	7
पल्लवमेडु, जिला कांचीपुरम्	8
सीरपुर, जिला रायपुर	8
भिनमाल, जिला जोधपुर	8
मुम्माखान, श्रीनगर	8
अध्याय 2	9
भारतीय पुरातत्त्व 1954-55	9
उत्खनन	11
नेवासा, जिला अहमदनगर	11
रोपड़, जिला अम्बाला	13
बाड़ा और सलौड़ा, जिला अम्बाला	13
रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर	13
लोथल, जिला अहमदाबाद	14
प्रकाश, जिला धूलिया	14
पुराना किला, नई दिल्ली	15
आहाड़, जिला उदयपुर	15
मथुरा	16
राजगिर, जिला पटना	17
कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद	17
कुम्रहार, जिला पटना	18
तामलुक, जिला मिदनापुर	18
अमृतमंगलम्, जिला चिंगलपट	19

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ

नागार्जुनकोंडा, जिला गुंटूर 19
तिलदह, जिला मिदनापुर 20
कोट्टुरू, जिला विशाखापटनम् 20
सीरपुर, जिला रायपुर 20
करिआन, जिला दरभंगा 21
भटिंडा किला 21

अध्याय 3 22

भारतीय पुरातत्त्व 1955-56 22
लिपि-अनुसन्धान 23
संरक्षण 23
अनुसन्धान और खुदाई 23
गोदावरी और प्रवरा की घाटियां 24
बम्बई-कर्नाटक क्षेत्र 24
उत्खनन 24
लोथल, जिला अहमदाबाद 24
लखाबावल, जिला हलार 25
आम्रा, जिला हलार 26
सोमनाथ, जिला सोरठ 26
नेवासा, जिला अहमदनगर 26
आहाड़, जिला उदयपुर 27
नागदा, जिला उज्जैन 28
उज्जैन 28
कन्नौज, जिला फर्रुखाबाद 29
कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद 29
पाटलिपुत्र (पटना) 30
कुन्नत्तूर, जिला चिंगलपट 31
नागार्जुनकोंडा, जिला गुंटूर 31
सीरपुर, जिला रायपुर 33
तामिलनाड में अनुसन्धान 34
परिशिष्ट 36

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय 1

भारतीय पुरातत्त्व

(1953-54)

साधारण परिचय

गत वर्ष पुरातत्त्व की केंद्रीय सलाहकार समिति का अधिवेशन नई दिल्ली में 14 अगस्त, 1953 को हुआ । उस समय बड़ी समस्या यह थी कि 'पार्ट बी स्टेट्स' के पुरातत्त्व को भारतीय पुरातत्त्व में किस प्रकार समाविष्ट किया जाए । एक वर्ष के अनन्तर इन राज्यों के अन्तर्गत राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारकों पर भारतीय पुरातत्त्व विभाग का पूर्ण अधिकार हो गया और पिछले वर्ष जो दो नये मंडल अस्तित्व में आए वे भी अपना काम निर्बाध कर रहे हैं ।

गत वर्ष की रिपोर्ट में सन् 1951 में पार्लियामेंट के द्वारा प्रवर्तित "प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक तथा पुरातत्त्व सम्बन्धी स्थान एवं अवशेष अधिनियम" (Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act) का निर्देश किया गया था । अब इस अधिनियम के अधीन 'पार्ट ए स्टेट्स' के अन्तर्गत समस्त स्मारक, जिनका संरक्षण पहले 1904 की प्राचीन स्मारक संरक्षण धारा के अनुसार होता था, और 'पार्ट बी स्टेट्स' के अन्तर्गत बहुत से अन्य स्मारक राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित कर दिए गए हैं । इससे वे समस्त स्मारक विधान के अधीन केंद्रीय सरकार के दायित्व में आ गए हैं । सन् 1953 में इस धारा में जो संशोधन हुआ उसके फलस्वरूप 53 अन्य स्मारक और 18 प्राचीन अवशेष राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित किए गए, और 20 साधारण स्मारक जो पहले इस सूची में थे इसमें से निकाल दिए गए ।

वर्तमान विधान के अनुसार उन स्मारकों का संरक्षण जो राष्ट्रीय महत्त्व के नहीं राज्यों का अपना दायित्व है । अतः आवश्यक है कि इन राज्यों के हाथ में '1904 की प्राचीन स्मारक संरक्षण धारा' के समान कोई वैधानिक शक्ति हो जिससे वे अपने दायित्व का पालन कर सकें । इसलिए केंद्रीय सरकार ने अभी-अभी प्रान्तीय सरकारों को परामर्श दिया है कि स्थानीय स्मारकों के संरक्षण के लिए वे अपने आप को वैधानिक शक्ति से सज्जित कर लें ।

यह भी परम आवश्यक है कि प्रान्तीय सरकारें अपनी पुरातत्त्व संस्थाएं स्थापित करें । इस आवश्यकता का अनुभव करते हुए गत वर्ष समिति ने एक प्रस्ताव पास किया था कि हर एक प्रान्तीय सरकार को एक योग्य पुरातत्त्वज्ञ और उसके सहायक कार्यकर्ता नियुक्त करने चाहियें जो अपने अधिकार के अन्तर्गत स्मारकों तथा प्राचीन स्थानों के संरक्षण-भार को कुशलता से निभा सकें और अपने-अपने क्षेत्र में अनुसन्धान भी करें । प्रान्तीय सरकारों की ओर से इस प्रस्ताव को क्रियान्वित करने का अभी कोई आशाजनक उत्तर नहीं मिला । सम्भावना है कि शीघ्र ही भविष्य में वे अपने दायित्व का अनुभव करेंगी और देश की अनर्घ सांस्कृतिक सम्पत्ति को बचाने के लिए इस ओर पग उठाएंगीं ।

पुरातत्त्व विभाग की अब यह निश्चित नीति है कि अनुसन्धान-शाखा के द्वारा की हुई मुख्य खुदाई के अतिरिक्त मंडलाध्यक्ष भी अपने-अपने क्षेत्रों में यथासम्भव खुदाई कराएं जो विभाग के मौलिक सिद्धान्तों के अनुकूल और आर्थिक सीमा के अंदर हो ।

योग्य प्रागैतिहासिक पुरातत्त्वज्ञ के न होने के कारण इस वर्ष प्रस्तर युग के अनुसन्धान में कोई संयोजित काम नहीं हो सका । तथापि सूक्ष्माश्म उपकरणों वाले कुछ टीलों में खनन किया गया । रोपड़ और रंगपुर की खुदाइयों से सिन्धु संस्कृति पर और प्रकाश पड़ा । रोपड़ में 'पेंटड ग्रे वेयर' की उपलब्धि एक महत्त्वपूर्ण घटना है । मास्की की खुदाई में दक्षिण के महाश्म स्मारकों के सम्बन्ध में अधिक प्रमाण उपलब्ध हुए । ऐतिहासिक पुरातत्त्व को भी अच्छी उत्तेजना मिली । रोपड़ में प्रागैतिहासिक स्तरों के नीचे प्रारम्भिक और उत्तर ऐतिहासिक कालों के तीन स्तर मिले । मगध की प्राचीन राजधानी राजगिर (राजगृह) में भी खुदाई हुई । जगत्ग्राम क्षेत्र में दो अश्वमेध यज्ञों के अनुष्ठानों के अवशेष मिले और शालिहुंडम में व्यापक बौद्ध अवशेष और छोटी प्राचीन वस्तुएं पाई गईं ।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी भारत की विद्याप्रेमी संस्थाओं ने पुरातत्त्व के अनुसन्धान में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया । परन्तु खेद है कि किसी नई संस्था ने इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं किया । विभाग की लिपिविज्ञान-शाखा ने इस वर्ष जो काम किया वह यद्यपि सांस्कृतिक-सम्पत्ति से समृद्ध भारत जैसे विशाल देश के अनुरूप नहीं है, फिर भी इस शाखा के संक्षिप्त अधिकारी-वर्ग ने नये लेखों के अध्ययन और पुरानों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संशोधन से पुरातत्त्व की बहुत सेवा की है। विभाग की अन्य शाखाओं की तरह इस शाखा में भी वृद्धि की आवश्यकता है। इसके विषय में सरकार के सामने सुझाव रखा गया है जो अभी विचाराधीन है।

स्मारकों का संरक्षण पुरातत्त्व विभाग का परम कर्तव्य है। इसे पूरा करने के लिए विभाग भरसक प्रयत्न कर रहा है। वे स्मारक जिन्हें अभी राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित किया गया है विशेष ध्यान के भागी बन रहे हैं और उनके संरक्षण पर अधिक व्यय हो रहा है। ऐसे स्मारकों में अजन्ता, एलोरा, गोलकुंडा, हायसाल वंश के राजाओं के बनाए मन्दिर आदि, मैसूर में टीपू सुलतान का महल, मध्य प्रदेश में मांडू, सांची, तथा खजुराहो, राजस्थान में चित्तोड़गढ़, विशेष महत्त्व रखते हैं। इनके संरक्षण तथा भरण के लिए जो विशेष कार्यक्रम निर्धारित किया गया था अब क्रियान्वित किया जा रहा है।

अन्य स्मारक जिनका संस्कार हुआ है या हो रहा है बहुत से हैं परन्तु उनमें निम्नलिखित मुख्य हैं :—

ताजमहल, आगरे का किला, मनेर में मखदूम शाहदौला का मकबरा, शिवसागर में शिवडोल मंदिर, लेपाक्षी में वीरभद्र स्वामी मंदिर, तंजौर का बृहदीश्वर मंदिर, बम्बई के पास एलिफेंटा गुफा, जोधपुर के मंडोर किले में गुप्तसमय का वैष्णव-मंदिर और कोटा में बाडोली के मध्यकालीन मंदिरों का समूह।

रासायनिक शाखा ने स्मारकों, विशेषतः भित्तिचित्रों के संरक्षण में महत्त्वपूर्ण काम किया है। बहुत से स्मारकों पर बने हुए प्राचीन चित्रों को रासायनिक विधि से मल-निर्मुक्त करके अपने स्थान पर दृढ़ किया गया और धुंधले चित्रों का मल हटा कर उन्हें पुनः स्पष्ट बनाया गया। कई इमारतों में जहां वर्षातप के प्रकोप से बाहर की दीवारें विवर्ण और कुरूप हो गई थीं उन्हें विधिपूर्वक मल-निर्मुक्त किया गया और आगे के लिए सुरक्षा के उपायों का निर्धारण किया गया। इस शाखा ने अपने अनुभव से ऐसी विधियों का आविष्कार किया है जिनके प्रयोग से भित्तिचित्रों और मूर्तियों को बिना हानि पहुंचाए उन पर जमी हुई धुएं की स्याही और धब्बों को दूर किया जा सकता है। इनके अतिरिक्त पुरातत्त्व रसायन सम्बन्धी अन्य विषयों में भी अनुसन्धान किया गया, जिनमें विविध मृद्-भाण्डों और कई भांति की मिट्टी का विश्लेषणात्मक अध्ययन समाविष्ट है।

कई नये संग्रहालयों को संग्रहालय-शाखा (Museums Branch) में मिला कर इसकी वृद्धि की गई। इनमें हैदराबाद में कोंडापुर, भूपाल का सांची, और खजुराहो का जार्डिन संग्रहालय उल्लेखनीय हैं। ये संग्रहालय उन स्मारकों के साथ सम्बद्ध थे जिनके संरक्षण का भार केंद्रीय सरकार ने अपने ऊपर ले लिया है। अतः इन्हें भी अपने अधिकार में लेना अनिवार्य था। इन संस्थाओं में योग्य अधिकारी रखे गए हैं जो अपने-अपने संग्रहों की सूचियां प्रस्तुत करने और उन्हें लोक-शिक्षा के आकर्षक केंद्र बनाने में लगे हैं। हम्पी के स्थान पर एक नया संग्रहालय स्थापित किया गया है। इसमें प्राचीन विजयनगर के विस्तृत खंडहरों पर बिखरी हुई पत्थर की मूर्तियां तथा अन्य अवशेष रखे जाएंगे।

नीचे के विवरण में पुरातत्त्व विभाग के गत तथा वर्तमान वर्षों के आय-व्यय (बजट) की परिस्थिति रुपयों की संख्या में दी गई है :

व्यय का शीर्षक	वर्ष 1953-54	वर्ष 1954-55
1 महानिदेशक के कार्यालय का व्यय	13,19,600	15,35,800
2 स्मारकों का संरक्षण और कर्मचारियों का वेतन आदि	15,88,900	23,84,700
3 अनुसंधान—		
(क) अधिकारियों का वेतन आदि	1,63,200	1,80,200
(ख) अनुसन्धान और खुदाई के कामों पर व्यय	1,27,300	2,51,800
4 संग्रहालय	2,54,500	2,82,700
5 नई इमारतों का निर्माण और मरम्मत	57,500	1,36,800
6 इंग्लैंड में व्यय	18,000	7,000
7 'पार्ट बी स्टेट्स' में आनुमानिक व्यय	—	1,00,000
(क) नये मंडलों पर व्यय	6,99,000	
(ख) 'पार्ट बी स्टेट्स' में अतिरिक्त खर्च	2,00,000	
योग	44,28,000	48,79,000

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्वोक्त विवरण से स्पष्ट है कि गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष बजट में थोड़ी वृद्धि हुई है। 'स्मारकों का संरक्षण' शीर्षक के नीचे जो वृद्धि दिखाई है वह अधिकतर उन स्मारकों के कारण है जो अभी-अभी राष्ट्रीय महत्त्व के घोषित किए गए हैं। अनुसन्धान शीर्षक के नीचे जो व्यय की वृद्धि दिखाई गई है वह नागार्जुनकोंडा की खुदाई के लिए है। 'नागार्जुनकोंडा योजना' के अधीन जब यहां बाँध बन जाएगा तो सब बौद्ध स्मारक जलमग्न हो जाएंगे। इसलिए पुरातत्त्व विभाग इन स्मारकों को बचाने का भरसक प्रयत्न कर रहा है।

कुछ समय हुआ पुरातत्त्व विभाग ने इस काम को कुशलता से निभाने के लिए कुछ आवश्यक पदों की मंजूरी के लिए शिक्षा मंत्रालय को लिखा था। यह सुझाव पेश किया गया था कि हर मंडल में अनुसन्धान कार्य में मंडलाध्यक्ष को सहायता देने के लिए कुछ और कार्यकर्ता नियुक्त किए जाएं। इसमें एक कन्ज़र्वेशन असिस्टेंट और एक ओवरसियर भी समाविष्ट थे। इनके रखने से यह लाभ था कि स्मारकों के संस्कार का काम ठेकेदारों की बजाए पुरातत्त्व के अपने अधिकारी कराएंगे जिससे देश भर में संरक्षण का काम एकसमान और नियमबद्ध हुआ करेगा। लिपिविज्ञान-शाखा के लिए भी दो अतिरिक्त उच्च अधिकारियों और चार सहायक कार्यकर्त्ताओं की नियुक्ति के लिए लिखा गया है। हम्पी और खजुराहो के संग्रहालयों के लिए क्यूरेटरों के पदों का भी योजना में समावेश है। महानिदेशक के कार्यालय में काम बढ़ जाने से उसके लिए भी कुछ और कार्यकर्ताओं की नियुक्ति का सुझाव पेश किया गया है।

उत्खनन

बीरभानपुर, जिला बर्दवान

इस स्थान से सूक्ष्माश्म उपकरण मिलते हैं, अतः प्राच्य-मंडल ने यहां इस वर्ष खुदाई कराई थी। यहां जो उपकरण मिले वे एक 5 फुट ऊंचे लेटराइट के स्तर पर पड़े थे। ऐसा मालूम होता है कि यह स्तर प्लाइस्टोसीन महायुग के अन्तिम वर्षाबहुल युग में खुला पड़ा था। सम्भव है कि ये उपकरण हालोसीन (अन्तिम भौगोलिक) युग के आरम्भ काल के हों। ऐसी दशा में ये दस हजार वर्ष के लगभग प्राचीन हो सकते हैं। इस प्राचीनता का समर्थन वर्षातप से प्रभावित लाल रंग की विवर्ण बालू की तह से भी होता है जो इन उपकरणों को ढक रही थी। इन साधनों में चाकू के फल, अर्धचंद्र, नोकदार सलाखें, तीरों के फल, खुरचने और फाड़ने के औज़ार आदि सम्मिलित थे (फलक 1क)।

रोपड़, जिला अम्बाला

सिंधु संस्कृति के अन्तकाल और ई० पू० छठी शताब्दी के बीच जो लंबा अंधकाल है उसकी समस्या को सुलझाने का प्रयत्न यथावत् जारी है। गत वर्ष की रिपोर्ट में रोपड़ की खुदाई की ओर संकेत किया गया था। यह स्थान अम्बाला के साठ मील उत्तर में है। यहां हड़प्पा-संस्कृति-काल से लेकर मध्यकाल तक की कई आबादियां मिली हैं, जिससे पता लगता है कि प्राचीन रोपड़, मूलैतिहासिक और ऐतिहासिक संस्कृतियों का संगमस्थान था। पिछले साल सरदी के मौसम में यहां फिर काम शुरू किया गया, इस विचार से कि शायद इस टीले में हड़प्पा-संस्कृति के लोगों तथा 'पेंटड ग्रे वेयर' के निर्माताओं के बीच परस्पर सम्पर्क के लक्षण दिखाई पड़ें। परन्तु यह विचार सत्य साबित नहीं हुआ।

रोपड़ में सबसे पहले हड़प्पा-संस्कृति के लोग आबाद हुए। इन लोगों ने यहां प्रायः पांच सौ वर्ष के लगभग निवास किया। नदी की बाढ़ के कारण जमी हुई रेत और कंकर की तह के ऊपर इन लोगों की सांस्कृतिक सामग्री के आवश्यक अवशेष पाए गए। इनमें मिट्टी के बर्तन, (फलक 1 ख, 2क) मनके, कांसे के चिपटे कुल्हाड़े (celts), चर्ट की कतलें, फियांस के भूषण, पकी मिट्टी की टिकड़ियां और खड़िया पत्थर की एक मुहर, जिस पर चित्राक्षर अंकित थे, वर्णनीय हैं। इन वस्तुओं से स्पष्ट पता लगता है कि एक समय सिन्धु संस्कृति पश्चिम में बलूचिस्तान से लेकर पूर्व में सतलुज तक व्याप्त थी।

रोपड़ में हड़प्पा-संस्कृति का अंत क्यों हुआ इसका उत्तर देना कठिन है। बहुत देर तक उजाड़ पड़े रहने के अनन्तर ई० पू० 1000 के करीब यहां कोई विजातीय लोग आकर बसे। ये लोग चित्रित धूम्र-भांडों 'पेंटड ग्रे वेयर' (फलक 2ख) का प्रयोग करते थे जो व्यापक रूप से उत्तरी राजस्थान, पंजाब और उत्तर प्रदेश में पाए गए हैं। इस संस्कृति के कर्त्ताओं के सम्बन्ध में अभी हमारी जानकारी अधूरी है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस क्षेत्र में उनके आगमन से भारत के मूलैतिहासिक पुरातत्त्व में एक नये युग का आरम्भ हुआ। रोपड़ में इस सांस्कृतिक-काल के कोई वास्तु नहीं मिले और मिट्टी के बर्तनों के अतिरिक्त दूसरी वस्तुएं भी कम थीं।

तीसरे काल का आरम्भ ई० पू० 500 के लगभग हुआ इसमें यहां के निवासी 'उत्तरी काले ओपदार' (एन० बी० पी०) कुम्भखण्डों का प्रयोग करते थे। यहां से लेखांकित सिक्के, मुहरें और विलक्षण शैलियों के मिट्टी के खिलौने जो मिले उनसे इस समय के काल का यथार्थ ज्ञान होता है, जो पहली दो आबादियों के सम्बन्ध में नहीं मिलता। एक महत्त्व की उपलब्धि हाथी-दांत की मुहर थी जिस पर मौर्यकाल के ब्राह्मी अक्षरों में 'भदपलकस' लेख अंकित था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस काल के स्तर की खुदाई म एक अज्ञातार्य 12 फुट चौड़ी ईंटों की दीवार प्रकट हुई। यह $2\frac{1}{2}$ फुट तक ऊंची 12 से अधिक रद्दों की बनी थी। इसे 250 फुट की लम्बाई तक उद्घाटित किया गया। अन्त में दोनों किनारों की ओर यह टेढ़ी होती गई। मालूम होता था कि यह दीवार किसी मुख्य वास्तु की चहारदीवारी का भाग थी (फलक 3क)। इस काल की विशिष्टताओं में मिट्टी की चकियाओं को एक-दूसरी पर चिन कर बनाए हुए मण्डल कूप थे (फलक 3ख)।

इसके बाद की आबादी का काल ई० पू० दूसरी शती से शुरू होकर ई० छठी शती तक था। सिक्कों, मुहरों और मिट्टी के खिलौनों के आधार पर इस काल के कई अवान्तर भाग हो सकते हैं। सिक्के इंडो-ग्रीक राजाओं के काल से लेकर चन्द्रगुप्त प्रथम (गुप्त वंश) के काल तक के मिले हैं। तक्षशिला, औदुम्बर और मथुरा शैली के सिक्के भी काफी संख्या में पाए गए हैं। इनके अतिरिक्त छः सौ से अधिक तांबे के कुषाण सिक्कों का एक समुदाय था।

मध्यकालीन आबादी टीले के केवल उस भाग पर ही सीमित थी जहां इस समय रोपड़ का आधुनिक कसबा बसा है। इस काल की तहों में काचित तथा चित्रित बहुवर्णी (Polychrome) कुम्भखंड और सतह पर मुसलमानी सिक्के मिले।

'पेंटेड ग्रे वेयर' के स्तर को छोड़ बाकी सब स्तरों में वास्तुखंड पाए गए। प्रायः पहली आबादी के काल से ही लेकर नदी के रोड़े (pebbles), कंकर, कीच और पकी ईंटें मकान बनाने के काम आती थीं। रोपड़ के टीले में से दैनिक जीवन के उपयोग की बहुत-सी वस्तुएं जैसे मनके, मिट्टी के खिलौने, हड्डी, हाथीदांत और धात की कलाकृतियां उपलब्ध हुई थीं।

रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर (गुजरात)

पुरातत्त्व विभाग के पश्चिमी मंडल ने इस विषय में भी गवेषणा की थी कि हड़प्पा-संस्कृति का दक्षिण की ओर कहां तक प्रसार था। सन् 1934-35 में लिंबड़ी के 20 मील दक्षिण-पूर्व में रंगपुर के स्थान पर भी श्री० माधोसरूप वत्स ने खुदाई कराई थी जिससे उन्हें मालूम हुआ कि यह स्थान हड़प्पा-संस्कृति का है। सन् 1936 में डाक्टर जी एस० घुर्ये और 1947 में डाक्टर मोरेश्वर दीक्षित ने भी यहां खनन कराया। दीक्षित के विचार में रंगपुर का हड़प्पा-संस्कृति से कोई सम्बन्ध नहीं था। उनके मत में यह संस्कृति हड़प्पा के बाद की थी और आर्य जाति के भारत में प्रवेश करने के अनन्तर अस्तित्व में आई।

पिछले शीतकाल में पुरातत्त्व-विभाग ने संशय दूर करने के लिए यहां निर्णयात्मक खुदाई का प्रारम्भ किया। इस खुदाई से निर्विवाद सिद्ध हो गया कि रंगपुर की ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति हड़प्पा-संस्कृति का ही दक्षिण की ओर प्रसार था।

रंगपुर की इस खुदाई में तीन भिन्न-भिन्न संस्कृतियाँ प्रकाश में आई। ये क्रमशः सूक्ष्माश्म, ताम्र-प्रस्तरयुगीन और उत्तरकालीन ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृतियां हैं। सब से नीचे के स्तर में नदी की बाढ़ से लाई हुई कंकर, उपल और सीपियों की तह थी, जिसमें केवल जेस्पर और एगेट के भद्दे और बेडौल सूक्ष्माश्म थे। इनके साथ एक भी ठीकरा नहीं मिला। इसके ऊपर की संस्कृति की विलक्षणता मोटे लाल कुम्भखंडों में थी जिस पर लाल या मटियाली पृष्ठभूमि पर काले या चाकलेट रंग के अभिप्राय बने थे। ज्यामितीय अभिप्रायों में गोलार्ध, बिंदु, आड़ी टेढ़ी रेखाएं, आड़े या पड़े बांध और वृत्त थे। पशु-पक्षी अथवा बेलबूटों के प्राकृतिक अभिप्राय बहुत कम थे। विशेष भांति के मिट्टी के बर्तनों में छिदा हुआ कुम्भ, ऊंचे पीठ की थाली और तसला वर्णनीय हैं। इनके साथ तांबे और कांसे के चपटे कुल्हाड़े, कंगन, फियांस और खड़िया पत्थर के मनके तथा मिट्टी की तिकोनी टिकड़ियां भी थीं। इनसे सिद्ध हो गया कि यह हड़प्पा-संस्कृति की प्रतीक वस्तु सामग्री थी। इन तहों से जो सूक्ष्माश्म मिले उनमें एक चर्ट (चकमक) का फल था। यह भी निःसन्देह इसी संस्कृति का अवशेष था।

सब से ऊपर के सांस्कृतिक स्तर में भी लोहा उपलब्ध नहीं था। इसमें बहुत से सूक्ष्माश्म और एक काले-और-लाल ठीकरे पाए गए जो उदयपुर के निकट आहाड़ की खुदाई से प्राप्त बर्तनों के समान थे। ये बर्तन शैली में दक्षिण भारत के महाश्म-स्मारकों से सम्बन्धित बर्तनों से मिलते-जुलते थे।

महेश्वर, जिला निमाड़ (मध्य प्रदेश)

दक्षिण की ओर हड़प्पा-संस्कृति के प्रसार को सहायता देने में रंगपुर न केवल द्वारभूत ही था, अपितु इसकी खुदाई से पश्चिमी तथा मध्य प्रदेश की प्राचीन संस्कृतियों को समझने में भी बहुत सहायता मिली है। पिछले साल की रिपोर्ट में निर्देश किया गया था कि बड़ौदा विश्वविद्यालय के सहयोग से 'डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट पूना' ने महेश्वर और नावडाटोली के टीलों में महत्त्वपूर्ण काम किया है। वहां ऐतिहासिक काल के तीन स्तरों में सबमें नीचे के स्तर में एन. बी. पी. ठीकरों से मिश्रित काले-और-लाल कुम्भ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खंड पाये गये। इसके नीचे उत्खाताओं को प्रारम्भिक-सूक्ष्माश्म और प्रारम्भिक-उत्तरप्रस्तरयुगीन संस्कृतियों के अवशेष मिले। ऐतिहासिक तथा मूलैतिहासिक काल के स्तरों के बीच एक सांस्कृतिक तह थी जिसमें कैलसिडोनी के फल और विशेष प्रकार के कुम्भखंड पाये गये जिन पर उत्कीर्ण (hatched) एवं चित्रित अभिप्राय बने थे। इन कुम्भखंडों (देखिये फलक 4) में कुछ ऐसे भी ठीकरे थे जिन पर सफेद या भूरे रंग का लेप चढ़ा था और इस जिल्द पर नाचती हुई मानव-आकृतियां, हिरन आदि अलंकरण काले रंग में बने थे।

लंघनाज, जिला अहमदाबाद

बड़ोदा विश्वविद्यालय ने लंघनाज़ के प्रागैतिहासिक टीले का इस वर्ष फिर अनुसन्धान किया। सन् 1942 तथा बाद के वर्षों में 'डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट पूना' के अध्यक्ष डा० संकालिया ने यहां कई खुदाइयां कराई थीं जिसके फलस्वरूप इसमें कई भांति की सूक्ष्माश्म हस्तकृतियां उपलब्ध हुई जिनमें छैनियां, अर्धचंद्र, चौपहल, तिकोन और खुरचने के साधन सम्मिलित थे। इन सूक्ष्माश्मों के साहचर्य में अर्ध-अश्मसात् दशा में परिणत सात मानव-कंकाल पाए गए। ये कंकाल सिकुड़ी दशा में पड़े थे जिससे प्रतीत होता था कि इन्हें जान-बूझ कर गाड़ा गया था। लंघनाज़ से उत्खात वास्तुओं से सिद्ध होता है कि इस टीले की रचना में दो स्तर थे। इस वर्ष प्राचीन सतह की ज़मीन के नीचे एक और मानव कंकाल खोदा गया।

मास्की, जिला रायचुर

सम्राट् अशोक के प्रसिद्ध शिलालेखों के कारण मास्की चिरकाल से पुरातत्त्वज्ञों को विदित है। गत वर्षों में यहां जो खनन हुआ उससे दक्षिण भारत के प्राचीन पुरातत्त्व के लिए इसका महत्त्व और भी बढ़ गया। कुछ महीने हुए जब हैदराबाद के पुरातत्त्व विभाग के सहयोग से यहां भारत पुरातत्त्व विभाग के दक्षिण-पश्चिमी मंडल ने विधिपूर्वक खुदाई कराई थी। खुदाई का उद्देश्य यह मालूम करना था कि 1947 में ब्रह्मगिरि की खुदाई में जो संस्कृति-परम्परा मिली उसमें मास्की की संस्कृति का कहां स्थान था। यहां जो सबसे पहले की बस्ती मिली उसका काल ई० पू० पहली सहस्राब्दी का पूर्वार्ध पड़ता है। इस समय के लोग ताम्रप्रस्तरयुग में रह रहे थे क्योंकि उनके शस्त्रोपकरण तांबे और पत्थर के थे। इस काल के मिट्टी के बर्तन अंदर से खुर्दरे और कहीं-कहीं गेरू लेप से पुते थे। इसके अनन्तर दूसरी आबादी के काल में यहां के निवासी महाश्म स्मारकों के काल (ई० पू० तीसरी से पहली शती) की सांस्कृतिक भूमि पर आरूढ़ हुए और अपने शस्त्रोपकरणों के लिए केवल लोहे का ही प्रयोग करने लगे। ये लोग अपने मृतकों को पूर्णांग अथवा खंडित दशा में भूमि में गाड़ते थे (फलक 15 क) परन्तु मास्की में ब्रह्मगिरि की कोष्ठ कब्रों के समान कोई कब्रें नहीं मिलीं। अन्तिम अर्थात् तीसरी आबादी आंध्रकाल (ई० पहली-दूसरी शतियों) की थी। इसमें सातवाहन राजाओं के सिक्के और लाल-भूरे रंग की आंध्र कुम्भकला के अवशेष पाए गए।

मास्की में राक्षसगुल्लु (महाश्म) काल के जो और निखात मिले उनमें कुछ पंक्तिबद्ध 'मेनहिर' (menhir) या शिलामय चीरे थे और कुछ 'केर्न' के आकार के पत्थरों के गोल चक्कर। इस वर्ष एक चीरे (मेनहिर) और एक अश्मवृत्त (केर्न) का उत्खनन किया गया। पहले में कोई शव नहीं मिला परन्तु दूसरे में ब्रह्मगिरि के 'केर्नों' के समानरूप वस्तुएं पाई गईं।

राजगिर, जिला पटना

राजगिर (प्राचीन राजगृह) भारत की प्राचीन राजधानियों में से एक है। यहां मध्य-पूर्वी मंडल ने खुदाई कराई थी। इसके लिए जो स्थान चुना गया वह जीवकाम्रवन का था। यह वह स्थान है जहां बिम्बिसार के राजवैद्य जीवक ने बुद्ध भगवान के लिए एक विहार बनवाया था। इस विहार के ध्वंसों में दो निर्माण काल देखे गए। पहले काल का वास्तु एक अण्डाकार (elliptical) मंडप था। उत्तरकालीन वास्तु भी एक ऐसा ही स्मारक था परन्तु इसके साथ कुछ कमरे भी सम्बद्ध थे (फलक 6क)। इन के इर्दगिर्द एक चहारदीवारी थी। मिट्टी के बर्तन जो यहां मिले लाल और खुर्दरी गढ़न के थे। अंदरूनी गढ़ की पूर्वी दीवार के साथ सटे हुए टीले में भी खुदाई कराई गई। यहां अनघड़े पत्थरों का बना हुआ एक ऊंचा चौतरा, जो उत्तरोत्तर तीन बार बना था, खोदा गया। राजगिर की खुदाई के निम्नतम स्तरों में काले उत्तम शैली के बर्तनों के ठीकरों से मिश्रित लाल रंग के मोटे कुम्भावशेष थे। इसके ऊपर के स्तर में एन० बी० पी० और चित्रित कुम्भखंड प्रचुर संख्या में पाए गए। अन्तिम काल में सामान्य लाल ठीकरे अधिक प्रचलित थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद

ईसवी सन् के आरम्भ के आस-पास की कतिपय शताब्दियों में कौशाम्बी बहुत समृद्ध नगर था। यहां इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने पहले वर्षों की तरह इस वर्ष भी काम कराया। इस वर्ष खुदाई घोषिताराम विहार के क्षेत्र में ही (फलक 5) केंद्रित रही। इस विहार का पता सन् 1951 में लगा था। पूर्वोक्त खुदाई के अतिरिक्त निकटवर्ती प्राकार की मोटाई को काट कर देखा गया और आधुनिक धर्मशाला के पास एक नये स्थान का भी अनुसन्धान किया गया।

संघाराम के क्षेत्र का विस्तार सम्भावित विस्तार से बहुत अधिक निकला। यह क्षेत्र एक-दूसरे से वियुक्त स्वतन्त्र भागों में विभक्त था। इस वर्ष जिस भाग की खुदाई हुई उसमें कई एक छोटे-छोटे स्तूपों की पीठिकाएं और फर्श प्रकाश में आए। फर्शों में लकड़ी के खंभे गाड़ने के लिए गोल छेद बने थे। प्रतीत होता है कि साधारण भिक्षुओं की धातुओं को मटकों में डाल कर छोटे स्तूपों के पास फर्शों में गाड़ देते थे और इनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए अस्थियों के ऊपर छोटे-छोटे खंभे बना देते थे। ईसवी सन् के आरम्भ के पहले और बाद की सदियों की पत्थर की मूर्तियां और मिट्टी के खिलौने भी खुदाई में मिले। उपलब्ध शिलालेखों में एक लेख कनिष्क-कालीन भिक्षुणी बुद्धमित्रा का है।

प्राकार की मोटाई को काट कर जो खात लगाया गया उससे पता लगा कि सर्वप्रथम यह दीवार ई० पू० छठी शती में बनाई गई थी। इसके अनन्तर इसका तीन बार पुनर्निर्माण हुआ। आधुनिक जैन धर्मस्थान के समीपवर्ती ऊंचे टीले में जो खनन हुआ उससे मालूम हुआ कि पहले जो बस्ती यहां बसी उसके लोग एन० बी० पी० का प्रयोग करते थे। दूसरी सदी ई० पू० के लगभग इस बस्ती का अन्त हो गया। ई० चौथी-पांचवी सदी की तीर्थंकर पद्मप्रभु की आदमकद आसीन मूर्ति खंडहर के पास के खेत में पाई गई थी।

कुम्रहार, जिला पटना

कुम्रहार प्राचीन पाटलिपुत्र का ध्वंस माना जाता है। पिछले वर्ष की रिपोर्ट में यहां 'के० पी० जायस्वाल रिसर्च इंस्टिट्यूट पटना' के द्वारा की गई खुदाई का संकेत किया गया था। सन् 1912 और उसके बाद के वर्षों में डाक्टर डी० बी० स्पूनर ने यहां एक विशाल स्तम्भ-मंडप निकाला था। जायस्वाल इंस्टिट्यूट ने इस वर्ष भी यहां खनन कराया। उत्खाता के मत में इस स्थान पर वास्तुओं का निर्माण शुङ्ग काल (ई० पू० 150) से शुरू हुआ। भिन्न-भिन्न काल के उत्खात वास्तु चार भागों में विभक्त किए जा सकते हैं--(1) ई० पू० 150 से ई० 100 तक; (2) ई० 100 से 300 तक; (3) ई० 300 से 450 तक; और (4) ई० 450 से 600 तक। प्रकटतः इसके लंबे जीवन में कुम्रहार में कई विहार बने। आरोग्यविहार नाम के स्वास्थ्यवर्धक संघाराम में जो अवशेष पाये गए वे प्रथम दो कालों के थे। दूसरे काल के संघाराम में (70×30) फुट का एक विशाल मंडप था जिसके पूर्व और पश्चिम में कोठरियों की पांतियां बनी थीं।

गुप्तकाल का वास्तु-विन्यास विशेष रोचक था। दक्षिणोत्तर और पूर्व-पश्चिम की ओर तीन-तीन वीथियां थीं। इनमें विषम अन्तर पर तीन-तीन सोपान मार्ग थे। आरोग्यविहार के पास उपलब्ध एक मुद्राछाप पर 'सघस' शब्द अंकित था और संघाराम का चित्र बना था। यह चित्र सम्भवतः वह था जिसे संघाराम के निवासी भिक्षुसंघ ने स्वीकृत कर लिया था।

साधारण लाल रंग के बर्तनों के अतिरिक्त इस स्थान में जो कुम्भखंड प्राप्त हुए उसमें मोटे सलेटी रंग के ठीकरे और एन० बी० पी० के कई टुकड़े मिश्रित थे। एन० बी० पी० के खंडों में दो ऐसे थे जो तांबे की तारों से जोड़े गए थे। राजस्थान में बैराट से और पंजाब में रोपड़ से इसी शैली के जो बर्तन मिले उनमें भी कई की मरम्मत तांबे की तारों से की गई थी। इस स्थान से प्राप्त अन्य वस्तुओं में शुङ्ग और गुप्त काल के मिट्टी के खिलौने, पत्थर की मूर्तियां, मुद्राएं, मुद्राछापें और सिक्के विशेषतः उल्लेखनीय हैं।

वड़नगर, जिला मेहसाना (बम्बई)

वड़नगर में 'लाल ओपदार कुम्भकला' की उपलब्धि से प्रभावित होकर बड़ौदा विश्वविद्यालय ने यहां खुदाई का कार्य प्रारम्भ किया था। यह कुम्भकला पश्चिमी तथा मध्य भारत के विस्तृत क्षेत्र पर पाई जाती है। प्राचीनकाल में यह स्थान नगर, आनर्तपुर, आनन्दपुर, वृद्ध-नगर आदि कई नामों से विदित था। यहां उत्तरोत्तर तीन सांस्कृतिक कालों की परम्परा के लक्षण दृष्टिगोचर हुए। सबसे नीचे की (ई० 100-200) तह में एक बहुत भद्दी और निकृष्ट शैली की कुम्भकला पाई गई जैसे पहले बड़ौदा, तिम्बर्वा और अमरेली में मिल चुकी थी। दूसरे काल (ई० 200–600) की तह में नगर के जीवन में एक उत्कर्ष काल के लक्षण दिखाई पड़े। इस तह में लाल ओपदार बर्तन बहुत संख्या में मिले। इनके साथ लाल जिल्द पर काले चित्रों वाले कुम्भखंड भी पाए गए। इस भांति के बर्तन पहले काठियावाड़ से भी मिल चुके थे। इस कुम्भकला का रोमन काल से भी अवश्य सम्बन्ध रहा होगा, क्योंकि इसके साहचर्य में एक मिट्टी की नकली मुद्रा मिली जिस पर एक स्त्री हाथ में फूल लिए बनी थी। इसी तह में मिट्टी की मुहर मिली जिस पर ई० दूसरी-तीसरी सदियों की लिपिशैली में लेख अंकित था। सबसे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर की तहों में जिनका काल ई० 600–1000 था, लाल पोते वाली सफेद जिल्द पर काले अभिप्रायों से युक्त मोटी कुम्भकला के अवशेष पाए गए थे। इस शैली के बर्तन पहले बड़ौदा और तिम्बर्वा में मिल चुके थे।

जगत्ग्राम, जिला देहरादून

जगतग्राम देहरादून से 30 मील पश्चिमोत्तर में अशोक के प्रसिद्ध कालसी शिलालेख से दो मील से भी कम अन्तर पर है। इस स्थान पर एक पवित्र क्षेत्र मिला है जहां शीलवर्म नाम के एक राजा ने तीसरी ई० शती के लगभग चार अश्वमेध यज्ञों का अनुष्ठान किया था। चौथे अश्वमेध की यज्ञवेदि पिछले वर्ष के अनुसन्धान से प्रकाश में आई। अनुसंधान-शाखा के द्वारा की गई खुदाई के फलस्वरूप इस क्षेत्र में तीन और ऐसे स्थान मिले जहां पूर्वोक्त राजा ने अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया था। यज्ञवेदियां पक्की ईंटों की बनी थीं और आकार में उड़ते श्येन पक्षी के समान थीं। पहली यज्ञवेदि (फलक 6 ख) में जो ईंटें लगी थीं उन पर ई० तीसरी शती की ब्राह्मी लिपि में संस्कृत लेख थे जिनमें उल्लेख था कि यज्ञ के अनुष्ठाता राजा ने यहां चौथे अश्वमेध की चित्ति (यज्ञवेदि) का निर्माण कराया।

दूसरी यज्ञवेदि के स्थान पर बहुत-सी इंटों पर अनुष्टुभ् छन्द में संस्कृत भाषा और ब्राह्मी लिपि में श्लोक लिखे थे। इनमें यज्ञ के अनुष्ठाता राजा को वार्षगण्य, युगेश्वर, युगेश और युगशैलेश्वर के विशेषणों से निरुपित किया गया था। 'वार्षगण्य' का अर्थ है कि राजा वृषगण गोत्र का था। पाणिनि द्वारा उल्लिखित गोत्रों में वृषगण गोत्र उनहत्तरवां है।

युगेश शब्द का अर्थ है 'परम-पावन' अर्थात् जिसने यज्ञानुष्ठान से अपने आपको पुण्यमय बना लिया था। बृहत्संहिता में बारह युगेशों का वर्णन है जिनमें पहला विष्णु और अन्तिम भग है। निष्कर्ष यह निकला कि राजा शीलवर्म ने अश्वमेध यज्ञों के अनुष्ठान से वर्तमान युग के 'युगेश' की पदवी प्राप्त कर ली थी। चार अश्वमेधों के अनुष्ठान से उसकी आंशिक तुलना यूनानी अथवा रोमन 'लस्ट्रम' नाम धार्मिक क्रिया के अनुष्ठान से की जा सकती है। रोमन लोग इस अनुष्ठान को हर पांच वर्ष के अनन्तर जातिशुद्धि के लिए करते थे। शीलवर्म को युगशैल का स्वामी कहा गया है। सम्भवतः युगशैल उसकी राजधानी का नाम था।

तीसरी यज्ञवेदि का स्थान अभी नहीं खोदा गया। यहां पूर्वोक्त राजा के द्वारा सम्पादित एक और अश्वमेध के अनुष्ठान के लक्षण मिले थे। यहां से उपलब्ध एक ईंट पर उसका नाम अंकित था। अश्वमेध यज्ञ का क्षेत्र हिमालय के मूल में उस स्थान पर विद्यमान है जहा यमुना प्रथम बार पर्वतों की अधित्यका को छोड़ मैदान में उतरती है। सम्भवतः इसी कारण से राजा की राजधानी का नामक युगशैल रखा गया था।

ईंटों पर अंकित लेख (फलक 7) इस प्रकार हैं—

सिद्धं ओं युगेश्वरस्याश्वमेधे युगशैलमहीपते[: ।]
इष्टका वार्षगण्यस्य नृपतेश्शीलवर्मण[: ।।]

"अर्थ—यह ईंट युगशैल के स्वामी युगेश्वर राजा शीलवर्म के अश्वमेध-यज्ञवेदि की है।"

नृपते वार्षगण्यस्य पौणषष्ठस्य धीमत[: ।]
चतुर्त्थस्याश्वमेधस्य चित्योयं शीलवर्मण[: ।।]

"अर्थ—वृषगण गोत्र में उत्पन्न, पोण वंश में छठे, राजा शीलवर्म के द्वारा अनुष्ठित चौथे अश्वमध यज्ञ की यह वेदि है।"

'पोणषष्ठ' का अर्थ सम्भवतः यह है कि पोण इस वंश का पहला राजा था और शीलवर्म पोण का छठा वंशज था। अर्थान्तर में इसका यह भी तात्पर्य हो सकता है कि शीलवर्म इस वंश में छठा 'पोण' था और उसके पहले पांच 'पोण' राजा (पोण प्रथम, पोण द्वितीय आदि) हो चुके थे। 'पोण' किसी राजा का वैयक्तिक नाम था अथवा उसके वंश का इसके सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है।

लिपि शैली से स्पष्ट प्रतीत होता है कि लेख ब्राह्मी-लिपि के परिवर्तन काल के हैं जब 'म' के पूर्वकालीन तथा उत्तरकालीन रूप 'य' से संयुक्त एक साथ व्यवहार में आ रहे थे। इससे शीलवर्म का काल कुषाण और गुप्त कालों के बीच, अर्थात् ई० 250 और 300 के मध्य में पड़ना चाहिये। सम्भवतः शीलवर्म उन राजाओं में से एक था जिन्होंने परस्पर सहयोग से भारत में कुषाण सत्ता का उन्मूलन किया।

शालिहुंडम्, जिला श्रीकाकुलम्,

वंशधारा नदी पर स्थित सालिहुंडम् गांव के पास, कलिंगपटनम् बंदरगाह से पांच मील दूर एक पर्वत की चोटी पर बौद्ध खंडहर हैं। इस स्थान पर पहले जो खनन हुआ उसमें एक बड़ा स्तूप, एक वृत्ताकार चैत्य और दो मंदिर प्रकाश में आए (फलक 8क)। मंदिरों में से एक के अंदर औपहारिक (votive) स्तूप था और दूसरे में बुद्ध की मूर्ति। इनके अतिरिक्त कई एक छोटी इमारतें और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धातु-मंजूषाएं भी मिलीं। बुद्धचैत्य में उपलब्ध जलघट के गले पर अंकित एक लेख से जिसका काल ई० दूसरी शताब्दी हो सकता है, पता लगा कि इस स्थान का प्राचीन नाम 'कत्तहरम्' या 'कत्तहर आराम' था।

सन् 1954 में दक्षिण-पूर्वी मंडल ने यहां फिर खुदाई कराई जिसमें तीन भिन्न-भिन्न कालों के खंडहर, लेखांकित पत्थर, असंख्य मिट्टी के बर्तन, जिनमें 'चक्रांकित' कुम्भखंड भी मिश्रित थे, मिट्टी की धातु मंजूषा, जिसमें सोने के फूल और एक अस्थिखंड था, लेखांकित शंख, सिक्के और मुहरें उपलब्ध हुईं। उत्खात भग्नावशेषों में चार विहार थे जिनमें से एक का नाम 'महाविहार' था, इसके अतिरिक्त इनमें चैत्यगृह, रसोई, भांडागार, भोजनागार और पूजामंडप, चंद्रशिलाओं की पीठीकाओं वाले रास्ते और उद्देशिक स्तूप समाविष्ट थे।

शिलाओं, ठीकरों और शंखों (फलक 8ख) पर उत्कीर्ण लेखों की सहायता से जो अधूरा-सा परिचय प्राप्त हुआ उससे पता लगता है कि शालिहुंडम् गांव का प्राचीन नाम 'सालिपेटक' (चावलों का हाट) और उस पर्वत का नाम जिस पर महाविहार बना था, 'महा-उग-पब्बत' था। ठीकरों अथवा पटाल के पत्थरों पर खुदे हुए लेख दूसरी से छठी या सातवीं सदियों के मध्यवर्ती काल के थे। अधिकांश वास्तु ई० सन् की पहली तीन सदियों अर्थात् सातवाहन राजाओं और उनके उत्तराधिकारियों के काल में बनाए गये थे। इस समय बौद्ध धर्म यहां बहुत लोकप्रिय हो गया था।

पल्लवमेडु, जिला कांचीपुरम्

पल्लवमेडु कांचीपुरम् के पड़ोस में एक प्राचीन टीला है। लोगों का विश्वास है कि इसमें पल्लव वंश के राजाओं की अस्थियां गड़ी ह। इस किम्वदन्ती की परीक्षा के लिये दक्षिणी मंडल ने 1953–54 में यहां एक खात लगाया। खुदाई में उत्तरोत्तर चार आबादियों के लक्षण दिखाई पड़े। सबसे नीचे की बस्ती में मिट्टी के मण्डल कूप जो शवभांडों के समकालीन प्रतीत होते थे, उपलब्ध हुए। ऊपर की तीन बस्तियाँ केवल एक-दूसरे पर आरोपित वास्तुओं की सहायता से ही पहचानी जा सकती थीं, अन्यथा इनमें जो कुम्भकला मिली वह समानशैली की थी। खुदाई में शंख की असंख्य चूड़ियां पाई गईं जिनमें सर्वांग––घड़ी, अधघड़ी और अनघड़ी सब प्रकार की चूड़ियां थीं (फलक 9)। इससे पता लगता था कि यहां शंख की चूड़ियां बनाने का कारखाना था। यद्यपि यह टीला पल्लव काल का हो सकता है किन्तु इसमें पल्लव काल की ऐसी कोई विशेष वस्तु नहीं मिली।

सीरपुर, जिला रायपुर

सीरपुर सातवीं शताब्दी में पांडव वंश के राजाओं की राजधानी थी। इस खंडहर में मध्यकालीन कई मंदिरों के ध्वंस हैं। इनमें से एक खंडहर की खुदाई सागर विश्वविद्यालय ने कराई थी। इसमें पंचायतन शैली का एक शैव मंदिर प्रकाश में आया। यहां से जो अवशेष मिले उनमें अधिकांश प्रस्तर वास्तुखंड टुकड़े और मूर्तियां (फलक 9) थीं।

भिन्माल, जिला जोधपुर

इसका प्राचीन नाम श्रीमाल, रत्नमाल या पुष्पमाल था। प्रारम्भिक मध्यकाल में यह गुर्जरों की राजधानी थी। सन् 1953-54 में यहाँ राजस्थान के 'पुरातत्त्व तथा संग्रहालय विभाग' ने खनन कराया। इस खुदाई में मध्यकालीन ईंटों की इमारतें प्रकाश में आईं। ईंटों का नाप $17\frac{1}{2}$ इंच × 11 इंच × $2\frac{1}{2}$ इंच था। उपलब्ध मिट्टी के बर्तनों में कई गहरे सलेटी रंग के और कई ओपदार लाल रंग के थे।

मुम्माखान, श्रीनगर

श्रीनगर (काश्मीर) के बड़े जेलखाने के पास 'मुम्माखान' प्राचीन स्थान पर काम करने वाले मजदूरों को पचास सिक्के अचानक मिल गये थे। जनश्रुति के अनुसार यह स्थान ईसवी छठी सदी में राजा प्रवरसेन के बसाए हुए प्रवरपुर का खंडहर है। अतः काश्मीर के पुरातत्त्व विभाग ने परीक्षार्थ यहां कुछ खात खुदवाए, जिससे पत्थर और कीच की बनी हुई तीन भिन्न-भिन्न कालों की इमारतें प्रकट हुईं और पच्चीस और सिक्के हस्तगत हुए। यद्यपि एक दो जगह पर खुदाई प्राकृतिक भूतल तक पहुंच गई तथापि कोई प्राचीनतर अवशेष उपलब्ध नहीं हुए। तमाम सिक्के अफगान बादशाहों के थे जिनमें अधिकांश शाहशुजा के थे, जिसने उन्नीसवीं सदी की पहली दशाब्दी में, जब काश्मीर अफगान राज्य का भाग था, काबुल के सिंहासन को अपने अधिकार में कर लिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय 2

भारतीय पुरातत्त्व

(1954-55)

साधारण परिचय

इस वर्ष देश के विभिन्न भागों में 20 प्राचीन स्थानों की खुदाई की गई । इनमें 13 खुदाइयां केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग ने, एक प्रान्तीय विभाग ने और शेष छः विश्वविद्यालयों तथा शोध-संस्थाओं ने कराईं। यद्यपि सब खुदाइयां बड़े पैमाने पर नहीं थीं, फिर भी बीस की संख्या ही उत्साह वर्धक है।

पूर्वोक्त बीस स्थानों में से कई अपने बहुमूल्य वस्तुकोशों के कारण महत्त्व के सिद्ध हुए और कई में नवीन उपलब्धियों के कारण भारत पुरातत्त्व के अनेक अज्ञात विषयों पर प्रकाश पड़ा। जिला अहमदाबाद में लोथल के टीले की खुदाई में जो पांच सिंधु-मुद्राएं तथा अन्य विविध वस्तुएं मिलीं उनसे निर्विवाद सिद्ध हो गया कि हड़प्पा-संस्कृति दक्षिण की दिशा में काठियावाड़ के अन्तरीप तक फैली थी। लोथल के तीस मील दक्षिण पश्चिम में रंगपुर के टीले में खुदाई से साबित हो गया कि मटियाले और लाल रंग के कुम्भखण्ड अपने समय में एक साथ प्रचलित थे। इसका समर्थन लोथल की खुदाई से भी हो गया। रंगपुर के टीले में एक उत्तरकालीन संस्कृति उपलब्ध हुई है जिसमें इससे पहले काल की हड़प्पा-संस्कृति क्रमशः लीन हो गई थी। इस घटना से हड़प्पा-संस्कृति के आविष्कर्त्ताओं के लुप्त हो जाने की समस्या पर प्रकाश की नई किरण पड़ती है।

इस वर्ष रोपड़ में हड़प्पा-संस्कृति के लोगों का दूसरा कब्रिस्तान प्रकाश में आया। पहला कब्रिस्तान (आर 37) हड़प्पा के खंडहर में 1937 में उपलब्ध हुआ था; रोपड़ के निकटवर्ती बाड़ा टीले में हड़प्पा-संस्कृति का उत्तरकालीन निकृष्ट रूप पाया गया। इस प्रकार के अन्य टीलों की खुदाई से इस रूप की विशिष्टताओं और भेदों के जानने में सहायता मिलेगी।

पांच वर्ष पहले मध्य भारत में दक्षिण भारत के उत्तरी भाग के मूलैतिहासिक और प्रारम्भिक ऐतिहासिक कालों के सम्बन्ध में लोगों को बहुत कम ज्ञान था। निरन्तर अनुसन्धान के फलस्वरूप इस क्षेत्र में एक लंबी संस्कृति-परम्परा देखने में आई है। यह परम्परा पुरापाषाणयुग से शुरू होकर नवीन और ताम्र-प्रस्तरयुगों में से होती हुई एन०बी०पी० की कुम्भकला की संस्कृति में समाप्त होती है। पहले दो युगों की संस्कृतियों के बीच का अन्तर दीर्घकालीन था, परन्तु उसकी इयत्ता का अभी पता नहीं लगा। गोदावरी की सहायक प्रवरा नदी के तट पर स्थित 'नेवासा' और ताप्ती नदी पर स्थित 'प्रकाश' के टीलों में इस वर्ष जो खनन हुआ उससे ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति की जानकारी में बहुत अच्छी वृद्धि हुई। इस संस्कृति की विलक्षणता सूक्ष्माश्म उपकरण और चित्रित लाल कुम्भकला है जिनके साथ कभी-कभी नवीन-प्रस्तरयुग की हस्तकृतियां भी मिलती हैं।

महेश्वर और रंगपुर की पहली खुदाइयों से पता लगा है कि काली और लाल कुम्भकला जो शैली में दक्षिण भारत के महाश्म-स्मारकों की कुम्भकला से मिलती है, मध्य तथा पश्चिमी भारत के प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक युगों में सम्बन्ध स्थापित करने का सूत्र है। राजस्थान में उदयपुर के निकट आहाड़ का खंडहर है जिसमें काली-और-लाल कुम्भकला बहुत मिलती है। इस वर्ष यहां फिर खुदाई की गई और इस कुम्भकला में काल भेद से जो पार्थक्य दृष्टिगोचर हुए उनका अध्ययन किया गया। इस कुम्भकला के विस्तार क्षेत्र की सीमा 'पेंटड ग्रे वेयर' की सीमा से बहुत दूर नहीं है। यदि ऐसा टीला मिल जाए जहां ये दोनों कुम्भकलाएं एक साथ पाई जाएं तो यह स्थान उत्तर, पश्चिम और मध्य भारत की संस्कृतियों का सम्बन्ध स्थापन करने में बहुत सहायक होगा।

इस वर्ष कौशाम्बी में बौद्ध विहार घोषिताराम की खुदाई पूर्ण कर दी गयी और निकटस्थ पूर्वी नगरद्वार के भग्नावशेष उद्घाटित किये गये। द्वार की जटिल रचना की परीक्षा से भारत के प्राचीन दुर्गों की स्थापत्य-कला पर अधिक प्रकाश पड़ा। कुम्रहार की नवीन खुदाई से पाटलिपुत्र में मौर्यकालीन राजभवन की बनावट, विस्तार और विनाश के सम्बन्ध में बहुत से महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संग्रह किया गया। पश्चिमी बंगाल में तामलुक की खुदाई में प्राचीनतम बस्ती नवीन-प्रस्तरयुग की थी। इंडो-रोमन काल में यहां चंक्राकित शैली के बर्तन बाहर से आते थे अथवा यहीं बनाए जाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चिंगलपट ज़िले में अमृतमंगलम् स्थान पर एक शवभांडों वाला कब्रिस्तान खोदा गया। इन कब्रों पर न तो पत्थरों के गोल ढेर ही थे, न ही आवरक शिलाएं थीं, तो भी इनमें काली-और-लाल कुम्भकला के साहचर्य से स्पष्ट हो गया कि ये कब्रें महाश्म-स्मारकों की संस्कृति से सम्बद्ध थीं।

नागार्जुनकोंडा में बौद्ध भग्नावशेषों की व्यापक एवं गहन खुदाई के कार्यक्रम को सक्रिय बनाने के लिए और इस डर से कि निकट भविष्य में ये स्मारक नागार्जुनकोंडा सागर में जलमग्न हो जाएंगे यहां बड़े पैमाने पर खुदाई का काम आरम्भ किया गया। इसके फलस्वरूप कुछ संघाराम, स्तूप और मंदिर उद्घाटित किये गये। पहाड़ी पर बना हुआ मंदिर हारीती का था। मध्य प्रदेश में सीरपुर स्थान पर एक और बौद्ध वस्ती खोदी गयी जिसमें पत्थर की मूर्तियां और दूसरी वस्तुएं प्रचुर संख्या में पाई गईं। इनमें कांस्यमूर्तियां और आठवीं सदी के राजा बालार्जुन का एक लेख भी था।

लिपि-अनुसन्धान क्षेत्र में इस वर्ष की उत्तम उपलब्धि अशोक का एक लघु-शिलालेख है। यह लेख मध्य प्रदेश में गुजर्रा स्थान पर मिला है और इसमें सम्राट् को बजाय 'पियदसि' के 'अशोक' नाम से निर्दिष्ट किया गया है। अन्य उपलब्ध लेखों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—मथुरा के पास से प्राप्त एक कुषाण लेख जिससे हुविष्क और वासुदेव के बीच का अन्तर और भी संकुचित होकर चार वर्ष तक ही रह जाता है। उड़ीसा से प्राप्त लेख जिसमें शैलोद्भव माधववर्मन् द्वितीय को अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठाता घोषित किया गया है। कांचीपुरम् से प्राप्त आजीवक लेख जो सम्भवतः पल्लववंश के राजा नरसिंहवर्मन् द्वितीय के शासनकाल का है। मध्य भारत में इंद्रगढ़ स्थान से प्राप्त लेख जिसमें राष्ट्रकूट राजा नन्नप का वर्णन है जिसके शासनकाल में एक पाशुपत आचार्य ने किसी शिव मंदिर का निर्माण कराया था। ज़िला तंजौर से प्राप्त लेख जिसमें युद्ध में चोल राजेन्द्र द्वितीय के दो सेनापतियों की मृत्यु का वर्णन है। जिला आनन्दपुर से प्राप्त यादवसिंघन के शासनकाल के तीन लेख जिनमें किसानों के निगम (guild) का वर्णन है। कांचीपुरम् में कामाक्षी के मंदिर से प्राप्त प्रशस्ति जिसमें होयसल वंश के राजा वल्लाल तृतीय और दक्षिण के राजाओं में विद्यमान सम्बन्धों का वर्णन है, और काठियावाड़ से प्राप्त बहुत से फारसी लेख जो गुजरात के मध्यकालीन इतिहास और समकालीन सामाजिक दशा के अध्ययन के लिये विशेष महत्त्व रखते हैं।

गत वर्षों की तरह इस वर्ष भी बहुत से स्मारकों का संस्कार व उद्धार कराया गया। उनमें निम्नलिखित विशेषरूप से वर्णनीय हैं:—नई दिल्ली में अब्दुर्रहीम खाने खानां के मकबरे के जीर्णोद्धार की बृहत् योजना बनाई गई जिसके अनुसार अब इस पर काम हो रहा है। इस योजना में मकबरे के चारों ओर बाग का लगाना भी समाविष्ट है। आगरा में ताजमहल के गुंबद की अंदरूनी सतह पर फिर पलस्तर का लेप चढ़ाया गया। फतहपुर सीकरी में शेख सलीम चिश्ती की दरगाह की अंदरूनी और बहरूनी दीवारों को अपने स्थान पर दृढ़ रखने के लिये उनके बीच सलाखें लगाने का काम योजना के अनुसार हो रहा है।

खजुराहो के ऐतिहासिक मंदिरों के सुधार की ओर उचित ध्यान दिया जा रहा है। उनकी नीरसता और रूखेपन को दूर करने के लिये मंदिरों के सहनों में सफाई के अनन्तर हरी घास लगायी जा रही है।

बनारस की धरारा मसजिद का जो अब एक मीनार खड़ा है उसे बचाने के लिये भरसक प्रयत्न किया जा रहा है। इसके संरक्षण के सम्बन्ध में सलाह देने के लिये विशेषज्ञों की एक कमेटी बनाई जा रही है।

कोर्णाक-मंदिर कमेटी के निर्णय को सक्रिय बनाने के लिये कोर्णाक के सूर्यमंदिर में व्यापक जीर्णोद्धार का काम जारी रहा। आसाम में शिवसागर स्थान पर शिवडोल मंदिर (फलक 10क) को भूकम्प से जो हानि हुई थी उसे दूर करने के लिये उचित उपाय किये जा रहे हैं। इस वर्ष मंदिर के मुहार पर घड़ी हुई शिलाओं का आवरण पुनः चढ़ाया गया और 120 फुट ऊंचे शिखर की चोटी पर सोने का कलस फिर अपने स्थान पर स्थापित किया गया।

हैदराबाद राज्य* के बहुत से राष्ट्रीय महत्त्व के स्मारकों के संरक्षण का भार अब केन्द्रीय पुरातत्त्व विभाग पर आ गया है। इनमें से अजन्ता, एलोरा, पीतलखोरा और औरंगाबाद, हननकोंडा का मंदिर, गोलकुंडा और वारंगल के किले, और औरंगाबाद में बीबी का मकबरा—इन सब स्मारकों का बड़े ध्यान से उद्धार किया जा रहा है। मैसूर में हलेबिद, मोसले, बेलवाड़ी और श्रृंगेरी के मंदिर तथा बंगलौर में टीपू सुलतान का महल भी उचित संरक्षण के भागी हो रहे हैं।

महाबलिपुरम् में तटवर्ती मंदिर की समुंदरी दीवार (फलक 10 ख) का दृढ़ीकरण संस्कार इस वर्ष पूर्ण हो गया। गंगैकोंडचोलपुरम् में बृहदीश्वर मंदिर के प्रांगण में उत्तरकालीन इमारतों को हटाकर इसे दर्शनीय बना दिया गया है।

नोट—*अब यह आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र में सम्मिलित है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

महाराष्ट्र राज्य में कई एक पर्वतोत्कीर्ण गुफाओं पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। एलिफेंटा की मुख्य गुफा के छत पर सीमेंट की निरर्थक तह इसलिये हटा दी गयी थी कि पलस्तर का नया आवरण चढ़ाने के पहले चट्टान में चटकी हुई दरारों की परीक्षा की जा सके जिनमें से गुफा के अंदर पानी झरता है।

राजस्थान में चिरकाल से उपेक्षित चित्तौड़ के किले में बने हुए प्राचीन स्मारकों के सुधार के कार्यक्रम को सक्रिय बनाया जा रहा है। अभी काम श्रृंगारचौरी जैन मंदिर (फलक 11क) बनवीर की दीवार, राणा कुम्भा का महल (फलक 11ख) और मीराबाई के मंदिर तक ही सीमित है। जीर्णोद्धार के अनन्तर इन स्मारकों में नया जीवन आ गया है और इनके चारों ओर पड़े हुए मलबे के ढेरों के हटाने से स्मारकों ने न केवल नया रूप ही धारण कर लिया है, किन्तु कई अज्ञात वास्तु-विलक्षणताएं जिनका पहले पता नहीं था अब प्रकाश में आ गई हैं। मध्य प्रदेश में मांडू के स्मारकों का पहले की तरह सुधार जारी है। भूपाल में रायसेन के किले में एक गिरे हुए बुर्ज़ का पुराने मसाले से दोबारा निर्माण करा दिया गया है।

स्मारकों को स्वाभाविक विनाश से बचाने और भित्तिचित्रों के संरक्षण के लिये रासायनिक उपायों के प्रयोग का काम बहुत बढ़ गया है। इस वर्ष जिन स्मारकों का रासायनिक विधि से परिष्कार और संरक्षण हुआ उनमें भुवनेश्वर का लिंगराज मंदिर, खजुराहो की मूर्तियां, सांची का मुख्य स्तूप और कार्ला तथा भाजा की गुफाओं में मूर्तियां और शिलालेख विशेष रूप से वर्णनीय हैं।

अजन्ता, एलोरा, बाघ, बादामी और सित्तन्नवसल आदि गुफाओं के भित्तिचित्र और फतहपुर सीकरी, सिकंदरा और बड़ौदा आदि स्थानों के मध्यकालीन एवं बाद के स्मारकों का रासायनिक उपचार किया गया है। रासायनिक शाखा ने मृत्तिका-विश्लेषण (soil-analysis) और भू-कालमान (geo-chronology) आदि भिन्न-भिन्न विषयों में भी अनुसंधान किया।

आज तक भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने अन्य देशों के पुरातत्त्व विभागों से सम्बन्ध स्थापन करने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। इस उदासीनता से न केवल आश्चर्य ही किन्तु खेद भी होता है, विशेषकर जब हम इस बात का स्मरण करते हैं कि प्राचीन काल में पड़ोसी देशों से भारत के सम्बन्ध कितने घनिष्ठ थे और भारत की संस्कृति ने इन देशों की संस्कृति पर कितना प्रभाव डाला था। अतः भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने इस वर्ष अपने तथा अन्य संग्रहालयों के कोशों से संगृहीत बौद्धकला की जो प्रदर्शनी रंगून में आयोजित की वह इसके इतिहास में एक निरूपम घटना है।

उत्खनन

नेवासा, जिला अहमदनगर

नेवासा का 70 फुट ऊंचा टीला, जिसे स्थानीय लोग 'लाड-मोड' भी कहते है, प्रवरा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। यहाँ इस वर्ष पूना विश्वविद्यालय के प्रोत्साहन से 'डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट' के अध्यक्ष डाक्टर एच० डी० संकालिया और श्री एस० बी० देव ने खुदाई कराई थी। पश्चिमी भारत की संस्कृति परम्परा के क्रमबद्ध ज्ञान के लिये यह खनन महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। इसमें पुरापाषाणयुग के दो रूप, नव-प्रस्तरयुग, ताम्र-प्रस्तर युग, प्रारम्भिक ऐतिहासिक, रोमन-सातवाहन और प्रारम्भिक मुस्लिम (बहमनी) काल की संस्कृतियों का उद्घाटन हुआ (फलक 12क)।

प्राचीनतम बस्ती के अवशेष तीन कंकरीली तहों के अंदर बिखरे पड़े थे। इन तहों में पुराण-प्रस्तर युग के दो भांति के हथियार पाए गये। प्रथम ट्रैप चट्टान से घड़ा हुआ हथ-कुल्हाड़ा था। शैली में यह अश्यूलियन (Acheulian) था। दूसरी भांति के हथियार तुलना में छोटे थे। इनमें चकमक की गुलियाँ (cores), कत्तलें, खुरचनियाँ तथा जेस्पर, अकीक, और दूसरे छोटे-छोटे पत्थरों के फल और बरमे थे। इस स्तर में पांच अश्मसात् हड्डियां भी मिलीं। इनमें से एक हड्डी जो कठोर कंकरीली तह में अपने स्थान पर पड़ी पाई गयी, भारतीय भूविज्ञान सर्वेक्षण के मतानुसार हिमयुगीनवृषभ (एक प्रकार का वन-वृषभ) का खंडित बायां जबड़ा था। यह बात महत्त्वपूर्ण है कि इस लुप्त पशु की हड्डियां पहले नर्मदा की घाटी में मध्यम नवतम युग (Middle Pleistocene) के कंकरीले स्तर में मिल चुकी हैं। अतः यह बहुत सम्भव है कि नीचे की तहों से प्राप्त बड़े आकार के हथ-कुल्हाड़े भी इतने ही पुराने हों, और बीच तथा ऊपर की कंकरीली तहों से उपलब्ध छोटे उपकरण, जो अशेषतः भिन्न शैली की कलाकृतियां हैं, चतुर्थ महायुग के अन्तिम नवतम युग (Upper Pleistocene) के लगते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्वोक्त कंकरीली तहों के ऊपर 20 फुट मोटी बालू की बांझ (sterile) तह थी। प्रतीत होता था कि यह तह इस भौगोलिक-युग में नदी की अन्तिम बाढ़ का परिणाम था। बिना किसी व्यवधान के इसके ऊपर ही काली मिट्टी की तह थी जिसमें ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति ने जन्म लिया। इस काली मिट्टी के ऊपर मानव-बस्तियों का 30 फुट ऊंचा मलवा था। यह 30 फुट ऊंचा मलबे का तोंदा पांच सांस्कृतिक स्तरों में स्पष्ट रूप से विभक्त हो सकता था।

प्रथम चरण की विशिष्टता यह थी कि इसमें कर्कट पृष्ठ (ridged) ट्रैप चट्टानों के बने ओपदार कुल्हाड़े और कैलसिडौनी के सूक्ष्माश्म उपकरण थे। कुल्हाड़े मोटाई में नयनाकार (lentoid) थे और सूक्ष्माश्म उपकरणों में गुल्लियाँ (cores), इक-धारे या दोधारी दांतेदार कत्ले, तिकोन, समलम्ब, अर्धचंद्र और खुरचनियाँ आदि औज़ार शामिल थे। इनके अतिरिक्त ट्रैप पत्थर के बने समानान्तरी फल पालिश किये हुए कुल्हाड़े, कणाश्म के बने गुलेल के गोले, और ज्वालामुखी तथा कणाश्म पत्थरों के हथोड़े पाए गये। इसी स्तर में तांबे या कांसे का एक मनका, काँटा और छैनी भी मिले जिससे पता लगा कि इस काल में धातु का प्रयोग होता था।

महाकाय संग्रह-भांडों (storage-jars) और शवभांडों के अतिरिक्त बाकी मिट्टी के बर्तनों पर प्रायः लाल अथवा गहरी कत्थई उत्तम जिल्द पर काले रंग के चित्र बने थे। बर्तन आमतौर पर चाक पर बने थे और पतले थे। भट्टियों में अच्छी तरह पकाए गये थे और अंदर बाहर लाल पोते से लिपे थे। बर्तनों में नतोदर गले तथा गोल पैंदी वाले प्याले, टोंटीदार कलसियां जिनके गले संकुचित और मुंह खुले थे, मिलीं। केवल एक ठीकरे पर कुत्ते के समान किसी जानवर का पीछे का भाग बना था। बाकी बर्तनों पर कतिपय ज्यामितीय अभिप्राय ही थे। अकीक, कैलसिडौनी, रक्ताश्म (ब्लडस्टोन), फियांस और खड़िया पत्थर के मनकों से उस समय के भूषणों का कुछ परिचय मिलता है।

इस ताम्र प्रस्तरयुगीन संस्कृति के निर्माता झोंपड़ियों में रहते थे जो भूस्थिति में वर्ग या आयतकार थीं। इनके फर्श चूने से मिश्रित कंकर अथवा चूने से मिली काली मिट्टी के होते थे। उनकी शव-विसर्जन विधि यह थी कि वे खंडित मुर्दे को भूमि में गाड़ देते थे। आंशिक अग्निदाह अथवा उद्धान (खुले में फेंक देने) के अनन्तर अस्थियों को हाथ के बने भांडों में डाल कर इसे ऐसे ही दूसरे भांडे से ढक देते थे, और तब दोनों जुड़े हुए भांडों को उत्तर-दक्षिण के रुख भूमि में दबा देते थे। यह संस्कृति एक ओर मैसूर में ब्रह्मगिरि की प्रस्तर-कुठार संस्कृति और दूसरी ओर मध्यभारत में नवदाटोली की सूक्ष्माश्म-फल हस्तकृतियों की संस्कृति से मिलती है।

इसके अनन्तर यह स्थान कुछ समय तक उजाड़ पड़ा रहा। उसके बाद दूसरे सांस्कृतिक काल का आरम्भ हुआ। यह प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल था। इसमें भी पहले की तरह घर बनाने में अनघड़ी लकड़ी ही व्यवहार में आती थी। परन्तु अब फर्श, दीवारें, और कुएं बनाने में ईंटों का और छतों के लिये खपरैलों (tiles) का प्रयोग होने लगा था। लोहे का ज्ञान भी हो गया था क्योंकि इस धातु की दरांतियां, कुल्हाड़े, हलके फल, कटारें और भाले आदि मिले हैं। घटिया बर्तन साधारण लाल रंग के थे परन्तु बढ़िया बर्तन काली-और-लाल कुम्भकला के थे। एन० बी० पी० कुम्भकला का यहां केवल एक ही ठीकरा मिला। मनके कई आकारों और मिट्टी, शीशा, पेस्ट, फियांस, खड़िया पत्थर आदि द्रव्यों के थे। गेहूँ और दालों की उपलब्धि से पता लगता है कि सम्भवतः यही प्राचीन-तम काल था जब इन धान्यों का दक्षिण भारत में प्रवेश हुआ। सातवाहन राजाओं की टीन (तांबा, जिंक, सीसा आदि की मिश्रित धात) सीसों, और तांबे के सिक्के इस काल की सीमाओं को ई० पू० तीसरी और ईसवी पहली सदियों के बीच नियत करने में सहायता देते हैं।

तीसरा सांस्कृतिक काल दूसरे काल का ही उत्तरकालीन रूप था। इसकी प्रधान विशिष्टता यह थी कि इसके दौरान में काली-और-लाल कुम्भकला अदृश्य हो गई और एक लाल ओपदार कुम्भकला प्रकट हुई जिसके साथ भूमध्यसागर की ओर से आए हुए एम्फोरा बर्तनों के ठीकरे मिश्रित थे। इससे सिद्ध हुआ कि इस समय भारत का रोमराज्य के साथ व्यापारिक सम्बन्ध था। इस सम्बन्ध से भारत की वास्तुकला में भी उन्नति हुई और क्योंकि इस समय के मकान बहुत सुन्दर और दृढ़ नींवों पर बनाए गये थे। रोमराज्य के साथ सम्बन्ध के अन्य प्रमाणों में नील वर्ण शीशे की चूड़ियां, मनके, और रोमन सम्राट् टाइबेरियस के सिक्के की अनुकृति आदि उल्लेखनीय हैं। पहले काल की तरह इस काल में भी सातवाहन राजाओं के सिक्के मिले।

चौथा सांस्कृतिक काल बहुत संक्षिप्त था। इसकी विशिष्टता सुन्दर कलाकृतियां हैं। इनमें चीनी मिट्टी का बना बालक का मस्तक, जिसे 'नेवासा का मुसकराता बालक' कहा गया है, और सुतक्षित पक्की मिट्टी का नन्दी उत्तम उदाहरण हैं। इस समय शंख की चूड़ियां बनाना एक प्रधान गृह-उद्योग था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पांचवें काल की विशिष्टता उत्तमकोटि की बहुवर्ण शीशे की चूड़ियां बनाने की दस्तकारी थी। इसकी तिथि का पता बहमनी खानदान के सुलतानों के सिक्कों से लगता है।

रोपड़, जिला अम्बाला

डाक्टर वाई० डी० शर्मा की अध्यक्षता में खनन-शाखा ने इस वर्ष फिर यहां खुदाई कराई। काम अधिकांश हड़प्पा-काल के कब्रिस्तान पर केंद्रित रहा जो गत वर्षों में उपलब्ध हुआ था। यह कब्रिस्तान, जो अब एक छोटा-सा टीला है। मुख्य खंडहर के 160 फुट पश्चिम में है। यह कब्रिस्तान हड़प्पा के कब्रिस्तान 'आर-37' की शैली का है। कब्रिस्तान के टीले में उत्तरकालीन 'पेंटड ग्रे वेयर' के लोगों ने काफी गड़बड़ मचाई थी। बहुत से नर कंकाल इतने खंडित हो गए थे कि उनके केवल अंश ही बाकी बचे थे। कई को तो कब्रों से सर्वांग निकाल लिया गया था। यह गड़बड़ जानबूझ कर नहीं की गई और शायद विभिन्न आवश्यकताओं के लिए गड्ढे खोदने के दोरान में हो गई। ऐसा होने पर भी कई समाधियाँ काफी सुरक्षित थीं और इनसे शव विसर्जन विधि का पूरा परिचय मिल सकता था।

कब्रों के गढ़े आयाम में 8×3 वर्गफुट और गहराई में 2 फुट थे। मुर्दे को कब्र में उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की दिशा में लिटाया जाता था। एक मुर्दा उत्तर-दक्षिण दिशा में पड़ा था। मुर्दे के साथ प्रायः शवभांड रखे जाते थे। कुछ भांडे सिर के पास, कुछ पाँवों के पास और कुछ दोनों पार्श्वों के साथ धरे होते थे। जिन समाधियों को संर्वांग खोदा गया उनके साथ जो शव भांड मिले उनकी संख्या दो से लेकर 26 तक की थी। कब्रों के अंदर जो भूषण मिले उनमें फियांस, और शंख की चूड़ियां, तांबे की अंगूठी और कुछ मनके थे। इन भूषणों में अधिकांश अपने उचित स्थानों पर नहीं मिले। केवल एक फियांस की चूड़ी मुर्दे की बाईं कलाई पर अभी तक लगी थी और एक दूसरे मुर्दे के दाएं हाथ की मध्यमा अंगुलि पर तांबे की अंगूठी थी। हड़प्पा में भी एक मुर्दे की दाईं अनामिका अंगुलि में एक तांबे की अंगूठी पाई गयी थी।

तृतीय काल (ई० पू० 600–200) की मोटी दीवार जो गतवर्ष अंशतः खोदी गई थी, इस वर्ष सर्वांग उद्घाटित की गई। मालूम हुआ कि यह एक बड़े तालाब की पुश्ता दीवार थी। इस तालाब का भरण वर्षा के पानी से होता था जिसके प्रवेश के लिये एक तरफ ईंटों की नाली बनी थी।

बाड़ा और सलौड़ा, जिला अंबाला

ये दोनों टीले रोपड़ से पांच मील दक्षिण में एक-दूसरे के पड़ोस में स्थित हैं। पुरातत्त्व विभाग की उत्खनन शाखा ने इस वर्ष यहां भी खुदाई कराई थी। यहां इस सम्भावना से काम कराया गया कि शायद इन टीलों में हड़प्पा-संस्कृति और 'पेंटड ग्रे वेयर' की संस्कृति के लोगों में परस्पर सम्पर्क के चिह्न मिल जाएं। परन्तु ऐसे सम्पर्क के कोई लक्षण नहीं मिले।

बाड़ा के टीले में ऊपर से नीचे तक हड़प्पा-संस्कृति के उत्तरकालीन निकृष्ट रूप के अवशेष पाए गये। परन्तु इससे 300 गज के अन्तर पर सलौड़ा के टीले में सब से नीचे की तह में 'पेंटड ग्रे वेयर' के लोगों की आबादी थी। इसके ऊपर की तह कुषाणकाल की और उसके ऊपर की मध्यकाल की थी।

बाड़ा की खुदाई से पता लगता है कि हड़प्पा संस्कृति ने सतलुज के ऊपर के काठे में आकर क्या रूप धारण कर लिया था। प्रकटतः हड़प्पा के लोगों का सतलुज के काठे में आना धारा प्रवाह रूप से दीर्घकाल तक होता रहा। जो लोग बाद में आए वे नये विचार और कौम्भकारिक रूढ़ियां अपने साथ लाए। रोपड़ में हड़प्पा-संस्कृति के दो रूप नज़र आए। इनमें नीचे का रूप प्रौढ़ हड़प्पा-संस्कृति का उत्तरकालीन रूप था, किन्तु ऊपर के रूप में नये विचारों और भावनाओं का मिश्रण था। नीचे के रूप में नुकीले पैंदे का विशिष्ट सैंधव-चषक कभी-कभी मिलता था, परन्तु ऊपर की तहों में इसका अत्यन्ताभाव था। ऊपर की तहों में मिट्टी की तिकोन टिकड़ियां बहुत कम थीं और मिट्टी के बेढब बर्तनों पर विलिखित (incised) अनिश्चित मूल के अभिप्राय, दिखाई देने लगे। बाड़ा में रोपड़ की हड़प्पा-संस्कृति का यही उत्तरकालीन विकृत और निकृष्ट रूप मिला। इससे यह सिद्ध होता है कि रोपड़ में हड़प्पा-संस्कृति के नष्ट हो जाने पर भी बाड़ा में यह जीवित रही।

रंगपुर, जिला सुरेन्द्रनगर

1953–54 की खुदाई से रंगपुर और हड़प्पा के बीच सांस्कृतिक-सम्बन्ध सिद्ध हो गया। परन्तु रंगपुर में जो मटियाली कुम्म-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला लाल कुम्भकला से मिश्रित मिली उसके विषय में अनुसंधान करना अभी शेष था। अतः पश्चिमी मंडल के अध्यक्ष श्री एस० आर० राओ ने इस वर्ष यहां फिर खुदाई कराई।

इस खुदाई के साक्ष्य से इस तथ्य की और भी पुष्टि हुई कि रंगपुर में हड़प्पा-संस्कृति दीर्घकाल तक जीवित रही। चित्रित बर्तनों पर बैल, मोर, हिरन आदि पशु-अभिप्राय मिले हैं (फलक 12ख)। नीचे की तहों में 6 फुट 3 इंच मोटा कच्चा प्राकार था। रंगपुर से 30 मील उत्तर-पूर्व में लोथल के टीले में सिंधु मुद्राएं तथा और वस्तुएं मिलने से इसमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं रह जाता कि रंगपुर हड़प्पा-संस्कृति की बस्ती थी। इस वर्ष की खुदाई से यह भी सिद्ध हो गया कि मटियाले कुम्भखंड लाल कुम्भखंडों के समकालीन थे।

इस वर्ष की खुदाई का दूसरा महत्त्व यह था कि इस टीले में सिंधुकाल से लेकर एन० बी० पी० के पहले के काल तक संस्कृतियों की क्रमबद्ध परम्परा का परिचय मिला। यहां हड़प्पा-सस्कृति का विनाश हुआ। यह संस्कृति धीरे-धीरे निकृष्ट रूप धारण करती हुई अन्त में उत्तरकालीन संस्कृति में घुलमिल कर अपने अस्तित्व को खो बैठी। इस उत्तरकालीन संस्कृति की विशिष्टता चमकीली लाल कुम्भकला थी।

लोथल, जिला अहमदाबाद

यह टीला 1,900 फुट लंबा, 1,000 फुट चौड़ा और 20 फुट ऊंचा है। इसकी सतह पर बिखरी हुई वस्तुओं की परीक्षा से प्रतीत होता था कि इस प्रान्त में यह हड़प्पा-संस्कृति का प्रसिद्ध स्थान रहा होगा। इस साक्ष्य से प्रभावित होकर पश्चिमी मंडल की ओर से श्री एस० आर० राओ ने यहां इस वर्ष खुदाई का सूत्रपात किया। फलतः इसमें हड़प्पा-संस्कृति के तीन रूप प्रकट हुए। सबसे प्राचीन रूप का प्रतीक 4–5 फुट मोटा स्तर था जिसमें लाल और मटियाले बर्तनों के खंड बाढ़ के कारण यहां दब गये थे। दूसरा रूप वह था जिसमें 8 फुट ऊंचा और 16 फुट चौड़ा कच्चा प्राकार बनाया गया। अन्तिम रूप वह था जिसमें पूर्वोक्त कच्चे प्राकार के ऊपर एक आबादी बसी जबकि बाढ़ों के कारण प्राकार नष्ट हो चुका था। रंगपुर की तरह यहां भी नालियां पक्की ईंटों की बनी थीं।

इस खुदाई में खड़िया पत्थर के कंगन, प्याले और कर्णफूल, फियांस, गोमेद, अकीक, सोने आदि द्रव्यों के सैकड़ों मनके, चकमक के ब्लेड, (फलक 13क) तांबे के तीरों के फल और घनाकार बटखरे, सिंधु मुद्राएं और मुद्रा छापें (फलक 13ख) आदि प्रचुर संख्या में मिलीं। अब हड़प्पा-संस्कृति के दक्षिण की ओर व्यापक प्रसार के विषय में रहा सहा संदेह भी सदा के लिये जाता रहा। रंगपुर के समान यहां भी बर्तन लाल या मटियाली कुम्भकला के थे। इनमें बीकर, चषक, खुले मुंह के नांद, ऊंची पीठ की थालियां, आदि वर्णनीय हैं। साधारणतः चित्र लाल जिल्द पर काले रंग के थे। परन्तु मटियाले बर्तनों पर ये चाकलेट रंग के थे और अधिकतर रेखामय ज्यामितीय अभिप्राय के बने थे।

प्रकाश, जिला धूलिया

70 फुट की असाधारण ऊंचाई तक उठा हुआ यह टीला ताप्ती और गोमै नदियों के संगम पर स्थित है। पश्चिमी भारत में ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति का यथार्थ रूप जानने और स्तर-रचना के आधार पर इसके काल की इयत्ता नापने के लिए दक्षिण-पश्चिमी मंडल के अध्यक्ष श्री बी० के० थापर ने 1954–55 में इस टीले में गहन अनुसंधान कराया। यहां 55 फुट गहरी खुदाई में उत्तरोत्तर पांच सांस्कृतिक स्तर उपलब्ध हुए। निम्नतम स्तर (ई० पू० 1000) के निवासी सूक्ष्माश्म उपकरणों का प्रयोग करते थे (फलक 14क)। तांबा मालूम होने पर भी बहुत कम मात्रा में प्राप्त था। प्रधान कुम्भकला चित्रित लालवर्ण की थी जिस पर लाल पोतेवाली जिल्द पर अलंकरण अभिप्राय काले रंग में बनाए गये थे। अलंकरणों में रेखापूर्ण बर्फीदार टेढ़ी लकीरें, जाल, लहरिये, सीढ़ियां और पशु-अभिप्राय समाविष्ट थे। इसी कुम्भकला के साथ एक चमकीली सलेटी कुम्भकला के अवशेष भी मिले थे जिन पर कहीं-कहीं सफेद रंग के रेखामय अभिप्राय बने थे (फलक 14ख)।

दूसरा काल (ई० पू० पांचवीं–ई० पहली सदी) ––कुछ देर उजाड़ पड़े रहने के अनन्तर इस स्थान पर दूसरे काल की बस्ती अस्तित्व में आई। इस संस्कृति के लोग लोहे की वस्तुओं के साथ काली-और-लाल कुम्भकला का भी प्रयोग करते थे। इस काल के अंतिम भाग में एन० बी० पी० के कुम्भखंडों की उपलब्धि से पता लगता है कि इस समय यह स्थान उत्तरी भारत के साथ सम्पर्क रखता था। एन० बी० पी० के स्तर के नीचे 14–15 फुट ऊंचा मलबे का भराव था जिसमें काले-और-लाल कुम्भखंडों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बहुत अधिक संख्या में मिले। इस स्तर में जो मलभांड और मिट्टी के बने मंडल-कूप (ring-wells) मिले उनसे तत्कालीन नाली प्रबन्ध का बहुत परिचय मिलता है। इस काल की उल्लेखनीय वस्तुओं में बहुमूल्य पत्थर, शीशे और पकी मिट्टी के मनके तथा हड्डी की कृतियां हैं।

तीसरे काल (ई० पू० पहली सदी—ई० चौथी सदी) की विशिष्टता लाल ओपदार कुम्भखंडों में है जिनमें मुख्य बर्तन जल छिड़कने की कलसी थी। इसके समानरूप बर्तन पश्चिमी और मध्यभारत में व्यापक रूप से पाए जाते हैं। इस काल की अन्य उल्लेखनीय वस्तुओं में उत्तम अलंकरणों वाली शंख की चूड़ियां, मिट्टी के खिलौने और तांबे के अवशेष हैं।

अन्तिम काल की बस्ती (ई० पांचवीं शती) में एक साधारण कुम्भकला, जिसमें कोई वर्णनीय विशिष्टिता नहीं थी, मिली। इस कला के बर्तनों पर काले-और-लाल रंग का पोता था। बर्तनों के ऊपर के भाग मध्यावनत थे और कंधों पर गहरी रेखाएं थीं। इस समय की विशेष वस्तुओं में चित्रित शीशे के कंगन और गणेश की एक लघुकाय मूर्ति वर्णनीय हैं।

पुराना किला, नई दिल्ली

यह स्थान कितना प्राचीन है, और क्या यह महाभारत के इंद्रप्रस्थ का प्रतीक है या नहीं, यह जानने के लिये उत्तर-पश्चिमी मंडल की ओर से श्री बी० बी० लाल ने यहां खुदाई कराई।

पता लगा कि ई० पू० 1000 के लगभग इस स्थान पर एक बस्ती थी। इस समय के लोग 'पेंटड ग्रे वेयर' कुम्भकला के विलक्षण प्याले और तश्तरियां इस्तेमाल करते थे। तांबे की दरांतियां, नहेरने, सुरमचू आदि खुदाई में पाए गये।

ई० पू० छठी सदी के लगभग एन० बी० पी० बर्तन व्यवहार में आने लगे। इस समय के घर पकी ईंटों के थे और घरों में से मैला पानी निकालने के लिये चकियाओं के बने मण्डल-कूप व्यवहार में आते थे। तांबे के साथ-साथ लोहा भी काम में आता था और आहत एवं तांबे की ढली हुई मुद्राएं उस समय का चलन था।

ई० पू० दूसरी सदी से लेकर ईसवी तीसरी सदी तक यह स्थान उत्तरोत्तर मथुरा के शासकों, यौधेयों और कुषाणों के अधिकार में आया। उस समय की कुम्भकला भद्दे लाल रंग की है और इस पर कई भांति के छापदार अभिप्राय बने हैं। रोचक वस्तुओं में उत्तम रीति से सांचे में ढली हुई शुंगशैली की मिट्टी की मूर्तियां हैं जो इस काल की नीचे की तहों में पाई गयी थीं। यहां खुदाई को अधूरा ही छोड़ना पड़ा था। अतः, यह कहना कठिन है कि कुषाणकाल के अनन्तर यह स्थान कितनी शताब्दियों तक आबाद रहा।

आहाड़, ज़िला उदयपुर

आहाड़ गांव उदयपुर रेलवे स्टेशन से तीन फर्लांग के लगभग है। मध्यकालीन शिलालेखों में इसका नाम आघाटपुर दिया गया है। चित्तौड़ जाने के पहले यह मेवाड़ के राणाओं के पूर्व पुरुष गुहिल राजाओं की राजधानी थी। इसके पास ही इसी नाम के नाले के तट पर एक टीला है जिसे लोग धूलकोट कहते हैं। 1952 में यहां राजस्थान के पुरातत्त्व विभाग ने परीक्षा के लिये एक खात लगाया था। परन्तु इस थोड़ी-सी खुदाई में संस्कृति-परम्परा का स्पष्ट पता नहीं लग सका। इसलिये इस वर्ष यहां फिर काम शुरू किया गया। 30 फुट गहरी खुदाई में दो सांस्कृतिक स्तर उपलब्ध हुए। इनके बीच समय का कुछ अन्तर था। पहले स्तर की बस्ती की नींव रेतीली भूमि की बारीक तह पर रखी हुई थी। इस प्राकृतिक रेतीली तह के नीचे अरावली से सम्बद्ध चट्टान थी। इस सांस्कृतिक स्तर की विशेष दस्तकारी एक काली-और-लाल कुम्भकला थी जिसके समान कुछ वर्ष पहले मध्य तथा पश्चिमी भारत में मिल चुकी थी। जिस स्तर में इस शैली के बर्तन मिले उसकी ऊंचाई 20 फुट थी। इससे पता लगता था कि आहाड़ में यह कुम्भकला लंबे समय तक व्यवहार में आती रही। स्थितिभेद से इसके तीन रूप दिखाई पड़े। नीचे की तहों में जो रूप प्रकट हुआ उसमें बर्तन मोटे और खुर्दरे थे और उन्हें केवल बाहर से ही पालिश किया गया था। बीच की तहों के बर्तन उत्कृष्ट थे और अंदर बाहर दोनों ओर से पालिश किये गये थे। इनमें से बहुतों पर पुती हुई जमीन पर प्रायः सफेद परन्तु कहीं-कहीं काले चित्र बने थे। चित्रों में समानान्तर रेखाएं और बिंदु अधिक थे। ऊपर की तहों में जो अंतिम रूप मिला वह फिर निकृष्ट था। इस काल में एक और प्रकार की लाल कुम्भकला जिस पर पुती हुई जिल्द पर काले चित्र बने थे प्रकाश में आई। आरम्भ से लेकर काली-और-लाल कुम्भकला के साथ विलिखित अभिप्रायों वाले लाल कुम्भखंड भी मिश्रित थे। इस स्तर की ऊपर की तहों में पकी मिट्टी की चकियों के बने मण्डलकूप भी थे जो भारत में प्रायः सर्वत्र प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल के स्तरों में पाए गये हैं। मध्यवर्ती तथा ऊपर की तहों में,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जहां काली-और-लाल कुम्भकला मिली, दो सूक्ष्माश्म उपकरण भी उपलब्ध हुए जिससे इस बात का समर्थन हो गया कि आहाड़ में यह कुम्भकला मध्य तथा पश्चिमी भारत की समान रूप कुम्भकला का ही प्रसार था।

ऊपर के स्तर की विशिष्टता चित्रहीन लाल कुम्भकला के विविध बर्तन थे। इनमें दो भांति के ढकने और नाशपातीनुमा मटके वर्णनीय हैं। एक भांति के ढकनों पर छोटे-छोटे कूज़े चिपकाए हुए थे। ऐसे ही बर्तन मध्य और उत्तरी भारत के ऐतिहासिक टीलों में मिले हैं। मिट्टी के उपहार-कुंड (votive tanks) भी इस संस्कृति का एक विशष लक्षण था।

इस टीले पर लंबे काल तक लगातार आबादी रही। इसका समर्थन कई एक वास्तु-स्तरों से भी होता है। मकान पत्थर अथवा कच्ची ईंटों के बनाए जाते थे। नीचे के सांस्कृतिक स्तर की ऊपर की तहों में जो मकान मिले उनमें अनाज रखने के धान्यकोष्ठ और खाना पकाने के चूल्हे पाए गये।

मध्य भारत में काली-और-लाल कुम्भकला की आनुमानिक तिथि ई० पू० 500 या इससे कुछ पहले है। इसलिये इस प्रमाण के आधार पर कहा जा सकता है कि आहाड़ की पहली संस्कृति भी इतनी ही पुरानी होगी। ऊपर की संस्कृति सम्भवतः कुषाण काल की थी।

मथुरा

मथुरा का महत्त्व भारत के प्राचीन साहित्य एवं परम्परागत जनश्रुतियों में निहित है। इसकी प्राचीनता का समर्थन उस वनपे वस्तुकोश से होता है जो गत शताब्दी में इसके आस-पास के टीलों की सतह पर से अथवा अवैध खुदाइयों में अनुसन्धाताओं को मिला। इस कोश में सिक्के, मिट्टी के खिलौने, शिलालेख और पत्थर की मूर्तियां आदि समाविष्ट हैं। कटरा टीले में इस वर्ष की खुदाई में 'पेंटड ग्रे वेयर' और 'एन० बी० पी०' की उपलब्धि से पुरातत्त्व की दृष्टि से इस स्थान का महत्त्व और भी बढ़ गया है। कटरा टीले का यापक सर्वेक्षण किया गया और उसमें इसके इर्द-गिर्द दो कच्चे प्राकार मिले। बाहर का प्राकार आकार में अंडाकार (elliptical) और अंदर का प्राकार चौपहल था। इससे पता लगता था कि यह टीला प्राचीन काल में एक गढ़ी थी।

इस वर्ष पुरातत्त्व विभाग ने औरंगजेब की मसजिद के 500 फुट उत्तर में इस टीले पर एक छोटा-सा खात लगाया। सबसे नीचे की तह में, जो कंकरीले प्राकृतिक भूतल के ऊपर थी, 42 फुट की गहराई में हाथ के बने मिट्टी के बर्तनों के खंड पाए गये। इस खात की संकुचित सीमा के अंदर 'पेंटड ग्रे वेयर' का कोई ठीकरा नहीं मिला। इसी तरह प्राकृतिक भूतल के ऊपर 6 फुट गहरी तह में एन० बी० पी० कुम्भकला का भी कोई अवशेष नहीं देखा गया। इसमें हस्तिनापुर के समान केवल चित्रहीन सलेटी कुम्भखंड और पालिश किये हुए काले ठीकरे थे। अन्य उपलब्ध वस्तुओं में पकी मिट्टी की गोल टिकड़ियां, गोले, मनके, मिट्टी की चलनियां और एक किश्ती की शक्ल का पक्षी था। अन्य प्राचीन टीलों से जो समान शैली की वस्तुएं मिलीं उनके आधार पर सबसे नीचे की बस्ती का काल ई० पू० छठी शती हो सकता है।

दूसरे काल की बस्ती में एन० बी० पी० कुम्भकला के अवशेष पाए गये। यह काल तीन भागों में बांटा जा सकता था। इनमें सबसे प्राचीन भाग में बांस और सरकंडों की बनी झोंपड़ियों के चिह्न मिले। इन झोपड़ियों के मलबे में कोई-कोई पकी ईंट, नोकदार हड्डी की शलाकाएं या कलमें, अकीक के तावीज़ और मनके और अधपकी काले रंग की मातृदेवी की मूर्तियां और पशु पाए गये। इसी काल विभाग में मिट्टी के मण्डलकूप भी मिले। बीच के काल में चौपहल तांबे के सिक्के, मिट्टी के मनके, कर्णफूल, अकीक के उत्कीर्ण मनके, धूम्रवर्ण मातृदेवी की मूर्तियां और लंबे दांतों वाले मिट्टी के हाथी भी उपलब्ध हुए। तीसरे काल-विभाग में पकी ईंटों के बहुत मकान बने। तांबे की वस्तुएं बनाने की भट्ठी और लोहार की दुकान प्रकाश में आई। जिसमें कई एक तांबे के सिक्के और सांचे तथा शंख, शीशा और बिलौर के मनके पाए गये। भव्य शिरोभूषण धारी मिट्टी की स्त्रीमूर्तियां और तीन टांगों वाले बंदर भी मिले। यद्यपि इस संक्षिप्त खुदाई में कोई पूरा मकान नहीं मिला फिर भी इसमें पुशता दीवारें, नालियां और मल-कूप पाए गये। ई० पू० दूसरी शती के लगभग इस सांस्कृतिक काल का अंत हो गया।

कुछ काल उजाड़ पड़ा रहने के बाद तीसरे काल की आबादी अस्तित्व में आई। इस काल की असाधारण वस्तुओं में बिल्लौर, गोमेद, अकीक, लाजवर्दा, फियांस, जेस्पर शंख आदि द्रव्यों के विविध मनके, चौसर खेलने के हड्डी के पासे, तांबे के सिक्के जिनमें कुषाणों के सिक्के भी मिश्रित थे, पत्थर के डब्बे और नीली ग्लेज़ की हुई कलसियां थीं।

चौथे काल की मन्मय मूर्तियों में वामन और विरूप मनुष्यों की आकृतियां पाई गईं। इनके बनाने में दो सांचों का प्रयोग किया गया था। इसी शैली की मूर्तियां अहिच्छत्रा के भग्नावशेषों में ई० 100-350 के बीच के समय में मिली थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पांचवां काल ईसवी छठी सदी में समाप्त हुआ। इसका समर्थन प्रारम्भिक और उत्तरकाल की गुप्तमुद्राओं और मुद्राछापों नैगमेश की मूर्ति, और कई एक अश्वारोही और गजारोही मूर्तियों से होता है जो इस युग की विशिष्टताएं थीं।

राजगिर, जिला पटना

इस वर्ष मध्यपूर्वी मंडल के अध्यक्ष डाक्टर पाटिल ने जीवकाम्रवन के स्थान पर फिर खुदाई कराई। इसमें और कई वास्तु प्रकाश में आए। पिछले साल की अण्डाकार (elliptical) इमारत के समानान्तर एक और ऐसी ही इमारत दृष्टिगोचर हुई। असाधारण आकार और आयाम के दो मंडप इसके अन्तर्गत थे। मिट्टी के बर्तन पहले की तरह मोटे और लाल कुम्भकला के थे। लोहे की कीलें, मिट्टी के गोले और इसके अतिरिक्त पशु-मूर्तियां भी मिलीं। राजगिर में एन० बी० पी० कुम्भकला का कब आरम्भ और कब अन्त हुआ यह जानने के लिये मनियार मठ, के पास की ऊंची भूमि में कुछ खात लगाए गये। परन्तु इस विषय में किसी विशेष बात का पता नहीं लगा। काले और लाल बर्तनों के साथ एन० बी० पी० कुम्भखंड तीसरी तह से नीचे की और प्राकृतिक चट्टान की कच्ची मिट्टी सतह तक मिलते गये। मलकूप और वास्तविक कूप के सहित अनघड़े पत्थरों और कीच का बना हुआ एक निवास गृह भी खोदा गया। यह गृह एन० बी० पी० कुम्भकला के बाद का था।

कौशाम्बी, जिला इलाहाबाद

इलाहाबाद के विश्वविद्यालय ने श्री गोवर्धनराय शर्मा की अध्यक्षता में इस वर्ष फिर यहां काम कराया। इस खुदाई का उद्देश्य घोषिताराम विहार का पूर्णांग उद्घाटन तथा प्राकार गौर पूर्वी द्वार का खनन कराना था।

पहली खुदाई को पश्चिम और दक्षिण की दिशाओं में बढ़ाने से घोषिताराम विहार का यह भाग पूर्णांग प्रकाश में आ गया। इस भाग का सर्वश्रेष्ठ वास्तु एक महाकाय स्तूप था। भूस्थिति में यह चौपहल था और इसके चारों ओर भिक्षुओं की साधना के लिये मंदिर (chapels) थे। सहनों के अंदर छोटे-छोटे स्तूप थे और बीच में छोटा-सा हारीती का मंदिर भी था। सबसे अधिक महत्त्व की इमारत घोषिताराम विहार की दक्षिणी अहाते थी जो कहीं-कहीं 15 फुट की ऊंचाई तक खड़ी थी। भिन्न-भिन्न कालों के फर्श जो इस दीवार के साथ बने थे इस बात के साक्षी थे कि इस अहाते का कई बार पुनर्निर्माण हुआ। अभी तक यह दीवार 181 फुट की लंबाई तक खोदी गई है। इसकी चौड़ाई भिन्न-भिन्न कालों में 13 फु० 6 इंच और 9 फुट 6 इंच के बीच बदलती रही। उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह दीवार ईसवी दूसरी सदी के अन्त में राजा भद्रमाघ या उसके उत्तराधिकारियों के समय में बनाई गई थी और ई० छठी सदी के तीसरे चरण तक व्यवहार में आती रही।

पूर्वी द्वार का प्रधान लक्षण पर्दे के रूप में इसके आगे एक 305 फुट लंबा और 72 फुट चौड़ा मिट्टी का बांध था। इसके और प्राकार के बीच 25 फुट चौड़ा मार्ग था। बांध के पीछे 300 फुट चौड़ी खाई के पार दो छोटे टीले थे जो कभी निरीक्षण-मीनारों का काम देते थे।

इसकी आयु में प्राकार का तीन बार जीर्णोद्धार हुआ। द्वार के दोनों पार्श्वों में बनी हुई ईंटों की दीवारें मौलिक प्राकार का अंग थीं या नहीं इस विषय में सन्देह है। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि ये दूसरे काल के प्राकार का अंग अवश्य थीं। दोनों काल के प्राकारों के बीच लंबे समय का अंतर था। तीसरे काल में प्राकार और द्वार की पार्श्ववर्ती दीवारों को ऊंचा उठाया गया। परन्तु यह बात संदिग्ध है कि क्या प्राकार के चौथे काल में भी पार्श्ववर्ती दीवारों में कोई परिवर्तन किया गया या नहीं।

खुदाई में सिक्कों के सांचे और मुद्राछापें, जिन पर कई राजाओं के नाम लिखे थे, मिलीं। इनकी सहायता से कौशाम्बी का छठी सदी का इतिहास लिखा जा सकता है। मुद्राछापों में एक हूणराज (तोरमाण) की थी जिसकी एक मुद्रा पहले भी कौशाम्बी में मिल चुकी है। ध्रुवदत्त और शिवदत्त या सर्वदत्त दो और राजाओं के नाम मिले हैं। इन नामों से भारत के इतिहास में एक नये राजवंश का परिचय मिलता है। लेखों की लिपि शैली के साक्ष्य से प्रतीत होता है कि इन राजाओं का काल छठी सदी का उत्तरार्ध था। हो सकता है कि हूणों के पराजय के अनन्तर इन राजाओं ने शक्ति संचय करके नये राजवंश की स्थापना की हो।

इस वर्ष की और उत्खात वस्तुओं में एक अलंकृत पूर्णघट का खंड था और एक पकी मिट्टी का फलक जिस पर एक योद्धा चार घोड़ों के रथ पर सवार है (फलक 15ख)। पूर्णघट पर पंखों वाली यक्षियां कमल के फूलों और पत्तों के झुरमट से उड़ती दिखाई गई हैं। इनके अतिरिक्त बहुत-सी पत्थर की मूर्तियां, मिट्टी के खिलौने, मनके, तथा हथियार और औजार भी मिले।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुम्रहार, जिला पटना

यहां सन् 1951–52 में जो खुदाई हुई उसी सिलसिले में इस वर्ष मौर्यकालीन स्तम्भ मंडप के क्षेत्र में और खनन किया गया। पिछली दाई से पता लग गया था कि डाक्टर स्पूनर का यह विचार आमूलक था कि इस मंडप के खंभे इस क्षेत्र की अनखुदी गहराई में धंस गये थे। इस वर्ष पहली खुदाई के दक्षिण में कुछ खात खोदे गये जिनसे महत्त्वपूर्ण बातों का पता लगा। राख की तह, जो उस अग्निकांड की प्रतीक थी जिसने मंडप को जलाकर राख बना दिया, पहली खुदाई के पास वाले खातों में पाई गई परन्तु जो खात दूर दक्षिण में थे उनमें नहीं मिली। इससे स्तम्भ-मंडप की दक्षिणी सीमा का पता लग गया। और यह भी मालूम हो गया कि मंडप के सब मिला कर 84 खंभे थे। इनमें से 80 खंभे मुख्य मंडप में और चार ड्योढ़ी में लगे थे। डाक्टर स्पूनर केवल 72 खंभों की स्थिति को ही मालूम कर सका था। 18 फुट की गहराई पर खंभों के लकड़ी के पीठ पाए गये। इस खुदाई से यह भी सिद्ध हुआ कि स्पूनर के द्वारा उत्खात लकड़ी के मंच की सीध में पूर्व की ओर से एक नहर भी इधर आती थी जो महल की दक्षिणी सीमा के साथ बहती थी।

इस खुदाई में स्तम्भ-मंडप के नष्ट हो जाने की तिथि का भी पता लग गया। राख की तह पर शुंगकाल की तहें थीं जिससे सिद्ध होता था कि मंडप ई० पू० दूसरी सदी के मध्य में नष्ट हुआ होगा। इसी मंडप के शीर्ण स्तंभों के खंड कुम्रहार के समस्त क्षेत्र पर बिखरे पाए गये हैं। इनके साथ ई० पू० 100 और ई० 100 के मध्यकाल की और वस्तुएं भी मिलीं थीं।

उत्खातों के मत में समष्टि साक्ष्य से पता लगता है कि सतह ज़मीन से सात फुट नीचे जो राख की तह मिली वह स्तम्भ-मंडप का फर्श था। मौर्यकाल की तह इससे चार फुट और नीचे थी। प्रत्येक खंभा 31 फुट ऊंचा था। इसका पांच फुट नीचे का भाग भूमि में गड़ा था। अतः सतह ज़मीन से छत की ऊंचाई 22 फुट थी।

आरोग्य विहार के पश्चिम में जो खुदाई हुई उसमें रोचक उपलब्धियां प्रकाश में आईं। यहां 4 फुट की गहराई पर किसी पहली इमारत पर बनी हुई स्तूप की गोल पीठिका-सहित एक द्वयस्र (apsidal) इमारत प्रकट हुई। जब यह इमारत गिर गयी तो प्रदक्षिणापथ-सहित एक नया वर्गाकार स्तूप पहले स्तूप के 18 फुट पूर्व में बनाया गया। मालूम होता है कि गन्धर्वों, मिथुनों और बुद्ध की गच मूर्तियां जो पहली खुदाइयों में यहां मिलीं वे गुप्तकालीन इसी चैत्य की थीं जिसमें वर्गाकार स्तूप पूजा का स्थान था। अभी यहां खुदाई पूरी नहीं हुई।

तामलुक, जिला मिदनापुर

तामलुक प्राचीन ताम्रलिप्ति है जिसका साहित्य में बहुधा वर्णन मिलता है। यह नगर व्यापार का केन्द्र और विद्या का प्रसिद्ध पीठ था। पुरातत्त्वज्ञों को इस स्थान के महत्त्व का पता बहुत देर से था क्योंकि इस खंडहर में सतह ज़मीन पर अथवा खोदने से सिक्के, मिट्टी के खिलौने, बर्तन आदि बहुत चीजें मिल चुकी हैं। इसकी सांस्कृतिक सम्पत्ति तथा काल-परम्परा का परिचय प्राप्त करने के लिये इस वर्ष प्राच्य मंडल की ओर से श्री एम० एन० देशपांडे ने यहां खुदाई का काम आरम्भ किया। भिन्न-भिन्न स्थानों पर सात-खात खुदवाए गये जिनसे पता लगा कि इस स्थान पर नव-पाषाण युग से आधुनिक समय तक मनुष्य-बस्तियां एक के बाद दूसरी अस्तित्व में आती रहीं। आबादियों के बीच कहीं-कहीं समय का अन्तर भी है जिससे पता लगता है कि इस समय यह स्थान उजाड़ पड़ा रहा।

काल 1—इस काल की बस्ती में नव-प्रस्तर-युग के चिपटे कुल्हाड़े और अधपके मिट्टी के बर्तन मिले।

काल 2 (ई० पू० तीसरी-दूसरी शती)—इस समय की वस्तुसामग्री में सुन्दर मृन्मय मूर्तियां (फलक 16) तांबे के ढले हुए सिक्के, और एक कुम्भकला जिसकी तुलना उत्तरी भारत की समकालीन कुम्भकला से की जा सकती है, मिली।

काल 3 (ई० पहली-दूसरी सदियां)—प्रतीत होता है कि भारत महासागर के तट पर स्थित अन्य कई नगरों की तरह तालुमक भी इस समय रोमन-व्यापार का केन्द्र था क्योंकि यहां से एक जल छिड़कने का पात्र (Sprinkler) और चक्रांकित कुम्भकला के अवशेष मिले हैं (फलक 16)। सोपानमार्ग से युक्त ईंटों का बना एक तालाब, मिट्टी का मलण्डकूप और एक मल-गर्त जो यहां मिले इसी समय के हैं। यहां अकीक के मनके भी पाए गये।

काल 4—इस काल के स्पष्ट प्रमाण नहीं मिले। इसमें कुषाण और गुप्त कलाओं से प्रभावित तीसरी-चौथी सदियों के मिट्टी के सुन्दर खिलौने पाए गये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके आगे के इतिहास के विषय में अनुमान लगाना कठिन है। अब यह स्थान अपना महत्त्व खो बैठा था। जो साक्ष्य यहां से मिल सकता था तालाबों के खोदने के कारण उसका नाश हो चुका है। इन तालाबों की खुदाई के दौरान में कभी-कभी पाल और सेनवंश के कालों की मूर्तियां मिलती हैं जिससे इस काल के इतिहास पर कुछ धीमा-सा प्रकाश पड़ता है।

अन्तिमकाल (ई० 18वीं--19वीं सदियों) की वस्तुएं खंडहर की ऊपर की तहों में हैं। ये स्थानीय राजाओं की बनाई ईंटों की इमारतों के समकालीन हैं।

अमृतमंगलम्, जिला चिंगलपट

यह स्थान चिंगलपट जिला के पथरीले क्षेत्र में स्थित है जहां शवभांडों वाली कब्रें सामूहिक रूप से पाई जाती हैं। इस वर्ष यहां दक्षिणी मंडल की ओर से श्री नीलरत्न बेनर्जी ने खुदाई कराई थी। इसका उद्देश्य इसी जिले में कणाश्म पहाड़ियों के क्षेत्र में स्थित सानर के महाश्म स्मारकों से सम्बन्ध स्थापन करना और यह जानना था कि इस शव-विसर्जन विधि का उन शवभांडों के साथ कहां तक सादृश्य था जो पत्थरों के गोल घेरों से ढके इसी जिले में पाए जाते हैं।

ये शवभांड-कब्रें (फलक 17 क) लेटराइट (चिकनी मिट्टी और रेत के मिश्रण से बना पत्थर) के पथरीले पठार पर पाई जाती हैं। पठार के मूल में बारिशी तालाब हैं। जिनका पानी खेती की सिंचाई के काम आता था। महाश्म-स्मारकों के निकट भी ऐसे ही बारिशी तालाब पाए गये हैं। अमृतमंगलम् के विस्तृत खंडहर में 250 के लगभग शवभांड पाए गये थे। ये भांड विविध मान के थे। आकार में अंडाकार या गोल थे। सब भांड हाथ के बने, मोटे, खुरदरे और फीके लाल रंग के थे। इनके मुंह के किनारे गोल थे। कई पर अलंकरण थे और कई सादे ही थे।

कई शवभांडों की खुदाई से पता लगा कि इन्हें चट्टान काटकर या कंकरीली भूमि को खोद कर गढ़े में रखा जाता था। शव की बिना जली, मांसहीन, खंडित अस्थियां, जिनमें खोपड़ी, लंबी हड्डियां, दांत, पसलियां आदि शामिल होती थीं, मटके की तह में रख दी जाती थीं। हड्डियों के ऊपर काली-और-लाल कुम्भकला के तीन या चार बर्तन रखे जाते थे और मटके के अंदर कुछ लोहे की वस्तुएं भी डाल दी जाती थीं। तदनन्तर शवभांड को मिट्टी से भरकर अर्धांगाकार ढकने से ढक दिया जाता था। ढके हुए शवभांड पर कुछ और बर्तन रखे जाते थे और फिर गढ़े को भर देते थे। गढ़े के किनारे पर पत्थर की घड़ी हुई शिलाएं जोड़ दी जाती थीं और गढ़े को कंकरीली मिट्टी की तह से भरकर समतल कर देते थे। इन शवभांड-कब्रों पर स्तूपाकार (Barrow like) के पत्थरों के ढेर कहीं-कहीं मिले जो केर्न-कब्रों पर पाए जाते हैं। ये शवभांड-कब्रें महाश्म-कब्रों की अपेक्षा साधारण और आडम्बर रहित हैं। पत्थरों के ढेरों का अभाव, अपेक्षाकृत बर्तनों की कमी, लोहे की वस्तुओं का पाया जाना, और अस्थियों की थोड़ी संख्या इन सब बातों से पता लगता है कि शवभांड-संस्कृति के लोगों की शव-विसर्जन विधि महाश्म-संस्कृति के लोगों की विधि की तुलना में सामान्य एवं सादी थी। क्या ये कब्रें महाश्म कब्रों की अपेक्षा प्राचीनतर हैं अथवा उनका उत्तरकालीन रूप हैं इसके निर्धारण के लिये अभी और अनुसन्धान की आवश्यकता है।

नागार्जुनकोंडा, जिला गुटूंर

इस वर्ष इस स्थान पर सात गहरे खात खोदे गये। इनमें दो अथवा तीन भिन्न-भिन्न कालों के बौद्ध स्मारक, जिनमें विहार, स्तूप, मंडप, स्नानागार और दो मंदिर समाविष्ट थे, प्रकाश में आए। मंदिरों में एक हारीती का है।

खात 3--में खुले प्रांगण सहित एक संघाराम है। इसमें एक लेखांकित ठीकरा जिस पर 'नकतर' (स्वर्ग से भी श्रेष्ठ) शब्द लिखा था, मिला। सम्भवतः 'नकतर' संघाराम का नाम था। इसी वास्तु में एक लेखांकित अर्धस्तम्भ (बगली सतून) भी मिला जिस पर इक्ष्वाकु वंश के राजा वीरपुरुषदत्त के शासनकाल का दसवां वर्ष अंकित था और बौद्ध तथा अन्य धर्मों के कल्याण के लिये कुछ दान का भी उल्लेख था।

खात 6--इसमें एक संघाराम प्रकाश में आया जिसके पश्चिम में महाचैत्य था, पूर्व में दो उद्देशक स्तूप और दोनों पार्श्वों में चार-चार कोठरियों का एक विहार था। संघाराम में बुद्ध की खंडित मूर्तियां, कुछ मल-भांड और दूसरे बर्तन पाए गये जिनसे पता लगता था कि यह वास्तु शायद मूर्तियों और बर्तनों का भाण्डागार था।

खात 6 से सटा हुआ 48 फुट व्यास का एक और महाचैत्य था जो शैली में ठेठ आंध्र था। भू-स्थिति में यह अंडाकार था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बेलन के आकार के इसके धुरे में अरों के समान 10 भुजाएं थीं। इसके बाहरी माथे में अयक-चौतरे बने थे जिन पर दो इंच मोटा पलस्तर का दृढ़ लेप था।

खात 7 क—यह खात गतवर्षों की सब खुदाइयों में अधिक महत्त्व का सिद्ध हुआ। इसमें पहाड़ी के साथ सटा हुआ हारीती का मंदिर प्रकट हुआ। मंदिर में पहुंचने के लिये एक चौपहल चारदीवारी (54 फुट 6 इंच × 45 फुट) में से होकर पहाड़ी पर जाना पड़ता था। इस चारदीवारी के दक्षिण-पश्चिमी कोने में पत्थर का मंच था जिस पर बैठ कर दर्शक अपने पांव धोते थे। मलिन जल के निकास के लिये पास ही एक नाली बनी थी। चौपहल क्षेत्र के ठीक मध्य में पत्थर के स्तम्भ-शीर्षक की चौकी पड़ी थी। पत्थर के मंचों में से एक पर त्रिरत्न और धनुषबाण अंकित थे। एक ओर मंच पर 'कामसर' (कामदेव का बाण) शब्द खुदा था। मंदिर में पहुंचने के लिये एक ऊंचा सोपानमार्ग इस विशाल चारदीवारी में से शुरू होकर पहाड़ी की चोटी की ओर जाता था। मंदिर के दोनों पार्श्वों में दो बड़े कमरे थे और गर्भगृह के अंदर हारीती की खंडित मूर्ति थी जो दोनों टांगें नीचे लटका कर बैठी थी। मूर्ति की कलाशैली से मंदिर चौथी या पांचवीं शती ईसवी का प्रतीत होता था। इसी क्षेत्र में एक लेख वाला स्तम्भ भी था जिस पर अंकित था कि यहां किसी उत्सव के उपलक्ष्य में एक अखंड-दीप (अखय-निवि) की स्थापना की गई थी। हारीती-मंदिर के सामने हाथी-दांत की चूड़ियों की बहुत बड़ी संख्या पाई गई।

हारीती के मंदिर के पीछे एक और बड़ा मंदिर था जिसकी रचनाशैली में दो कालों का आभास होता था। ये दोनों काल इक्ष्वाकुवंश के राजाओं के बाद के थे। पहले काल में केवल गर्भगृह ही बनाया गया जिसके पास अभिषेक जल के निकास के लिये एक नाली थी। उत्तरकाल में यह मंदिर बंद कर दिया गया और पूर्व की ओर मंडप बना कर उसके सामने सोपानमार्ग का निर्माण किया। पहले मंदिर और मूर्ति पश्चिमाभिमुख थे अब दोनों पूर्वाभिमुख हो गये। पहले मंदिर के चारों ओर एक प्रदक्षिणापथ था जिसमें बाहर की ओर बने हुए ताकों में मूर्तियां रखी थीं।

खात 5—में 27 फुट व्यास का एक चक्राकार महाचैत्य प्रकाश में आया (देखिए फलक 17ख)। इसमें चार आरें बनी थीं जो वृत्ताकार धुरे पर मिलती थीं। यह एक पूर्वकालीन चैत्य के ध्वंस पर बना था एक पत्थर का खंभा जो निकट में मिला उस पर खुदे लेख में किसी श्रमण के द्वारा समस्त ब्राह्मणों के कल्याण के लिये दान की चर्चा थी। श्रमण को 'कुलपुत्र' विशेषण से निर्दिष्ट किया था जिससे पता लगता था कि वह ऊंचे कुल में पैदा हुआ था।

पूर्वोक्त खातों में संग्रह भांड, भोजन रखने के बर्तन, धार्मिक क्रिया संबंधी बर्तन और भिक्षापात्र आदि भिक्षुओं के उपयोग की वस्तुएं मिली थीं। एक बर्तन में टोंटी के स्थान पर स्त्री मूर्ति बनी थी। बर्तनों पर बने अलंकरण-अभिप्रायों में स्वस्तिक, सर्पिल, तिरछे चिह्न आदि समाविष्ट थे।

तिलदह, जिला मिदनापुर

इस गांव के समीप चांदपुर के टीले में कलकत्ता विश्वविद्यालय की ओर से श्री कुंज गोविन्द गोस्वामी ने इस वर्ष खुदाई कराई। इसमें दो काल की ईंटों की इमारतें मिलीं। पहले काल की इमारतें गुप्त समय की थीं। खुदाई थोड़े पैमाने पर और संकुचित थी इस लिये वास्तुओं के यथार्थ स्वरूप का पता नहीं लग सका। उत्खात वास्तुओं में मिट्टी के बर्तनों के अतिरिक्त बहुत से मिट्टी के खिलौने भी मिले। ये सब गुप्तकाल और उसके बाद के थे। प्राक्-गुप्तकाल की वस्तुओं में एक मिट्टी की मूर्ति है जिसकी वेशभूषा में कुषाणकला-शैली की झलक मिलती है। एक एन० बी० पी० कुम्भखंड भी था।

कोट्टुरू, जिला विशाखापटनम्

दक्षिण-पूर्वी मंडल की ओर से श्री आर० सी० कर ने कोट्टुरू गांव के पास पांच टीलों में से एक टीले में खुदाई कराई। यह स्थान पंचदर्ला पहाड़ी की दक्षिणी ढलवान में शारदा नदी के दाएं तट पर स्थित है। यहां दो काल की इमारतों के ध्वंस दिखाई पड़े। दूसरे काल की इमारतें बड़े आकार की खंडित ईंटों की बनी थीं और एक बौद्ध विहार का अंग थीं। टीले के उत्तरी अन्त पर प्राचीनतर ध्वंसों के अवशेषों की झलक भी मिली। बर्तन अधिकांश हल्के लाल रंग के थे परन्तु इनमें चमकीले लाल और सलेटी ठीकरे भी पाए गये।

सीरपुर, जिला रायपुर

सागर विश्वविद्यालय के प्रोत्साहन और मध्य प्रदेश सरकार की आर्थिक सहायता से डाक्टर मोरेश्वर दीक्षित ने प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर से एक मील के अंतर पर स्थित दो ऊंचे टीलों का खनन कराया। एक टीले में दो विशाल बौद्ध विहारों के अवशेष

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिले जो एक-दूसरे के पास बने थे। इन्हें यथाक्रम मुख्यमंदिर और 'निचला विहार' नामों से निर्दिष्ट किया गया है। दूसरे टीले में कई एक छोटे-छोटे वास्तुओं के ध्वंस पाए गये जिनमें विहार भी समाविष्ट थे।

मुख्य मंदिर भस्थिति में आयताकार था। उत्तर में ड्योढ़ी के आगे एक जटिल अलकरणों वाला प्रवेशद्वार बना था जिसके दोनों पार्श्वों में ऊंचे पद के द्वारपाल और यक्षमूर्तियां थीं। यह वास्तु मंदिर और विहार का मिश्रण था। ड्योढ़ी, सोलह खंभों पर आश्रित सभामंडप और गर्भगृह से वह मंदिर प्रतीत होता था, परन्तु सहन के चारों ओर कोठरियों की पांतियों से विहार दिखाई देता था। गर्भगृह में भूमि-स्पर्श मुद्रा में सिंहासन पर आसीन बुद्ध की 6½ फुट ऊंची मूर्ति थी। बुद्ध के दाईं ओर पद्मपाणि की आदमकद मूर्ति थी। मंदिर का द्वार गंगा की मूर्ति से अलंकृत था। एक लेख के अनुसार इस वास्तु को बालार्जुन के शासन काल में आठवीं सदी के पहले पाद में आनन्दप्रभु भिक्षु ने बनवाया था। विहार दो सौ वर्ष तक व्यवहार में आता रहा। इसके अनन्तर यह शैवों के अधिकार में आ गया जिन्होंने इसमें व्यापक संवर्धन और परिवर्तन किये। आखिर ग्यारहवीं सदी के अन्त में यह विहार उजाड़ हो गया।

यहां से उत्खात वस्तुएं विविध आकार और शैली की थीं। लोग कृषि, बर्तन बनाना, सोने-चांदी के भूषण तैयार करना आदि कई प्रकार के कारोबार करते थे। खुदाई में इनके हथियार और औजार मिले हैं। बहुत-सी कांसे की मूर्तियां स्थानीय कारीगरों की बनाई थीं। इनमें एक बुद्ध की मूर्ति है। इस पर सोने के पत्त चढ़े थे और आंखों में चांदी जड़ी थी। प्राकृतिक रंग के अनुकरण में ओठों पर ताम्रपत्र लगे थे। मधूच्चिष्ट विधि से बनी हुई कई एक कांस्य मूर्तियों के खोखले शरीरों में अभी तक रेत चिमट रही थी। इस खुदाई में जो कांस्य मूर्तियां पाई गई और सीरपुर में जो पहले कांस्यवस्तुओं के कोश मिले उनके आधार पर निस्सन्देह कहा जा सकता है कि प्राचीन काल में सीरपुर कांस्य मूर्तियां बनाने में अपनी शैली का एक स्वतन्त्र केन्द्र था। इस शैली पर गुप्त कला शैली का प्रभाव पड़ा था। यह बात भी उल्लेखनीय है कि यहां तांबे का एक वृत्ताकार पट्ट मिला जिस पर बुद्ध धर्म के विषय का एक लेख अंकित था।

दूसरे टीले में जो तीन विहार मिले वे भी चौपहल थे। इनमें से हरएक के मध्य में एक सभामंडप और कोठरियां थीं जिनमें से एक मंदिर का काम देती थी। सहन में पत्थर की शिलाओं का फर्श था। दीवारें ईंटों की परन्तु नींव पत्थरों की थी। सहन अथवा मंडप में भिक्षुओं के उपयोग के लिये एक बड़ा जलघट धरा होता था। एक विहार भिक्षुणियों के रहने के लिये था। इसका समर्थन वहां से उपलब्ध शंख और शीशे की चूड़ियों से होता है। एक ज़मींदोज़ कोठरी के अधिष्ठान में उत्तम विधि से कोरा हुआ लघुकाय स्फटिक का स्तूप और स्वर्णद्रवित एक वज्र पाया गया था। सहन में बौद्ध मंत्र से अंकित बहुत-सी मुद्राएं उपलब्ध हुई थीं।

उत्तरकाल में ये विहार शैव लोगों के अधिकार में आए। इसका समर्थन वहां से उत्खात गणेश, महिषमर्दिनी, शिव-पार्वती आदि की मूर्तियों से होता है। मिट्टी के बर्तन लाल-कुम्भकला के थे। अधिकांश दैनिक व्यवहार के उपयोगी थे जिनकी बनावट में किसी प्रकार का आडंबर नहीं था।

करिआन, जिला दरभंगा

यह स्थान दार्शनिक उदयनाचार्य की जन्मभूमि माना जाता है। के० पी० जयस्वाल रिसर्च इंस्टिट्यूट पटना ने परीक्षार्थ जो खनन यहां कराया उसमें तीन काल (ई० 900–1800 तक) की बस्तियों के अवशेष दृष्टिगोचर हुए। इस स्थान को बागमती नदी की बाढ़ों से बहुत हानि पहुंची थी। मनके, मिट्टी के खिलौने, लोहे और तांबे की वस्तुएं आदि छोटी चीज़ों के अतिरिक्त यहां विशेष महत्त्व की कोई वस्तु नहीं मिली।

भटिंडा किला

भटिंडा की नगरपालिका ने किले के अंदर एक ऊंचे स ान पर जलकुंड (water reservoir) बनाने के लिये पुरातत्त्व विभाग की अनुमति मांगी। अनुमति देने के पहले इस स्थान की प्राचीनता का पता लगाने के लिये विभाग न यहां खुदाई कराना आवश्यक समझा। एक खात सतह ज़मीन से 50 फुट की गहराई तक खोदा गया, फिर भी प्राकृतिक भूतल तक नहीं पहुंचा जा सका। खुदाई में जो मिट्टी के बर्तन मिले उनके आधार पर इसकी तिथि प्रारम्भिक मध्यकाल (12वीं–13वीं सदियाँ) नियत की गयी। नीचे की तहों में एक कच्ची ईंटों की दीवार मिली जिसकी मजबूती के लिए पकी ईंटों की पुश्ता दीवार बनाई गई थी। कच्ची ईंटों की ीवार 37 फुट की गहराई तक खोदी गई परन्तु इसकी नींव का पता नहीं लग सका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय 3

भारतीय पुरातत्त्व

(1955-56)

साधारण परिचय

इस वर्ष भारत के विस्तृत क्षेत्रों का व्यापक अनुसन्धान और बहुत से प्राचीन स्थलों का खनन किया गया। मध्य भारत के पठार और दक्षिण भारत के पश्चिमी भाग में प्रस्तर-युग के उपकरण पाए गये। कालभेद तथा शैलीभेद के कारण ये उपकरण चार वर्गों में बांटे जा सकते हैं। वर्ग 1 और वर्ग 2 क्रमशः नीचे ऊपर के स्तरों से प्राप्त पुराण--प्रस्तरयुगीन हथियारों के द्योतक हैं और वर्ग 3 में सूक्ष्माश्म उपकरण समाविष्ट हैं।

लोथल तथा रंगपुर के टीले भारतीय पुरातत्त्व में विशेष महत्त्व रखते हैं। इनसे पता लगता है कि दक्षिण दिशा में हड़प्पा-संस्कृति का प्रसार कहाँ तक हुआ। इन टीलों में इस वर्ष फिर खुदाई की गयी जिसके फलस्वरूप पत्थर और मिट्टी की मुद्राएं, मुद्राछापें और अन्य वस्तुएं हस्तगत हुई। इस संस्कृति के और कई टीले सौराष्ट्र तथा बम्बई राज्य के उत्तरी भागों में उपलब्ध हुए।

गोदावरी के तट पर स्थित नेवासा और चम्बल पर स्थित नागदा के टीलों में मध्य भारत की ताम्रयुगीन संस्कृति का उद्घाटन हुआ। नेवासा में ताम्र-प्रस्तरयुग के लोगों की शव-विसर्जन विधि के सम्बन्ध में कई और बातें प्रकाश में आई। इस संस्कृति की उत्तरी सीमा पर स्थित नागदा में अनेक प्रकार के चित्रित बर्तन और उनके समकालीन कच्ची ईंटों के वास्तु पाए गये। उदयपुर के पास आहाड़ के टीले में नई खुदाई से पता लगा कि काली-और-लाल कुम्भकला दीर्घकाल तक जीवित रही। इस कलाशैली के बर्तन भिन्न-भिन्न प्रान्तों में भिन्न-भिन्न साहचर्य में पाए गये। इस समय कुम्भकलाओं की विविध शैलियों के गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है।

नेवासा और नागदा के टीलों में प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल के स्तर भी मिले। उज्जैन (प्राचीन उज्जयिनी) की खुदाई से पता चला कि इस शहर की नींव एन० बी० पी० के आविर्भाव से कुछ पहले रखी गयी थी। कन्नौज में इस कुम्भकला की तह बहुत क्षीण थी परन्तु नीचे की तहों में 'पेंटेड ग्रे वेयर' और उससे सम्बन्धित दूसरे प्रकार के बर्तन मौजूद थे। पाटलिपुत्र में खुदाई के लिये जो थोड़ी-सी जगह मिली उसमें उस क्षेत्र की स्तर-रचना के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण परिचय मिला। मध्यकालीन गंगैकोंडचोलपुरम् और तंजौर के समन्तात् प्राकार शृंखलाओं का पता लगाया गया।

दक्षिण अरकाट और तंजौर के जिलों में दक्षिण भारत की महाश्म-संस्कृति के परिवार की शव-भांड-कब्रों के नये क्षेत्र खोजे गये। महाश्म कब्रों के भिन्न-भिन्न रूपों की आलोचना के लिये चिंगलपुट जिले के कुन्नत्तुर स्थान में विविध रूपों की प्रतीक तीन कब्रें खोदी गईं।

कौशाम्बी में घोषिताराम विहार क्षेत्र में खुदाई समाप्त कर दी गई। इस क्षेत्र में वास्तुओं की परीक्षा से उत्तरोत्तर सोलह आवादियों के लक्षण प्रत्यक्ष हुए जिससे अनुमान लगाया गया कि इस विहार का जीवन काल एक हजार वर्ष लंबा था। नागार्जुनकोंडा में उत्खनन के फलस्वरूप और बहुत से बौद्धवास्तु, उनसे सम्बन्धित शिलालेख और अन्य वस्तुएं प्रकाश में आई। एक ऊंचा भव्य सोपान मार्ग जिस पर से नदी के तट पर पहुंचा जाता था, खोदा गया। सीरपुर में असाधारण रचना शैली के दो और विहार देखने में आए।

फुटकर अनुसन्धान से ज़िला बीजापुर में नंदिकेश्वर, कृष्णा पर नागार्जुनकोंडा, मैसूर में वनसंद्रा, मालवा में मंदसोर और राजस्थान में चित्तौड़ के स्थानों में तथा पूना के पास कई स्थानों में पुराण प्रस्तरयुग के हथियार मिले। नीलगिरि, दोहर (पंचमहल जिला), कब्रा पहाड़ (मध्य प्रदेश), चंबल की घाटी, झालरापाटन, बेराच और गम्भीरी की तलहटियों (राजस्थान) तथा कच्छ में सूक्ष्माश्म उपकरण पाए गये। पश्चिमी बंगाल में स्कंधयुक्त (Shouldered) चिपटा कुल्हाड़ा, और चंबल की तलहटी में ताम्र-प्रस्तरयुगीन लाल बर्तन मिले। उत्तर प्रदेश में 'पेंटड ग्रे वेयर' और एन० बी० पी० कुम्भकलाओं वाले स्थान प्रकाश में आए। एन० बी० पी० शैली के कुम्भखण्ड बिहार और पश्चिमी बंगाल के दो टीलों में पाए गये। बस्ती में अशोक के "स्तम्भ शीर्षक" की चौकी मिली और भाजा तथा अजन्ता के स्थानों में नयी फाओं की खोज की गई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिपि-अनुसंधान

सोपारा में अशोक का नौवां शिलालेख खंडित दशा में मिला। पहले यहां अशोक का आठवां शिलालेख मिल चुका था। भाजा की एक गुफा में उपलब्ध लेख से पता लगा कि यह गुफा ई० पू० दूसरी शती में खोदी गयी थी। नये शिलालेखों से अपने समय के कई प्रसिद्ध व्यक्तियों के नामों का परिचय मिला। इनमें प्राच्य भारत का दूसरी शती का शासक आर्यविशाखमित्र, और पांचवीं सदी में दक्षिण-पूर्वी भारत का एक मंडलाधीश शत्रुदमन उल्लेखनीय हैं। एक लेख से पता लगा है कि उत्तरी बंगाल के एक राजा ने दूरस्थ आंध्रदेश के एल्लेश्वरम् तीर्थ का दर्शन किया था। भारत कला भवन के संग्रहालय में रखे हुए ताम्रपट्टों से तीन अज्ञात चंदेल रानियों के नामों का पता लगा। उड़ीसा के गजपति वंश के शासकों के दो शिलालेखों से इस वंश के राजाओं की प्रारम्भिक वंशावली का परिचय मिला।

अरबी फारसी लेख--उत्तरी बिहार से प्राप्त एक फारसी लेख में कैकौस नाम दिल्ली के सुलतान का नाम है जो दिल्ली के इतिहास में कहीं नहीं मिलता। मुहम्मद-बिन-तुगलक के एक लेख से सिद्ध होता है कि अलाउद्दीन खिलजी के द्वारा जीता जाने के बाद भी चित्तौड़ दिल्ली के सुलतानों के अधिकार में रहा। बिहार शरीफ से प्राप्त एक लेख से मालूम होता है कि अन्तिम तुगलक सुलतान का सिक्का पूर्वी भारत में उस समय भी माना जा रहा था जब दिल्ली में उसकी सत्ता लड़खड़ा रही थी। बिहार से उपलब्ध एक और लेख में लोदियों के द्वारा इस प्रान्त की विजय का उल्लेख है। बिहार के भिन्न-भिन्न स्थानों से प्राप्त पांच लेखों से पता लगता है कि बंगाल के सुलतान बिहार पर भी अपना अधिकार जमाए हुए थे। हिंडौन के एक लेख से बयाना के औहदी शासकों की वंशावली में संशोधन करने की सामग्री मिली है।

संरक्षण

जंगल की सफाई आदि साधारण संरक्षण के उपायों के अतिरिक्त समस्त भारत में स्मारकों का महत्त्वपूर्ण जीर्णोद्धार किया गया है। ऐसे स्मारकों में निम्ननिर्दिष्ट उल्लेखनीय हैं:--अब्दुर्रहीम खाने खानां का मकबरा, दिल्ली की जामा मस्जिद, कालसी के पास जगत्ग्राम में अश्वमेध--क्षेत्र, बड़ानगर में चार बंगला मंदिरों का समूह, शिवसागर में शिवडोल मंदिर, कोर्णाक का सूर्य-मंदिर, कांबदूर में मल्लिकार्जुन मंदिर, कुर्नूल में कोंडरेड्डि--बुर्ज, गोलकुंडा किले के स्मारक, कांचीपुरम् में इरावतनेश्वर मंदिर, गंगैकोंडचोलपुरम् और तंजौर के बृहदीश्वर मंदिर, बंगलौर में टीपू सुलतान का महल, श्रृंगेरी में विद्याशंकर का मंदिर, श्रीरंगपटनम् के स्मारक, अंजता एलोरा, पीतलखोरा, कार्ले और कन्हेरी की गुफाएं, चम्पानेर की जामा मस्जिद, जूनागढ़ का शिलालेख, चित्तौड़ के स्मारक, और बाडोली के मंदिरों का समूह

स्मारकों और भित्तिचित्रों का रासायनिक उपचार अच्छी प्रगति कर रहा है। निरन्तर अनुभव और प्रयोगों के फलस्वरूप भित्ति-चित्रों और स्मारकों के सौंदर्य को नष्ट करने वाले धुएं के धब्बों तथा अन्य दोषों को दूर करने के उपाय खोज लिये गये हैं और व्यापक रूप से व्यवहार में आ रहे हैं। विश्लेषण विधि से कई भांति की मिट्टियों तथा कुम्भकलाओं का परीक्षण किया जा रहा है।

24 मई, 1956 को भारत बुद्ध-परिनिर्वाण की 2500वीं जयन्ती का महोत्सव मना रहा है। इसके उपलक्ष में श्रावस्ती, संकिसा, सारनाथ, कुशीनगर, नालंदा, राजगिर और सांची के स्मारकों का विशेष सुधार किया जा रहा है। सारनाथ और नालंदा के संग्रहालयों का नया कायाकल्प हो रहा है।

इस अवसर पर पुरातत्त्व के सहयोग से बौद्धकला की एक विराट प्रदर्शनी का आयोजन करने के लिये भारत सरकार ने ललित कला अकादमी को तैयार किया। सरकार के आमंत्रण पर इस प्रदर्शनी के लिये अपनी कलाकृतियां भेजने तथा इसमें पूर्ण सहयोग देने के लिये बहुत से बाहर के देशों और भारत के प्रसिद्ध संग्रहालयों ने अपनी अनुमति दे दी। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन नवम्बर 1956 में दिल्ली में हुआ और इसके अनन्तर इसे क्रमशः बनारस, पटना, कलकत्ता, मद्रास और बम्बई में भी दिखाया जाएगा।

अनुसंधान और खुदाई

अनुसंधान-इलाहाबाद के विश्वविद्यालय की ओर से श्री गोवर्धनराय शर्मा ने उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में महत्त्वपूर्ण अनुसंधान किया। कौशाम्बी से 14 मील पूर्व में बरियारी के मुकाम पर एक विस्तृत प्रस्तरयुगीन क्षेत्र मिला। यहां तल 1 में मदरास शैली की द्विमुखी दस्त-कारी के हथ-कुल्हाड़े, फाड़ने और खुरचने के हथियार तथा कत्तलें और पिण्ड (cores) पाए गये। तल 2 में अधिकांश ऊपर के तल 1 के गिरे हुए उपकरण थे। इनके अलावा 'लेवेलाइस (Levallois) विधि से घड़ी हुई कत्तलें और कत्तलों के बने उपकरण थे। तल 3 के उपकरणों में केवल सूक्ष्माश्म शैली के उपकरण जिनमें काटने, फाड़ने और छेदने के साधन समाविष्ट थे, मिले। इन शस्त्रोपकरणों के साथ कोई कुम्भखंड नहीं पाए गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विंध्याचल के मूल में कार्वी तहसील के सिद्धपुर स्थान के पास सूक्ष्माश्म हस्तकृतियों का एक स्थान उपलब्ध हुआ । तमाम टीले पर सूक्ष्माश्म बिखरे पड़े थे । बारिश से कटी हुई टीले की गहरी दरारों में ये उपकरण पाए गये । इन औज़ारों में दोधारे काटने और खुरचने के फल, समलम्ब, तीरों के फल आदि समाविष्ट थे । इनमें हड्डी और सींग के औजारों की मिलावट का भी संदेह होता था । इन शस्त्रोपकरणों की काल-परम्परा तथा शैलियों के विकास का ज्ञान इस स्थान पर खुदाई करने से ही हो सकता है ।

कार्वी से आठ मील की परिधि में स्थित खोह, अगरहुंडा, मर्जादपुरा और चकोंद आदि स्थानों से ब्रह्मगिरि और संगनकल्लु की शैली के पालिश किये हुए चिपटे हथ-कुल्हाड़े पाए गये ।

गोदावरी और प्रवरा की घाटियाँ

'डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट' पूना के अध्यक्ष डा० संकालिया और डाक्टर दश्रो ने गोदावरी और प्रवरा की घाटियों में अनुसंधान जारी रखा । इस क्षेत्र की स्तर-रचना में नीचे की तहों में दो कंकरीले स्तर थे । इनके ऊपर क्रमशः भूरे रंग की मिट्टी, काली मिट्टी और उत्तरकालीन बस्तियों की तहें थीं । टीलों की सितह पर जो औज़ार मिले वे दो प्रकार के थे--(1) हथ-कुल्हाड़े, विदारक, कत्तलें, हथोड़े आदि । (2) छोटी कत्तलों के बने हुए काटने, खुरचने और छेदने के साधन आदि ।

अकोला से लेकर संगम तक एक सौ मील लंबे प्रवरा के तटस्थ क्षेत्र के अनुसन्धान से कई एक प्रस्तरयुगीन स्थानों का पता लगा । इनमें से कई स्थानों में पूर्वोक्त दोनों भांति के और कई में केवल एक ही भांति के शस्त्रोपकरण मिले । नेवासा से नौ मील संगम के स्थान पर अशेषतः अश्मसात् लकड़ी का खंड प्राचीनतर कंकरीली तह में मिला जो दक्षिण में शायद इस भांति की पहली उपलब्धि है । गोदावरी की घाटी में नेवासा से बीस मील की परिधि के अंदर तीन स्थानों में दोनों भांति के शस्त्रोपकरण मिले । इनके अतिरिक्त इन स्थानों में पशुओं की अश्मसात् हड्डियां पाई गईं । इनमें काले-गाँव स्थान पर जंगली भैंसें (Bison) या उसके समानरूप किसी पशु का सिर था ।

बम्बई-कर्नाटक क्षेत्र

श्री एस० एस० मलवाद और डा० संकालिया की अध्यक्षता में 'कन्नाड रिसर्च इंस्टिट्यूट' की ओर से किये अनुसन्धान के फलस्वरूप कई एक प्रस्तरयुगीन स्थान प्रकाश में आए जिनमें तीनों भांति (वर्ग 1, वर्ग 2 और वर्ग 3) के शस्त्रोपकरण पाए गये । इनके अतिरिक्त एक बड़ी कंदरा तथा अनिश्चित काल के कुछ और स्थान भी दृष्टिगोचर हुए । कंदरा की फर्श वाली तह में प्रस्तरयुगीन मनुष्य के निवास के चिह्न थे ।

वर्ग 1 (Series I) के प्रस्तरयुगीन साधनों में हथ-कुल्हाड़े, फाड़ने के औज़ार, बड़ी कत्तलें, एवं कणाश्म और बलुए पत्थरों के अंडाकार हथियार थे । वर्ग 2 (Series II) में 'लेवेलाइस' विधि के बने हुए फ्लेक, चर्ट (चकमक) के बने काटने, फाड़ने, छेदने और खुरचने के साधन समाविष्ट थे और वर्ग 3 (Series III) में चर्ट के सूक्ष्माश्म उपकरण थे ।

शिदलफडि के स्थान पर 52 फुट × 48 फुट × 15 फुट आयाम की एक गुफा में आदिम सभ्यता के प्रमाणभूत सूक्ष्माश्म और कुम्भखंड पाए गए । इस गुफा के पिछवाड़े में दरियों (rock-shelters) का एक समूह था । गुफा के अंदर पड़ी हुई कुछ चट्टानों पर बैल जैसे पशु और एक तलवार उत्कीर्ण थी । गुफा की दीवार में कुछ लेख थे जो लिपि शैली के आधार पर पांचवीं-छठी सदियों के बीच के मालूम होते थे । प्रतीत होता था कि इस गुफा में प्रस्तरयुग से लेकर चालुक्य काल तक मनुष्य निवास करता रहा ।

उत्खनन

लोथल, जिला अहमदाबाद

पिछले वर्ष इस स्थान पर कच्ची ईंटों का एक चौतरा और प्राकार अंशतः उद्धाटित किये गये थे । इनके प्रयोजन और प्राचीन बस्तियों के साथ इनके सम्बन्ध की खोज करने के लिये पश्चिमी मंडल ने इस वर्ष यहां फिर खुदाई कराई । इसमें तीन काल के अवशेष मिले जिन्हें यथाक्रम पूर्व-प्राकारकाल, प्राकारकाल और उत्तर-प्राकारकाल के अवशेष कह सकते हैं । तीनों कालों की संस्कृति एक ही हड़प्पा-संस्कृति थी ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्व-प्राकारकाल की बस्ती को भोगाओ और साबरमती की बाढ़ों से बहुत हानि पहुंची जिसका समर्थन इस गहराई पर जमी हुई कीच की तह से होता है। बाढ़ों से बचने के लिये लोगों ने कच्ची ईंटों का एक ठोस विशाल चबूतरा बनाया और उस पर अपने घरों का निर्माण किया। बाद के अनुभव से शिक्षा पाकर उन्होंने इस चबूतरे को और ऊंचा उठाया और इसकी मजबूती के लिये एक कच्चे प्राकार का निर्माण किया। यहां से प्राकारकाल का आरम्भ हुआ। प्राकार 35 फुट चौड़ा और 8 फुट के लगभग ऊंचा था और बाढ़ों की रोकथाम के लिये बनाया गया था। इसका पता उन स्थानों से लगता है जहाँ बाढ़ के पानी ने इसे काट दिया था और जहां लोगों ने समय-समय पर इसका पुननिर्माण किया था। इसऊंचाई पर बाढ़ के पानी से जमी हुई कीच और मलबे की तह से भी इस तथ्य का समर्थन होता था। बाढ़ों को रोकने का अंतिम प्रयत्न यह था कि चबूतरे के उत्तरी मुहार पर ईंटें जड़ी गई और एक स्थान पर जहां बाढ़ ने प्राकार को काट दिया था वहां ईंटों की एक सुदृढ़ अवष्टम्भक दीवार बना कर प्राकार को अभेद्य बना दिया गया। मालूम होता था कि इसके अनन्तर बाढ़ों के कारण प्राकार को कोई क्षति नहीं पहुंची।

बस्ती के बाहर प्राकार के समीपवर्ती टीले में एक बड़ी इमारत के ध्वंस प्रकाश में आए। क्षेत्रफल में यह इमारत 24 फुट × 45 फुट × 4 फुट थी। इसके अंदर कच्ची ईंटों के बारह आयताकार ठोस चौतरे (ब्लाक) बने थे। चौतरों के बीच 3 फुट × 3 इंच से 3 फुट × 9 इंच चौड़ी और 45 से 54 फुट तक लंबी नालियां बनी थीं जो एक-दूसरी को काटती हुई शतरंज की पटिया जैसा नक्शा बनाती थीं (फलक 18) फर्श पर कच्ची ईंटें लगी थीं और दीवारें मिट्टी के लेप से ढकी थीं। इस वास्तु की रचना में निर्माण कालों का आभास होता था। पहले काल की इमारत पूर्वोक्त पीठ के दूसरे रूप के समकालीन थी। दूसरे काल की रचना प्राकार काल के बाद की थी। इस इमारत का फर्श आग के सेक से जलकर लाल हो गया था। नालियों में राख और कोयला बहुत मात्रा में मिला। सम्भव है कि यह अवशेष किसी बड़े भट्टे के थे जिसमें मिट्टी की तिकोन टिकड़ियां (trangular tablets), गोफन के गोले आदि पदार्थ बड़े पैमाने पर पकाए जाते थे। एक सौ के करीब मिट्टी की मुद्राछापें जिन पर सरकंडों और अंगुलियों के निशान बने थे नालियों में पाई गई थीं। पकी ईंटों की बनी हुई एक ऐसी ही नाली मोहेंजोदड़ो में बृहत् स्नान कुंड के दक्षिण पश्चिम में पाई गई थी।

अन्य भग्नावशेषों में एक इमारत 16 फुट × 12 फुट क्षेत्र की थी। जिसमें स्नान करने का नाली सहित फर्श और रसोई बनी थी। रसोई की नाली के अन्त पर मलिन जल के निकास के लिये कुंड था। एक खात में दो भांड मिले, जिनमें ध्वस्तप्रायः हड्डियां, मृद्चषक गिलास रखे थे। एक और खात में तीसरा शवभांड मिला, जिसके चारों ओर ईंटें लगी थीं और मुंह पत्थर से ढका था। इसमें से भी खंडित अस्थियां और अकीक का एक मनका प्राप्त हुआ।

मिट्टी के बर्तन मोटे, मजबूत अच्छे पके हुए और चिकनी मिट्टी के बने थे। मटियाले और लाल रंग के बर्तन एक संग मिलते थे। बहुत से ठीकरों पर पड़ी पट्टियां, लहरिया रेखाएं, पत्ते आदि विविध ज्यामितीय तथा दूसरे अभिप्राय बने थे।

उत्खात वस्तुओं में निम्नलिखित वर्णनीय हैं 2 खड़िया पत्थर की मुद्राएं (फलक 19) 3 मिट्टी की मुद्राएं और 107 मिट्टी की मुद्राछापें जिन पर हाथी, शृंगी, बैल और सिंधुलिपि के चित्राक्षर बने थे, पाई गई। इनके अतिरिक्त मिट्टी की पशु--मूर्तियां, बैल गाड़ियां, चौसर के मोहरे, मनके, कंगन, मछलियां पकड़ने के कांटे, सूईयां, तीर के फल, पत्थर के विविध मनके आदि, चकमक के सूक्ष्माश्म, हड्डी की कलमें और शंतरंज के मोहरे, पत्थर के तोल, शंख के भूषण आदि वस्तुएं भी थीं।

सौराष्ट्र में हड़प्पा-संस्कृति के अन्य स्थानों की खुदाई--पुरातत्त्व विभाग तथा बड़ौदा विश्वविद्यालय के सहयोग से तीन टीलों में खुदाई की गई। इस खुदाई का उद्देश्य सम्भवतः सौराष्ट्र में संस्कृति परम्परा (Cultural Sequence) का, और विशेषतः इस प्रान्त में हड़प्पा-संस्कृति के यथार्थ रूप का जानना था।

लखाबावल, जिला हलार

यह स्थान जामनगर से 9 मील उत्तर में है। इस जिले में उपलब्ध हड़प्पा-संस्कृति के छोटे-छोटे 14 खंडहरों में से यह एक है। खुदाई से यहां भिन्न भिन्न-तीन काल की बस्तियां देखने में आईं। पहली बस्ती के स्तर में रंगपुर के काल 1 के समान मोटे बर्तनों के खंड मिले। इन में मटियाले पोते वाले हरे ठीकरे भी थे। दूसरी बस्ती के स्तर में पालिश किये हुए लाल बर्तन थे और चित्रित कृष्णलोहित कुम्भ--कला के अवशेष भी मिले। चित्रित बर्तनों में तंग गले और चौड़े मुंह वाला एक असाधारण बर्तन था। इस पर 'जाल' अभिप्राय बने थे। सोने का भूषण, जिस पर बहुत सुन्दर कारचोबी का काम किया हुआ था, इस काल की कलाकृतियों में विशेष रूप से आकर्षक था। यह सिर अथवा कान का भूषण था। तीसरी बस्ती बहुत बाद की थी। इसमें अनघड़े पत्थरों की इमारतें और अन्तिम मध्यकालीन के सिक्के पाए गये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आम्रा, जिला हलार

यह छोटा सा टीला लखाबावल से तीन मील एक छोटी सी नदी के तट पर है। इसी में लखाबावल की तरह तीन बस्तियों के निशान पाए गये। पहले काल की बस्ती में हड़प्पा शैली के बर्तनों की बहुतायत थी।

सोमनाथ, जिला सोरठ

प्रभास पाटन से प्राय: दो मील दक्षिण-पूर्व में पांच जिलों का एक समूह है जिसे नगर कहते हैं। यह हिरण्य नदी के किनारे 3000 फुट की लंबाई में फैला है। इस स्थान पर जो खुदाई हुई उसमें उत्तरोत्तर पांच बस्तियों के अवशेष मिले। पहले काल की बस्ती में रंगपुर (काल 2) की चमकीली लाल कुम्भकला थी। इस पर बने चित्रों में जाल, बिंदु तथा पत्तियाँ, लहरिया रेखाएं, रेखापूर्ण तिकोन, आदि थे। सपीठ थाली उस समय के लोकप्रिय भांडों में थी। इसमें काली और लाल कुम्भकला के कुछ खंड मिश्रित थे, अन्य वर्णनीय वस्तुओं में दस हज़ार के करीब अतिसूक्ष्म खड़िया पत्थर के मनके जो एक बर्तन में इकट्ठे पड़े थे, तांबे का एक चपटा कुल्हाड़ा (Celt) और सूक्ष्माश्म उपकरण, थे। दूसरी बस्ती की विशिष्ट वस्तुओं में चमकीली लाल कुम्भकला थी जिस पर तेज लाल रंग का पोता चढ़ा था। यह पहले काल की कुम्भकला की अपेक्षा मोटी तथा कम अंलकृत थी। काले-और-लाल बर्तन अब भी साथ-साथ व्यवहार में आ रहे थे। तीसरी बस्ती के काल में उत्तम घुटी हुई काली-और-लाल कुम्भकला के बर्तनों की प्रधानता थी। इनमें कई प्रकार के प्याले और तश्तरियां, मध्य तथा दक्षिण भारत से प्राप्त भांण्डों से मिलती-जुलती थीं। चौथी काल की विशिष्टताओं में दो प्रकार की कुम्भकलाएं थीं एक सादी लाल और दूसरी कृष्णालोहित। पांचवें काल में अनघड़े पत्थरों के अनेक वास्तु पाए गये। इसकी विशिष्टता लाल ओपदार कुम्भकला थी। इस स्तर में दो हज़ार के लगभग तांबें और चांदी के गुप्त तथा वलभी वंश के राजाओं के सिक्कों से काल निर्धारण करने में बड़ी सहायता मिली।

नेवासा, जिला अहमदनगर

इस स्थान पर 'डेकन कालेज पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट पूना' की ओर से डा० संकालिया और डा० देओ ने इस वर्ष जो काम कराया उससे गोदावरी-प्रवरा की घाटी की संस्कृति-परम्परा का चित्र पूर्णांग हो गया। प्रस्तरयुगीन दो कालों के अतिरिक्त इस स्थान पर उत्तर काल की चार और बस्तियों के अवशेष पाए गये। इन बस्तियों में दुर्गनिर्माण का कोई प्रमाण नहीं मिला।

काल ३—

काल 3 और काल 2 की बस्तियों के बीच भूरी गोंद और काली मिट्टी की तहें मिलीं। काल 3 की प्रतीक संस्कृति नव-प्रस्तर और ताम्र-प्रस्तर युगों की मिश्रित संस्कृति थी। इस समय सूक्ष्माश्म उपकरणों, पत्थर के कुल्हाड़ों और तांबे तथा कांसे की वस्तुओं का व्यवहार होता था। साथ ही सचित्र और चित्रहीन बर्तन भी प्रयोग में आते थे। यद्यपि लोगों को तांबा मालूम था तथापि अधिकतर उपकरण पत्थर के ही बनाए जाते थे। सूक्ष्माश्म उपकरणों में समलंब, चौपहल, तिकोन, समधारी फल आदि समाविष्ट थे। इनके अतिरिक्त 400 से अधिक तपे हुए खड़िया पत्थर के मनके और गोफन के पत्थर थे। नव-प्रस्तरयुगीन वस्तुओं में ऐरन, हथोड़ा ओपदार कुल्हाड़े और बसुले विशेष उल्लेखनीय थे।

घरों की छत्ते गोल खंभों पर टिकी थीं और कंकर के बने फ़र्शों में चूने का पलस्तर, पक्की काली मिट्टी का प्रयोग होता था।

तत्कालीन लोगों में कई शव विसर्जन विधियां प्रचलित थीं। बड़ी आयु के मृतकों को पूरी लंबाई में या कुछ सिकुड़ी दशा में कब्रों में लिटाते थे या शवभांडों में डाल कर दबाते थे। मृत बच्चों की खंडित हड्डियों को मटकों में डालकर निम्न निर्दिष्ट विधि से भूमि में गाड़ते थे—(1) एक शवभांड में हड्डियां डाल कर इसे ढकने से ढक दिया जाता था। (2) दो शवभांडों में हड्डियां डालकर दोनों के मुंह जोड़ कर भांड़ों को कब्र में लंबाई में लिटा दिया जाता था। (3) दो भांडों में पूर्वोक्त विधि से ही, परन्तु भांडों को बजाय लंबा लिटाने के खड़ा रखा जाता था। (4) तीन शवभांडों में, दो भांडे पूर्वोक्त रीति से लंबे लिटाए जाते थे, और तीसरे भांडे का मुंह दो में से एक भांडे की टूटी पैंदी से जोड़ दिया जाता था। शिशुओं की केवल खोपड़ी और पसली की हड्डी ही शवभांड में डाली जाती थी। शवभांडों को प्राय: उत्तर-दक्षिण के रुख रखते थे। इनके साथ मिट्टी के बर्तन भी कब्र में गाड़े जाते थे जिनमें छोटे बड़े प्याले, खुले मुंह के टोंटीदार कूजे तथा अन्य कई प्रकार के बर्तन रखे जाते थे। तमाम बर्तनों पर लाल जिल्द पर काले ज्यामितीय अभिप्राय बने थे। अभिप्रायों में विशेष उल्लेखनीय मृग तथा दूसरे पशुओं की आकृतियाँ थीं। इनके अतिरिक्त मनुष्याकृतियाँ, पीपल की पत्तियाँ, टोकरीनुमा अंलकरण भी बर्तनों पर चिन्हित एवं कुरेदे हुए थे। हर शवभाण्ड पर एक विशेष चिन्ह अंकित था। इससे कुछ कम संख्या में एक भूरी-और-काली कुम्भकला थी। इस शैली के बर्तन अंशत: हाथ के बने होते थे और मुर्दा गाड़ने के लिये शवभांड के रूप में काम आते थे। इसके साथ ही

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चमकदार काले और स्थूल कुम्भखंड मिले, जिन पर पकाने के बाद लाल पोता चढ़ाया जाता अथवा चित्र बनाए जाते जो मलने से आसानी से उत्तर जाते थे।

ताम्र-प्रस्तरयुगीन बस्ती के बाद यह स्थान बहुत देर तक उजाड़ पड़ा रहा। इसका आभास 2 से 3 फुट मोटी काली तह से होता है जो सम्भवतः चौथी बस्ती के अस्तित्व में आने के पहले ताम्र-प्रस्तरयुगीन स्तर की ऊपर की तहों के गलसड़ जाने से बन गई थी।

काल 4–(प्रारम्भिक ऐतिहासिक या सातवाहन)

इस काल के स्तर में एन० बी० पी० के तीन ठीकरे, काली-और-लाल तथा मेगेराओं कुम्भकलाओं के अवशेष मिले जिनका काल डा० मार्टिमर व्हीलर की सम्मति में ई० पू० पहली शताब्दी है।

इस काल की इमारतें बड़ी ईंटों (1 फुट 11 इंच × 10 इंच × 3 इंच) की बनी थीं। छतों को संभालने के लिये लकड़ी के खंभे प्रयोग में आते थे। छत पर खपरलें लगाई जाती थीं और उनमें बने हुए छेदों में कील लगा कर छत को मज़बूत बनाया जाता था। दीवारें बिना नींव के उठाई गयी थीं। फर्श चूना और सन की तह जमा कर बनाए गये थे और कई पर पलस्तर भी था। एक धान्यकोष्ठ में जले हुए अनाज के ढेले पाए गये थे।

उत्खात छोटी वस्तुओं में पत्थर, मिट्टी और शीशे के मनके, शंख की चूड़ियां, मृन्मय मूर्तियां, शरीर से मैल उतारने के झांवे, पत्थर की चार टाँगों की सिलें और हाथीदांत की एक मुद्रा जिस पर त्रिरत्न, स्वस्तिक, मत्स्य मिथुन आदि बौद्ध अभिप्राय खुदे थे। सातवाहन राजाओं के समय के सीसा, तांबा आदि के बने 200 सिक्के मिले जिनसे इस काल का पता लगाने में सहायता मिली।

काल 5–(इंडो-रोमन)

इस काल की विशिष्टता रोमन कलाशैली के एम्फोरा बर्तन और ओपदार लाल कुम्भकला है। इनके साथ काली-और-लाल कुम्भकला के कुछ अवशेष भी मिले। इनके अतिरिक्त विचित्र शिरोवेष्टन तथा केशवेश वाली मिट्टी की मनुष्य मूर्तियां, नकली चेहरे (masks) आदि और कई वस्तुएं पाई गईं जिनसे पता लगा कि इस काल की संस्कृति पर विदेशी प्रभाव पड़ा था। अनाज पीसने की गोल चक्कियां भी मिलीं। लोहे की वस्तुओं में फावड़े, पीसने के साधन, तीरों के फल आदि थे। मकान ईंटों (1 फुट × 6 इंच × $2\frac{1}{2}$ इंच) के बने थे और पत्थर तथा काली मिट्टी की दृढ नींव पर रखे गए थे।

मलगर्त्त मिट्टी की चकिओं या फन्नी के आकार की ईंटों के बने थे। इनमें से कई एक में जले हुए गेहूँ तथा फलियों के बीज मिले।

छठे काल की बस्ती (मध्यकालीन) पांचवीं बस्ती के नष्ट हो जाने के बहुत देर बाद अस्तित्व में आई। यह काल नेवासा की अवनति का था। मकान अनघढ़े पत्थरों के बने थे। उपलब्ध वस्तुओं में रंगीन शीशे की चूड़ियां, और रोगन की हुई कुम्भकला पाई गई। शीशे की चूड़ियां बनाना स्थानीय लोगों का व्यवसाय था।

आहाड़, ज़िला उदयपुर

राजस्थान पुरातत्व विभाग की ओर से श्री रत्नचंद्र अग्रवाल ने इस स्थान पर इस वर्ष फिर खुदाई कराई। पिछले वर्ष की खुदाई में यहां तीन काल की आबादियों के लक्षण मिले थे। इस वर्ष की खुदाई का मुख्य उद्देश्य इन तीन आबादियों के सम्बन्ध में पूरा परिचय प्राप्त करना था।

काल–1 इस काल के स्तर में सूक्ष्माश्म, तांबे की वस्तुएं और एक विशेष लक्षण वाली काली-और-लाल कुम्भकला थी जिसके अंदर बाहर सफेद रेखाओं के विविध चित्र बने थे। एक भूरे रंग की कुम्भकला भी यहां मिली। इसके बर्तन सुन्दर पके हुए धात की-सी टंकार देते थे। छोटी वस्तुओं में अकीक के मनके वर्णनीय हैं। इनमें से कई एक पर मीनाकारी का काम हुआ था। मकान कच्ची ईंटों और पत्थर के टुकड़ों के बने थे।

काल 2–इस काल में बिंदुमय श्वेत रेखाओं से चित्रित काली और भूरी कुम्भकला व्यवहार में आती थी। इसके अलावा एक और लाल-पर-काली कुम्भकला के अवशेष भी मिले जो संख्या में पहली की अपेक्षा कम थे। इस वर्ष की खुदाई में तृतीय काल की बस्ती के कोई चिन्ह दृष्टिगोचर नहीं हुए।

आहाड़ के टीले में उत्तरी भारत की 'चित्रित धूसर कुम्भकला' यद्यपि ग़ायब थी तथापि प्रथम काल की काली-और-लाल कुम्भकला पर बने अभिप्राय 'चित्रित धूसर कुम्भकला' पर बने अभिप्रायों का स्मरण दिलाते हैं। चित्रित काली-और-लाल कुम्भकला के बर्तनों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रचुर संख्या जो इस काल के मोटे स्तर में सर्वत्र मिली, बतलाती है कि इस काल की संस्कृति की आयु बहुत लंबी थी। इस टीले की अन्तर्निहित संस्कृतियों का पूरा परिचय प्राप्त करने के लिये अभी अनुसंधान की आवश्यकता है।

नागदा, जिला उज्जैन

पुरातत्त्व विभाग की खनन-शाखा ने श्रीनील रत्न बैनर्जी की अध्यक्षता में इस खंडहर की खुदाई को फिर हाथ में लिया। खनन का उद्देश्य इस प्रान्त की संस्कृति-परम्परा का ज्ञान प्राप्त करना था और विशेषत: यह निर्धारण करना था कि मध्य तथा पश्चिमी भारत की ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति का नागदा की संस्कृति से कहां तक सम्बन्ध था।

चंबल नदी के पूर्वी तट पर स्थित यह टीला (फलक 20क) 90 फुट की ऊंचाई तक उठा है। इसमें केवल 32 फुट की गहराई तक मनुष्य-निवास के चिह्न मिले हैं। इसके नीचे प्राकृतिक चट्टान है। इस गहराई में उत्तरोत्तर तीन बस्तियों के अवशेष मिले। सब बस्तियों के वास्तुओं का विन्यास एक जैसा था जिससे पता लगता था कि तीनों बस्तियां बिना समय के व्यवधान के उत्तरोत्तर अस्तित्व में आई।

पहली बस्ती (ताम्र-प्रस्तर युगीन)—इस बस्ती के स्तर की ऊंचाई 22 फुट थी। इसमें इमारतें बहुत मोटी और कीच या कच्ची ईंटों की बनी थीं। उत्खात वास्तुओं में अधिकांश रहने के घर थे। केवल एक वास्तु के सम्बन्ध में सन्देह है कि वह शायद प्राकार का वप्र था। बर्तन लाल या भूरे रंग के थे और उन पर काले रंग के विविध अभिप्राय बने थे। प्राय: हर एक बर्तन, चाहे वह किसी आकार या मान का था, चित्रों से अलंकृत था जिससे पता लगता था कि इस समय के लोग कितने कलाप्रेमी और रंगीन विचारों के थे (फलक 21)। चित्र प्राय: काले हैं परन्तु कहीं-कहीं चाकलेट रंग का भी मिश्रण है। अभिप्रायों में पड़े बांध, समान केंद्र वृत्तार्ध, लहरिया रेखाएं, केंद्र से निखरती हुई रेखाएं, तिकोन, सौर चिह्न, चितकबरे हिरन, मोर आदि उल्लेखनीय हैं। इसी के साथ एक काली-और-लाल भूरी कुम्भकला भी प्रचलित थी जिस पर कभी-कभी आड़ी अथवा खड़ी रेखाएं या बिंदु बने होते थे। चित्रहीन बर्तन संख्या में बहुत कम थे।

इस संस्कृति की दूसरी विशिष्टता सूक्ष्माश्म उपकरण थे। इनमें अधिकांश समानान्तर पार्श्वों वाले फल थे। कई फलों में कर्कटपृष्ठ (rested ridge) रीति का प्रयोग हुआ था। यह लिखना आवश्यक है कि सूक्ष्माश्म उपकरण उत्तरकाल के स्तरों में भी पाए गये थे। परन्तु ये सम्भवत: पहले काल के सूक्ष्माश्मों के ही अविशिष्ट उदाहरण थे। तांबा बहुत थोड़ी मात्रा में व्यवहार में आता था। अन्य उपलब्ध वास्तुओं में गोले, रगड़ने के पत्थर, मिट्टी के मनके, तकलियां और पशुमूर्तियां मुख्य थीं।

इसमें संदेह नहीं कि नागदा का 'काल 1' मध्य तथा पश्चिमी भारत और दक्षिण की ताम्र-प्रस्तरयुगीन संस्कृति के लक्षणों से युक्त है जिसका आरम्भ काल ई० पू० 1000 के लगभग माना गया है।

दूसरी बस्ती—यह बस्ती पहली बस्ती का ही उत्तरकालीन रूप था। इसमें काली-और-भूरी कुम्भकला लुप्त हो गई और उसकी जगह काले-और-लाल मद्भाण्ड व्यवहार में आने लगे। इमारतें अब भी कीच या कच्ची ईंटों की ही बनाई जाती थीं।

तीसरी बस्ती—इसमें भी कीच और कच्ची ईंटों के मकान बनते थे परन्तु कहीं-कहीं पकी ईंटों का भी प्रयोग पाया गया। इस समय के बर्तन एन० बी० पी० कुम्भकला के थे और इससे सम्बद्ध अन्य प्रकार के कुम्भखंड भी मिले। एक और प्रकार के लाल बर्तनों पर फफोले से बने थे। ऐसे बर्तनों को 'ग्रेन्युलर वेयर' (Granular ware) कहा गया है। इनके अलावा बड़े संग्रह-भांड (Storage jars) भी पाए गये। दैनिक व्यवहार की वस्तुओं में मिट्टी के झांवे (flesh-rubbers), पालिश की हुई पत्थर की तश्तरियाँ, मृन्मय वस्तुएं जिन पर विलिखित अभिप्राय बने थे हाथीदांत के लटकन और सिर की सुइयां, हड्डी की कलमें और दूसरी वस्तुएं, तांबे के सुरमुचू, अंगूठियां और कंगन, खिलौने, सिल-बट्टे, और लोहे के तसले भी थे। इस काल की ऊपर की तहों से प्राप्त एक ठीकरे और मिट्टी के गोले पर ई० पू० दूसरी सदी के लेख थे जिससे पता लगता था कि इस स्थान पर अंतिम काल की तीसरी बस्ती ई० पू० 200 के लगभग समाप्त हो गई।

उज्जैन

प्राचीन उज्जयिनी का खंडहर (फलक 20ख) जिसे अब 'गढ़ कालिका' कहते हैं सिप्रा (प्राचीन क्षिप्रा) नदी के तट पर स्थित है

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राकृतिक 'काली कपास-भूमि' (Black Cotton Soil) की तह से यह 35 फुट की ऊंचाई तक उठा है। इतना ऊंचा यह मिट्टी का तोंदा अपने अवशेषों के कारण जो इसकी खुदाई में मिले हैं, दो सांस्कृतिक कालों में विभक्त हो सकता है।

काल 1—इस काल के अवशेष नीचे के 20 फुट ऊंचे स्तर में छिपे हैं। इस स्तर में एन० बी० पी० कुम्भकला और उसके साथ के दूसरे वर्तन भी मिले थे। इस काल की अन्य वस्तुओं में मनुष्यों और पशुओं की मृन्मय मूर्तियां, तांबे और लोहे की कलाकृतियाँ, सिलबट्टे पत्थर के बने कुम्हार के थपुए, मिट्टी की बनी कुम्हार की मुहरें, पालिश किये हुए पत्थर की तश्तरियां और उनके मृन्मय पूर्वरूप, सूक्ष्माश्म ब्लेड और पिण्ड (Cores) थे। ताम्र-प्रस्तरयुग की प्राचीन काली-और-लाल चित्रित कुम्भकला इस स्तर में नहीं मिली। इमारतें पकी ईंटों और अनघड़े पत्थरों की थीं। मिट्टी के बने मंडल-कूप इस स्तर में मौजूद थे। शहर को बाढ़ों से बचाने के लिये आदिवासियों ने काली मिट्टी से मिश्रित सफेद चिकनी मिट्टी की एक भारी दीवार का निर्माण किया। बड़े आकार (1 फुट 4 इंच × 1 फुट 1 इंच × 3 इंच) की पकी ईंटों के एक ही रद्दे पर खड़ी यह दीवार प्राकृतिक काली भूमि के नीचे पीले रंग की कड़ी भूमि की तह से उठाई गई थी, परन्तु प्रतीत होता है कि प्रचंड बाढ़ों के कारण इस प्राकार को बहुत बड़ी हानि पहुंची। खुदाई में इसके केवल खंड ही पाए गये जो बाढ़ों से लाए हुए कीच और मलबे की तह से नीचे दबे पड़े थे।

काल 2—बाढ़ों तथा अन्य कारणों से इस काल की बस्ती को भी बहुत बड़ी हानि पहुंची, परन्तु यह मध्यकाल तक जीवित रही। प्राचीन उज्जयिनी के खंडहर इतने विशाल हैं कि इस थोड़ी सी खुदाई से उनके लंबे इतिहास का पता लगाना असम्भव है। अतः यहां अभी बहुत गहन अनुसन्धान की आवश्यकता है।

कन्नौज, ज़िला फर्रूखाबाद

यह टीला प्राचीन कान्यकुब्ज का अवशेष माना जाता है। सातवीं सदी में हर्षवर्धन के काल से लेकर कान्यकुब्ज उत्तरी भारत का प्रसिद्ध शासनकेन्द्र रहा। परन्तु इसकी प्राचीनता हर्ष से भी पहले की है। यहां खनन उपविभाग की ओर से श्री के० के० सिन्हा ने थोड़ी सी खुदाई कराई थी। इस टीले के 40 फुट ऊंचे मलबे के अंदर चार सांस्कृतिक काल पाए गये।

काल 1—यह काल ई० पू० 1000 वर्ष तक पहुंचता है। इस काल के स्तर में 'पेंटेड ग्रे वेयर' का एक ठीकरा मिला। इसकी सहचर लाल और काले पोतेवाली कुम्भकलाओं के बहुसंख्य टुकड़े भी मिले परन्तु इसमें कोई इमारतें नहीं पाई गईं।

काल 2—इस काल में बड़े आकार की ईंटों की केवल एक ही इमारत मिली। एन० बी० पी० और उससे सम्बन्धित बर्तनों के साहचर्य से इसकी तिथि ई० पू० 600 से 200 तक नियत की जा सकती है।

काल 3—उत्खात वास्तुओं के साक्ष्य के आधार पर यह काल सात भागों में बांटा जा सकता है। इस काल के वास्तु अधिकांश पकी ईंटों के परन्तु कहीं-कहीं अनघड़े पत्थरों के भी बने थे। इस काल की नीचे की तहों में लाल कुम्भकला के बर्तन पाए गये जिन पर कुषाण शैली के छापदार अभिप्राय बने थे। मिट्टी की मूर्तियां कई भांति की थीं। इनमें एक मनुष्य-मस्तक है जिसकी आंखों के गोले उभरे हुए हैं और सिर पर बालों का गुच्छा है। कई बेडौल मूर्तियां और एक 'सत्ती-सत्ता' फलक अहिच्छत्रा से प्राप्त समानरूप कृतियों का स्मरण कराती हैं। अहिच्छत्रा से प्राप्त 'सत्ती-सत्ता' मूर्तिफलक की तिथि प्रारम्भिक मध्यकाल है। इससे मालूम होता है कि इस टीले की तीसरी आबादी का अन्त भी प्रारम्भिक मध्यकाल में ही हुआ होगा।

काल 4—इस काल को सात विभागों में बांटा जा सकता है। इसमें इमारतें अधिकांश लखौरी ईंटों की थीं। बहुत सी इमारतों की चिनाई चूने में की गई थी और कई पर चूने का पलस्तर भी चढ़ा था। उत्खात ईंटें, काचित भाण्ड और अन्य अवशेष बतलाते हैं कि यह बस्ती उत्तर मध्यकाल की थी।

कौशाम्बी, ज़िला इलाहाबाद

इलाहाबाद के विश्वविद्यालय की ओर से श्री गोवर्धनराय शर्मा ने इस वर्ष भी कौशाम्बी के स्थान में खुदाई कराई। घोषिताराम बौद्ध विहार को सर्वांग प्रकाश में लाकर इसके सम्बन्ध में पूरा परिचय प्राप्त करना इस खुदाई का मुख्य उद्देश्य था।

उत्खात साक्ष्य से पता लगा कि ई० पू० छठी शताब्दी से लेकर ई० छठी सदी तक निरन्तर यह संघाराम मनुष्यों का निवास-स्थान बना रहा। यहां भिन्न-भिन्न काल के वास्तुओं की उत्तरोत्तर सोलह तहें मिली हैं। अपने अंतिम रूप में घोषिताराम विहार एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौपहल इमारत थी। इसके चारों ओर भिक्षुओं के रहने की कोठरियां थीं। कोठरियों के आग बरामदा था और सहन के बीच छोटे स्तूपों से परिवृत मुख्य स्तूप था। विहार चारदीवारी से घिरा था।

आबादी की सबसे प्राचीन तह में एन० बी० पी० के कुंभखंड, मलगत जिनमें पकी मिट्टी की चकियाएं नहीं लगी थीं। दूसरी आबादी के समय में, जिसकी तिथि ई० पू० 500 के लगभग है, मौलिक मुख्य रूप स्तूप बनाया गया। इसके अनन्तर भिन्न-भिन्न समय पर इस स्तूप में चार बार सम्वर्धन किये गये जिससे अन्त में यह चौपहल आकार का हो गया। इसका हर एक कोना दोहरे कसके का था। सब से महत्त्वपूर्ण सम्वर्धन तीसरे काल (ई० पू० तीसरी सदी) में हुआ। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि सम्राट् अशोक ने घोषिताराम विहार में एक स्तूप बनवाया था। विहार में चौथा सम्वर्धन इसके अंतिम दिनों में हुआ।

पहली पांच बस्तियों के काल में इस विहार के वास्तु में जो संवर्धन हुआ उसके सम्बन्ध में कोई प्रमाण नहीं मिला। सम्भवतः इसलिये कि छठी बस्ती के काल से पहले यह विहार भारी विनाशकांड की लपेट में आ चुका था। परन्तु छठी आबादी के काल से लेकर अंतिम आबादी तक इसके जीवन काल का चित्र स्पष्ट हो जाता है। छठी आबादी के आरम्भ में इस विहार की दीवारें 1 फुट लंबी पकी ईंटों की बनी थी। सातवीं बस्ती के समय इसमें कोई वृद्धि नहीं हुई। आठवीं बस्ती के काल में इसके चारों ओर भिक्षुओं के निवासार्थ बरामदे समेत कोठरियां बना दी गईं। नौवीं बस्ती के समय इसकी दीवारों पर पलस्तर चढ़ाया गया। परन्तु विहार में सबसे अधिक वृद्धि ग्यारहवीं आबादी के समय हुई जब मघवंश के राजा, विशेषतः भद्रमघ का शासन था। भद्रमघ का नाम एक मटके पर खुदा पाया गया था।

तेरहवीं बस्ती के काल में और परिवर्तन हुए। इस समय सारे विहार को सुरक्षित बनाने के लिये एक बहुत बड़ी चहारदीवारी का निर्माण हुआ। उत्तर-पूर्व और पश्चिम की दिशाओं में यह दीवार 6 फुट चौड़ी थी। परन्तु दक्षिण की दिशा में इसकी चौड़ाई 13 फुट थी। इसी समय विहार के दक्षिण-पूर्वी और दक्षिण-पश्चिमी कोनों में दो समानान्तर दीवारें बनाई गई। इनके बनाने का उद्देश्य दो नये स्तूपों को आयताकार घेरे के अंदर सुरक्षित रखना था। इनमें से हर एक स्तूप 40 फुट × 36 फुट आयाम का था।

सोलहवीं बस्ती के समय इस विहार को तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने नष्ट कर दिया। फलतः इस के अंतिम काल की रूप रेखा का स्पष्ट परिचय प्राप्त नहीं हो सका।

इस वर्ष की खुदाई में पत्थर की बहुत सी मूर्तियां, मिट्टी के खिलौने और अन्य वस्तुएं मिलीं।

पाटलिपुत्र (पटना)

इस वर्ष भी के० पी० जयस्वाल रिसर्च इंस्टीट्यूट की ओर से श्री विजयकान्त मिश्र ने पटना शहर के चार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में खुदाई कराई। ये स्थान क्रमशः गुलजार बाग गवर्नमेंट प्रेस का खेलने का मैदान, महावीर घाट, बेगम हवेली और शाह कमाल रोड हैं।

इन स्थानों की खुदाई में पांच आबादियों के प्रमाण मिले जिनकी तिथि ई० पू० छठी सदी से ई० 17वीं सदी तक थी इनके बीच ई० 600 से ई० 1600 तक एक हज़ार वर्ष का अन्तर था जिसके सम्बन्ध में कोई प्रणाम नहीं मिल सके।

पहले काल (ई० पू० 600–150) की आबादी में जो बर्तन मिले वे एन० बी० पी० कुम्भकला के थे। इनमें प्याले और थालियां अधिक थीं। बड़े आकार के मोटे लाल मटके, खुरदरे धूम्रवर्ण प्याले और लाल कुम्भकला के प्याले, तश्तरियां आदि भी पाए गये। उपलब्ध अन्य वास्तुओं में मिट्टी के खिलौने (फलक 22 क), पत्थर के बर्तन और हड्डी की नोकीली शलाकाएं थीं। मृन्मय पशु मूर्तियों पर छाप वाले या विलिखित वृत्त आदि अलंकरण बने थे।

पहली आबादी के अनन्तर जो वास्तु बनाए गये थे पकी ईंटों के और आकार में चौपहल थे। इन पर मिश्रित रेत चूने का पलस्तर चढ़ा हुआ था।

शाह कमाल रोड के क्षेत्र में पहली आबादी के कोई लक्षण नहीं मिले। प्राकृतिक भूतल पर जो पहली बस्ती मिली उसमें केवल एन० बी० पी० कुम्भकला के अवशेष पाए गये। इस तह में पालिश किये हुए बलुए पत्थर के टुकड़ों से पता लगता था कि सम्भवतः यहां और खुदाई करने पर कोई अशोक-स्तम्भ मिल जाए। इन टुकड़ों में से एक (फलक 22 ख) नाप में 6 फुट × 3 फुट है। इस पर मौर्यकला शैली का उत्तम पालिश चढ़ा है और गुरिया ढोलने की सज बनी है। डा० स्पूनर को पहले इस क्षेत्र में एक घर से ओपदार मौर्यकालीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वास्तुखंड मिले थे । यह स्तर जिसकी ऊपर की तह में राख, कोयला और चूना मिला था सम्भवतः मौर्यकाल की बस्ती थी जो अग्निकांड से नष्ट हो गई थी । यह प्रमाण कुम्रहार के साक्ष्य का समर्थन करता है जिससे यह सिद्ध हुआ था कि ई० पू० 100 के पहले एक भयंकर अग्निकांड से पाटलिपुत्र का विनाश हुआ था ।

काल 2 (ई० पू० 150 से ई० 100)—

इस काल की इमारतें 17 इंच × 11 इंच × $1\frac{3}{4}$ इंच नाप की पकी ईंटों की बनी थीं । इस काल की और विशिष्टताएं मल-कूप, एन० बी० पी० कुम्भकला के ठीकरे तथा लाल और धूम्रवर्ण बर्तनों के खंड थे । दो ठीकरों पर आहत मुद्राओं पर बने हुए चिह्नों के समान चिह्न थे । कौशाम्बी की 'दुर्बल बैल' (lanky bull) शैली के सिक्के, खपरैलें, पत्थरों के मनके, मिट्टी के खिलौने आदि अवशेष भी पाए गए ।

काल 3 (ई० 100 से 300)—

इस समय लाल और धूम्रवर्ण की कुम्भकलाओं के प्याले, कलसियां, मिट्टी की मूर्तियां, मिट्टी की बनी सजावट की वस्तुएं, तांबे के सुरमुचू आदि और सोने का एक खोखला तावीज (फलक 23 क), मिले । यह तावीज हुविष्क के एक भांति के सिक्के का अनुकरण करता था जिस पर एक ओर राजा का सिर और लेख और दूसरी ओर रोमन देवी अर्दोच्छो की मूर्ति और यूनानी अक्षरों में उसका नाम अंकित था

काल 4 (ई० 300 से 600)—

इस समय एक चित्रहीन लाल कुम्भकला के बर्तन प्रचलित थे और साथ ही अन्य शैलियों के बर्तन भी व्यवहार में आते थे । विविध वस्तुओं में एक नैगमेश की मूर्ति, पशुमूर्तियां और विविध मनके उल्लेखनीय हैं ।

काल 5 (ई० 1600 और बाद का)—

इस काल की बस्ती में काचित बर्तन, शाह आलम का चांदी का सिक्का, मिट्टी की मनुष्य-मूर्तियां जिनके शिरोवेष्टन मुसलमानी और मराठा ढंग के थे, हाथीदांत के बने चौसर खेलने के मोहरे, शीशे के मनके और तांबे तथा लोहे के नाना प्रकार के अवशेष थे ।

कुन्नतुर, जिला चिंगलपट

यहां दक्षिणी मंडल की ओर से श्री बी० डी० कृष्णस्वामी और श्री वल्लभसरन ने महाश्म स्मारकों के क्षेत्र में खुदाई कराई । इसका उद्देश्य महाश्म-स्मारकों के क्षेत्र का निकटवर्ती प्राचीन बस्ती से सम्बन्ध जोड़ना और इस संस्कृति का पूर्ण परिचय प्राप्त करना था ।

यहां तीन महाश्म कब्रों का उद्घाटन किया गया । इनमें एक अश्मवृत, दूसरा डाल्मन-कोष्ठ और तीसरी ऐसी कब्र थी जिसकी आवरक-शिला केर्न के पत्थरों के समतल थी । परन्तु जिसके अन्दर शिला से ढकी हुई मिट्टी की शव-मंजूषा पाई गई । इन तीनों भांति की महाश्म कब्रों में शव गाड़ने की विधि वैसी ही थी जैसे पहले इस प्रसंग में वर्णन की जा चुकी है ।

पूर्वोक्त तीसरी महाश्म कब्र में जो मिट्टी की शव-मंजूषा मिली उसमें लोहे के दो कुंडलाकार कंगन और दो मानव-अस्थिखंड थे । मानव अस्थियों में एक बांह की हड्डी का टुकड़ा और एक नवयुवक का स्थानभ्रष्ट दांत था । मंजूषा के बाहर पार्श्वों के साथ इकट्ठे रखे हुए 13 मिट्टी के बर्तन थे । न तो शव-मंजूषा और न हीं कब्र पूर्व-पश्चिम के रुख थी । उत्खात तीनों महाश्म कब्रों में जो बर्तन मिले वे पूर्व-परिचित काली-और-लाल कुम्भकला के थे जो इस प्रकार की कब्रों में प्रायः मिलती है । खुदाई अभी चालू है और समीपवर्ती प्राचीन बस्ती से महाश्म कब्रों का सम्बन्ध स्थापित करना अभी शेष है ।

नागार्जुनकोंडा, जिला गुंटूर

1954 के 'नागार्जुनकोंडा-योजना' के अनुसार डाक्टर आर० सुब्रह्मण्यम् ने यहां 15 संघाराम, आठ स्तूप, एक मध्यकालीन मंदिर, कृष्णा के तट पर एक घाट और ईंटों के बने एक बांध का उद्घाटन किया । इस वर्ष की खुदाई में नये संघाराम, स्तूप और महल के क्षेत्र के वास्तु, स्तम्भ-मंडप आदि प्रकाश में आए ।

खुदाई में जो लेख मिले उनमें इक्ष्वाकु वंश के रुद्रपुरुषदत्त नामक एक राजा का परिचय मिला । इसके अतिरिक्त बहत्फालायन गोत्र के राजा श्रीवर्मन् का नाम भी उपलब्ध हुआ । यह बात उल्लेखनीय है कि एक लेख में थेरवाद विभज्यवाद के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'महाविहार-वासिन' सम्प्रदाय (बौद्ध सम्प्रदाय) का नाम अंकित था । यह नागार्जुनकोंडा में सिंहलद्वीप के थेरवाद का तीसरा सम्प्रदाय था । दूसरे दो सम्प्रदाय जेतवनीय और अभयगिरिवासित् हैं । वास्तुध्वंस जो इस खुदाई में प्रकट हुए केवल इक्ष्वाकु काल के ही नहीं किन्तु इसके दो सौ वर्ष पहले और पीछे के भी थे ।

क्षेत्र 5-6—

इस खुदाई में एक पूर्णांग विहार का उद्घाटन हुआ जिसमें चतुःशाल संघाराम, स्तूप, चैत्यगृह आदि समाविष्ट थे । स्तूप के प्रवेशद्वार में लगी हुई एक शिला पर मत्स्य, कल्पवृक्ष, पूर्णघट, स्वस्तिक, धर्मचक्र और अंकुश से विभूषित दो बुद्ध-पद अंकित थे । इसी पर ई० तीसरी सदी के एक लेख में लिखा था कि ये पुण्य चरण बुद्ध भगवान् के हैं और इन्हें लंका के थेरवाद विभज्यवाद के 'महाविहार-वासिन' सम्प्रदाय ने प्रतिष्ठित किया है । जिस विहार में इनका प्रतिष्ठापन हुआ उसका नाम 'प्रवेनी' पर स्थित, 'धरन विहार' दिया हुआ है । इसमें लिखा है कि महाविहार-वासिन् भिक्षु पुरुषों के शुभाशुभ शारीरिक लक्षणों के पहचानने और जन्म-पत्री बनाने में निपुण थे और जन्म-पत्री बनाना बुद्ध द्वारा प्रवर्तित 'नवांग' का आठवां शासन (अब्भुतो) था ।

क्षेत्र 8—

इसमें ईंटों का बना एक चक्राकार स्तूप मिला । इसकी केन्द्रीय पिंडी में से आठ अरें बाहर को निकली थीं और इसके पीठ का व्यास 50 फुट था । स्तूप के अन्दर से दो धातु मंजूषाएं मिलीं । इनमें एक तांबे की और दूसरी घटिया चांदी की थी । मंजूषाओं में सोने के फूल, मोती, कीमती पत्थर और अस्थिभस्म पाई गई । इस क्षेत्र में जो मिट्टी के पात्र मिले उनमें से एक पर त्रिरत्न का चिह्न था ।

क्षेत्र 11—

इस खुदाई में तीन पक्षों वाला घोड़े की नाल के आकार का एक ऊंचा संघाराम प्रकट हुआ जिसके हर तरफ आठ कोठरियां थीं और अंदर स्तूपचैत्य और स्तम्भ-मंडप था । यहां से प्राप्त एक लेख में लिखा था 'भगवतो मुलचेतिये पतिथपित' । इसमें बुद्ध के मूलचैत्य के किसी वास्तु में किसी वस्तु की प्रतिष्ठा का उल्लेख था । इससे प्रश्न पैदा होता है कि इस मूलचैत्य का स्थिति स्थान कहां था ।

क्षेत्र 13—

इस खुदाई में एक चतुःशाल विहार दृष्टिगोचर हुआ । इसके मध्य में एक स्तम्भ-मंडप था । इसके अतिरिक्त स्तूप चैत्य, 'चय-खंभ' वाली स्तूप के आकार की एक गोल कोठरी । 'चय-खंभ' पर बुद्ध की सौतेली माता प्रजापति गोतमी का दृश्य उत्कीर्ण है । गोतमी ने दुपट्टे में लपेट कर बुद्ध को अपने हाथों में उठाया है । इसके नीचे के लेख में 'चय-खंभ' शब्द उत्कीर्ण है । इक्ष्वाकु वंश के राजाओं (चंतमूल, वीरपुरुषदत्त, एहुवल चंतमूल और रुद्रपुरुषदत्त) की वंशावली का वर्णन करने के अनन्तर लेख में इस वंश की एक महारानी महादेवी का भी उल्लेख है । इस रानी की स्मृति में बृहत्फालायन गोत्र के राजा श्रीवर्मन् ने चय-स्तम्भ स्थापित किया था ।

क्षेत्र 21—

इस खुदाई में नदी के ठीक तट पर बने हुए स्तंभ-मंडप भी पाए गए । उनके साथ कोई चैत्यस्तूप नहीं मिला । इनकी रूपरेखा स्पष्ट नहीं थी । केवल इतना पता लगता था कि ये वास्तु नदी के किनारे जनता के एकत्रित होने का स्थान था । यहां शंख तथा इक्ष्वाकु राजाओं के सीसे के सिक्के पाए गए । विशेषरूप से उल्लेखनीय चूना पत्थर के दो तोरण स्तम्भ हैं । प्रत्येक स्तम्भ $7\frac{1}{2}$ फुट ऊंचा और 10 इंच मोटा है । इन पर कई भांति के रोचक चित्र उकेरे गये हैं, जैसे हाथी, पत्रावली में छिपे क्रीड़ारत बालक, मेढ़े और मुर्गों की लड़ाइयां देखने में व्यस्त लोग, तथा पक्षी, भालू बैल, हिरन आदि पशु-पक्षियों से खेलते हुए बालक दिखलाए गए हैं। इन पर 'एकिथस' यूनानी अभिप्राय और पद्दल कमल आदि अलंकरण भी बने हैं । खंभे के शिखर पर हाथी और पंखों वाले शेर बने हैं । कलाशैली की दृष्टि से ये खंभे सम्भवतः ई० तीसरी या चौथी सदी के हो सकते हैं ।

क्षेत्र 25—

यहां विहार के सामने 27 फुट व्यास का एक गोलाकार महाचैत्य था । इसका मध्यभाग ठोस था । अरें संख्या में छः थीं । अरों के बीच के हर खाली स्थान से एक भिक्षापात्र मिला था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षेत्र 5/1—

यहां एक तीन पक्षों वाला संघाराम बना था। पूर्वी पक्ष में आठ कोठरियां थी परन्तु पश्चिम और उत्तर में केवल पांच-पांच थीं। बाकी खाली जगह में दो औपहारिक स्तूप थे। मध्य में मंडप था। संघाराम के पश्चिम में दो द्वयस्र जिनमें प्रत्येक में एक स्तूप (धातुगर्भ) स्थित था। इस संघाराम के क्षेत्र में दो औपहारिक स्तूपों का मिलना एक उल्लेखनीय बात है। इससे स्पष्ट होता है कि उन पर कभी एक महाचैत्य था। सम्भवतः यह पश्चिमी भाग में दबा पड़ा है और खुदाई करने पर मिल सकता है। उपलब्ध वस्तुओं में इक्ष्वाकु राजाओं के जो सीसे के सिक्के मिले उनसे पता लगता है कि यह विहार इक्ष्वाकु काल का था।

क्षेत्र 5/2—

इसमें खंभों पर आश्रित एक बारादरी मिली जिसकी दीवारें ईंटों की और फर्श पत्थर की शिलाओं का था।

क्षेत्र 5/4 —

इसमें पूर्व की ओर एक स्तम्भ-मंडप था। इस मंडप में निम्नतल पर संस्कृत-प्राकृत भाषाओं का मिला-जुला चौथी शताब्दी का एक स्मृति-स्तम्भ लेख पाया गया। इसमें सेनानायक श्री चंतमूल के पराक्रम की स्मृति में स्तम्भ की स्थापना का उल्लेख था। लिखा है कि इस सेनानायक के बहुत अनुयायी थे, उसने शत्रुओं के गर्व को चूर्णित कर दिलिके हाथी को बंदी बनाया। यह चंतमूल इक्ष्वाकुवंश के चंतमूल से भिन्न था क्योंकि उसे कुलहक-वंश-संभव निर्दिष्ट किया गया है। वह बड़ा वीर था और उसकी मृत्यु शिविर में हुई थी। शिलालेख में वर्णित वीरता का समर्थन स्तम्भ पर अंकित अभिप्राय से भी होता है। इसमें कमलवन की पृष्ठ-भूमि के सामने खड़े सजे हुए विशाल हाथी पर राजा सवार है जिसके पीछे छत्र चामर लिये एक अनुचर खड़ा है। सम्भवतः यह राजा शिलालेख में वर्णित सेनानायक चंतमूल है। लेख में दिये हुए 'दिलिवक-हथिगहकस' विशेषण की सार्थकता का बोध इस बात से होता है कि सेनानायक हाथी के सिर पर अंकुश लिये बैठा है।

क्षेत्र 5/7—

इस खुदाई में एक शिला मिली जिस पर स्त्री रूप में महासेन की शक्ति समभंग-मुद्रा में खड़ी है। उसके दाएं हाथ में त्रिशूल और कट्यवलंबित बाएं हाथ में खड्ग है। देवी अमरावती शिल्पशैली के लक्षणों वाले भूषण पहने हुए है। पृष्ठभूमि में छत्र और पंखों का बना ध्वज दिखाया गया है। मोरपंख महासेन के वाहन मयूर के द्योतक हैं। जब हम देखते हैं कि नागार्जुनकोंडा के शिलालेखों में 'अतवी चंतिसिरि' आदि स्त्रियों को 'महातलवरी' और 'महासेनपतिनी' विशेषणों से निर्दिष्ट किया गया है तो इस देवी को महासेन की शक्ति और सेनानायिका के रूप में पहचानना कठिन नहीं। इक्ष्वाकुवंश के राजाओं ने अपने आपको 'विरूपाक्षपति-महासेन-परिगृहीत' विशेषण से विभूषित किया है। कलाशैली के आधार पर कोरे हुए अलंकरण आदि का प्रारम्भिक काल ई० तीसरी शती मालूम होता है।

'राजभवन' क्षेत्र दो भागों में बांटा जा सकता है। पहला कृष्णा नदी से लगा हुआ सीढ़ीदार घाट और दूसरा घाट के उत्तर में ईंटों का सीढ़ीदार टेढ़ा-मेढ़ा बांध का सिलसिला जो सम्भवतः राजकीय समारोहों के समय व्यवहार में आता था। घाट पर लगी हुई कई शिलाओं पर 'वेनिसिरि' और 'असल' आदि नाम तथा धनुषबाण आदि स्थपति-चिन्ह (mason-marks) अंकित थे। इस क्षेत्र से प्राप्त कई सिक्कों पर खड़ी सूंड वाले हाथी की मूर्ति और एक लेख है। लेख अस्पष्ट है। इसे संदिग्ध रूप से 'सिरि विरिपुरिसदत' और 'सिरिचतमुल' पढ़ा गया है।

घाट पर बनी मध्यकालीन मोटी दीवार किसी प्राचीन वास्तु पर उत्तरकालीन आरोप है। एक तांबे का सिक्का, सम्भवतः कुतबशाही काल का, और एक सिक्का विजयनगर के किसी 'सलुब' शासक (नरसिंह) का, जिस पर 'गण्ड-भेरुंड' बना था, ऊपर की तहों में पाए गये।

सीसे के सिक्कों के अतिरिक्त, जो अधिकांश चंतमूल और वीर पुरुषदत्त के थे, पत्थर, गच और मिट्टी की मूर्तियां (फलक 23 ख) तथा पत्थर, शंख, हड्डी, शीशा और विविध बहुमूल्य मनके भी इस स्थान से मिले।

सीरपुर, जिला रायपुर

पिछले वर्ष सागर विश्वविद्यालय के प्रोत्साहन से डाक्टर मोरेश्वर दीक्षित ने इस स्थान पर खुदाई का कार्य प्रारम्भ किया था। मध्य प्रदेश के पुरातत्त्व विभाग ने पूर्वोक्त उत्खाता की अध्यक्षता में इस वर्ष स काम को फिर हाथ में लिया और चार भिन्न-भिन्न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थानों में खनन कराया। इनमें पहला आवास क्षेत्र, दूसरा विहार क्षेत्र, तीसरा स्वस्तिक के आकार का संघाराम और चौथा दुर्ग-क्षेत्र था।

आवास क्षेत्र के टीले में जो खुदाई हुई उसमें तीन आबादियों के चिह्न मिले। पहली आबादी ईसवी पांचवी सदी के चतुर्थ चरण में अस्तित्व में आई थी। इसका पता शरभपुर वंश के राजा प्रसन्नमात्र की सुवर्ण मुद्रा से लगा। द्वितीय काल (ई० सातवीं सदी) की वस्ती में भवन-निर्माण कार्य व्यापक रूप में हुआ जिसमें ईटों और पत्थरों की इमारतों का बाहुल्य था। तृतीय काल (ई० 11वीं सदी और बाद का) की इयत्ता का परिचय कलचुरि वंश की रत्नपुर शाखा के राजा रत्नदेव के 106 तांबे के सिक्कों से मिलता है। इस काल के मकान पूर्वकालीन इमारतों के मलबे से बनाए गये थे। इस प्रकार के जो मकान खुदाई में मिले उनकी संख्या 43 के करीब है। रंगीन शीशे की चूड़ियों की एक बड़ी संख्या भी यहां से प्राप्त हुई जिससे पता लगा कि यहां चूड़ियां बनाने का कारखाना था।

संघारामों के समूह के दक्षिण में एक बड़ा विहार प्रकाश में आया। इसके मध्य में खुला प्रांगण था जिसके चारों ओर हर दिशा में बरामदों सहित तीन-तीन कोठरियां थीं। इनका विन्यास स्वस्तिक के आकार का था (फलक 24 क) मुख्य प्रवेश द्वार के सामने के पक्ष में बीच की कोठरी में प्रभामंडल से शोभित 8 फुट 6 इंच ऊंची भूमिस्पर्शमुद्रा में आसीन बुद्ध की मूर्ति थी। पीठ पर बनी पद्मपाणि की सुन्दर मूर्ति मंदिर की शोभा को और भी बढ़ा रही थी (फलक 24 ख)। सहन के दक्षिण पश्चिमी कोने में लाल बलुए पत्थर की हारीती की मूर्ति थी। इस विहार की वास्तुशैली समकालीन स्थानीय अन्य विहारों के समान थी। एक इसी प्रकार का छोटा विहार पिछले वर्ष मुख्य मंदिर के पूर्व में खोदा गया था।

विहार क्षेत्र में दो और विहार खोदे गये। आकार में ये पिछले वर्ष के तीन विहारों के समान थे। हर एक विहार के सामने एक खुला बरामदा, मध्य में मंडप और पिछवाड़े में कोठरियों की पंक्ति थी। मध्यवर्ती मंडप में ईटों का बना सीढ़ीदार पीठ था जिस पर बुद्ध की बड़ी मूर्ति और आनुषंगिक छोटी मूर्तियां प्रतिष्ठित थीं। इन छोटी मूर्तियों में से कई एक फर्श पर खंडित दशा में पड़ी थीं। आनुषंगिक देवमूर्तियों में अवलोकितेश्वर, तारा, मंजुश्री आदि समाविष्ट थे। इन पर 'ये धर्मा हेतु' आदि बौद्ध मंत्र 7वीं-8वीं शती के अक्षरों में अंकित था।

मालूम होता है कि मध्यकाल में इन बौद्ध विहारों पर शैव सम्प्रदाय वालों ने अधिकार कर लिया था क्योंकि यहां ऊपर की तहों में शिव-पार्वती, गणेश और महिषासुरमर्दिनी की मूर्तियां पाई गई थीं।

इस काल से सम्बन्धित अन्य वास्तुओं में ताले, दिये, धार्मिक अभिप्राय की मुद्राएं और मुद्राछापें जिन पर बौद्धमंत्र खुदे थे, कुबेर की दो छोटी मूर्तियां, मंजुश्री, एक मिट्टी का फलक जिस पर बारह भुजाओं वाला अवलोकितेश्वर बना था, और तांबे का चीनी सिक्का उल्लेखनीय हैं। चीनी सिक्का आकार में गोल और मध्य में छिदा हुआ था। इसे 'कै युआन' चीन के सम्राट् (ई० 713–41) का बतलाते हैं। इससे पता लगता है कि इस बौद्ध केन्द्र को देखने के लिये चीनी लोग भी आते थे।

उपलब्ध शैव मूर्तियों से स्पष्ट है कि उत्तरकाल में यह मंदिर शैव सम्प्रदाय के लोगों के अधिकार में आ गया था।

दुर्ग-क्षेत्र में जो थोड़ी-सी खुदाई हुई उसमें पत्थर का बना दुर्ग-प्राकार, जो 16 फुट चौड़ा और 12 फुट ऊंचा था, प्रकाश में आया। प्राकार से वेष्टित क्षेत्र 250 गज लंबा और 220 गज़ चौड़ा था। टीले की चोटी के नीचे की तह में रंगीन चूड़ियों और दूसरे वास्तुओं के मिलने से सम्भावना हुई कि नीचे कलचुरि या उससे भी बाद की कोई इमारत होगी।

तामिलनाड में अनुसंधान

दक्षिणी पुरातत्त्व मंडल की ओर से श्री वल्लभशरण ने दक्षिणी अरकाट, तंजोर और तिरुचिरपल्ली ज़िलों का अनुसंधान किया। दक्षिण अरकाट और तंजौर के जिलों में गवेषणा करने से शवभांड कब्रों वाले बहुत से क्षेत्र उपलब्ध हुए। ये कब्रें कई प्रकार की खंडित दशाओं में थी। शवभांड अधिकांश नाशपातीनुमा थे और काली-और-लाल कुम्भशैली के थे जो महाश्म-स्मारकों की अपनी विलक्षणता है। इन उपलब्ध शवभांड-क्षेत्रों में नंजलुर, कोट्टुमन्नगुडि, कुमारमंगलम्, तेरजहुंडूर, कंधहै, पित्तच्चेरि आदि उल्लेखनीय हैं।

दक्षिण अरकाट के जिले में जो महाश्म-स्मारकों वाले स्थान उपलब्ध हुए उनमें एक नत्तमेडु था जहां रोमन काल की परिचित 'चक्रांकित' कुम्भकला के अवशेष मिले। इसके अतिरिक्त 'एम्फोरा' बर्त्तनों की नुकीली पैंदियां और विशेष कलाशैली के प्यालों और तश्तरियों के ठीकरे भी पाए गये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजेन्द्र चोल प्रथम (1011–44) की राजधानी गंगैकोंडचोलपुरम् के चारों ओर के क्षेत्र में छानबीन से एक अज्ञातपूर्व आयताकार प्राकार के अवशेष दृष्टिगोचर हुए। यह प्राकार किसी समय गंगैकोंडचोलपुरम् का दुर्गप्राकार अर्थात् शहर की चहारदीवारी थी। राजेन्द्र प्रथम का उपनाम गंगैकोंडचोलदेव था और उसने अपनी राजधानी में बृहदीश्वर मंदिर (फलक) का निर्माण कराया था जो आज भी खड़ा है। यद्यपि यह खंडहर इस समय उत्तरकालीन मलबे और घने जंगल से गहरा ढका हुआ है फिर भी पता लगा लिया गया कि आरम्भ में इस प्राकार के चारों ओर गहरी खाई थी। यह प्राकार उत्तर-दक्षिण के रुख 6000 फुट और पूर्व-पश्चिम की दिशा में 4500 फुट था। प्राकार के मध्य में चारदीवारी से घिरा हुआ एक छोटा ईंटों का बना आयतताकार (1700 फुट × 1300 फुट) क्षेत्र था। जो सम्भवतः राजा का अन्तर्दुर्ग (राजकीय निवास) था। बृहदीश्वर मंदिर इस कोटले के पूर्वोत्तरी कोने के बाहर बना था। मंदिर और कोटले के बीच 'कसवत्तु' नामक सदानीर नाला बहता था।

तंजौर नगर के चारों ओर के क्षेत्र की गहरी जांच-पड़ताल के फलस्वरूप प्राचीन नगर के पुराने प्राकार के अवशेष उपलब्ध हुए। यह प्राकार लंबाई में चार मील के लगभग है और धनुष के समान वक्ररेखा में आधुनिक शहर की पश्चिमी सीमा की ओर घूमता है और तंजौर के किले तथा शिवगंगा गढ़ी को अपने घेरे में लिये है। यद्यपि इस प्राकार के निर्माण की तिथि का निर्धारण नहीं हो सका, तथापि प्रतीत होता है कि यह तंजौर के इर्द-गिर्द बनाए हुए सुरक्षा प्राकारों की शृंखला में प्राचीनतम है। यह महत्त्व की बात है कि बृहदीश्वर मंदिर इस प्राकार के अंदर बनाया गया था। प्राकार की नींव ऊपर की मिट्टी की तहों को काट कर बहुत नीचे प्राकृतिक चट्टान की चोटी पर रखी गई थी। मिट्टी की तहों को काटने से खाई बनाने और प्राकार के मूल के भराव में भी सहायता मिली होगी। नींव की जड़ के पास प्राकार की चौड़ाई 190 फुट और ऊंचाई 20 फुट थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरातत्त्व सम्बन्धी परिभाषाओं की अकारादि-क्रम से सूची

क्रमांक (1)	परिभाषा (2)	अंग्रेजी में पर्यायवाची (3)	व्याख्या (4)
1	अधित्यका	Plateau	पठार, ऊंचा मैदान ।
2	अनुसन्धान	Exploration	पुरातत्त्व-सम्बन्धी छानबीन ।
3	अनुसन्धान-शाखा	Exploration Branch	पुरातत्त्व विभाग की एक शाखा
4	आयक-चौतरा	Ayaka-platform	आन्ध्र शैली के चैत्यों में एक प्रकार का चौतरा
5	अर्ध वृत्ताकार, द्वयस्र	Apsidal	एक प्रकार का मंदिर अथवा वास्तु जिसकी पिछली दीवार अर्धगोलाकार हो ।
6	अर्धचंद्र	Crescent	अर्धचंद्र आकार का सूक्ष्माश्म उपकरण ।
7	अवाच्य-मंडल, दक्षिणी-मंडल	Southern Circle	भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का दक्षिणी क्षेत्र का मंडल ।
8	अवैध	Unsystematic	विधिहीन, मनमाना ।
9	अश्मसात्, अश्मीभूत, प्रस्तरीभूत	Fossil	प्राणियों की हड्डियां या वनस्पति जो अनन्तकालसे भूमि में दबे रहने के कारण पत्थर बन जाएं ।
10	अस्थि-हस्तकृतियां, अस्थि-व्यवसाय	Bone Industry	हड्डी की बनी वस्तुएं ।
11	अंधकार-युग	Dark age	सिंधु सभ्यता के अंत (ई० पू० 1500) तथा ई० पू० छठी सदी के बीच का 1000 वर्ष का लंबा काल ।
12	आहत मुद्रा	Punch-marked coin	भारत की प्राचीनतम मुद्रा
13	आंध्र-कुम्भकला	Andhra Pottery	यह कुम्भकला जो ईसवी सन् की पहली दो शताब्दियों में आंध्रदेश में प्रचलित थी ।
14	उत्खाता	Excavator	पुरातत्त्व सम्बन्धी खुदाई कराने वाला ।
15	उदीच्य (उत्तरी) मंडल	Northern Circle	भारतीय-पुरातत्त्व सर्वेक्षण का उत्तरी क्षेत्र का मंडल ।
16	उपल, कंकर	Pebbles	छोटे पत्थर जो नदी या पहाड़ी नालों के पात्रों में मिलते हैं ।
17	उपलायुध	Pebble Implements	'उपल' (पत्थरों) के बने हुए हथियार औज़ार ।
18	उपल-हस्तकृतियां	Pebble Industries	प्रागैतिहासिक 'उपल' (पत्थर) का उद्योग ।
19	उपलब्धि	Discovery	अनुसंधान अथवा खुदाई करने से जो वस्तु मिले ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
20	एकाश्म	monolithic	पत्थर की एक ही शिला से घड़ा हुआ
21	एकाश्म-मंदिर	monolithic Temple	एक ही चट्टान से घड़ा हुआ मंदिर
22	अश्यूलीय शैली	Acheulian Style	पुराण-प्रस्तर युग की एक शैली जो यूरोप में प्रचलित थी प्रभव स्थान सेंट अश्यूल (फ्रांस)
23	एन० बी० पी० कुम्भकला	N.B.P. Ware (Nothern Black Polished Ware)	'उत्तरीय कृष्णमार्जित' कुम्भकला। एक उत्तम ओपदार काली कुम्भकला जिसके अवशेष व्यापक रूप से उत्तरी भारत में पाये गये हैं।
24	एपिग्राफिया इंडिका	Epigraphia Indica	भारतीय-पुरातत्त्व सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित वह पुस्तक जिसमें प्राचीन अभिलेखों का विस्तृत विवरण होता है।
25	एबैविलियो अश्यूलीय	Abevillio-Acheulian	पुराण-प्रस्तर युग की एक शैली जिसके अवशेष यूरोप में मिले हैं।
26	एम्फोरा-भृंगार	Amphora	एक विशेष यूनानी सुरापात्र
27	एरेटाईन	Arretine	रोमन शैली की एक कुम्भकला जिसके अवशेष पांडिचेरी आदि स्थानों पर मिले हैं।
28	एलिफस नमेडिकस	Elephus Namadicus	हिमयुग का लुप्त हाथी
29	औपहारिक	Votive	भेंट की हुई वस्तु
30	कत्तल, कत्तर	Flake	पत्थर की कातर या छिलका
31	कलाकृति	Art-object	कला सम्बन्धी वस्तु
32	कलावीथी	Art-gallery	वह भवन जहां कलाकृतियां प्रदर्शित हों।
33	कलाशैली	School of Art	कलाकृतियां बनाने की विशेष शैली
34	कंकर	Gravel	छोटे-छोटे गोल पत्थर, बजरी
35	कंकरीली	Gravelly	कंकरवाली तह, मिट्टी आदि
36	कन्दरा, दरी	Rock-shelter	पहाड़ में बनी प्राकृतिक गुफा
37	कायाकल्प	Overhauling	किसी मशीन या यंत्र को नया जीवन देना।
38	काल-परम्परा	Chronological Sequence	क्रमबद्ध काल-ज्ञान
39	काली भूमि	Black Soil	दक्षिण भारत की भूमि में चार-पांच फुट गहरी ऊपर की तह।
40	कांस्य युग	Bronze Age	वह युग जब मनुष्य कांसे के हथियार औज़ार प्रयोग में लाता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
41	कुटिल-लिपि	Kutila Script	ब्राह्मी लिपि की उत्तर गुप्तकालीन एक शैली।
42	कुम्भकला	Pottery	विशेष विधि के बने हुए मिट्टी के बर्तन
43	केर्न सर्कल, शिलाकूट, निखातस्थाणु निखात, अश्मवृत्त	Cairn-circle	दक्षिण भारत की एक भांति का महाश्म निखात।
44	केल्सीडनी (कर्केतन)	Chalcedony	स्फटिक की जाति का एक चमकीला पत्थर।
45	केंद्रीकरण	Centralization	केन्द्र के अधीन शासन
46	केन्द्रीय सलाहकार मंडल	Central Advisory Board	पुरातत्त्व के विषय में केन्द्रीय सरकार को सलाह देने वाला मंडल।
47	कोष्ठ-निखात (श्वभ्र या भूमिगर्त निखात)	Cist-burial	दक्षिण भारत की एक प्रकार की महाश्म कब्र।
48	क्वार्ट्ज (बुझा पत्थर)	Quartz	स्फटिक के समान कणाश्म पत्थर, स्फटाश्म, स्फटशैल।
49	क्षत्रप	Satrap	कुषाण-साम्राज्य काल में भारत के प्रान्तीय गवर्नर या शासक।
50	खड़िया पत्थर	Steatite, Soapstone	एक प्रकार का कोमल दूधिया पत्थर
51	खनन, उत्खनन	Excavation	पुरातत्त्व-सम्बन्धी खुदाई
52	खनन, (उत्खनन) कला	Excavation Technique	खुदाई कराने की वैज्ञानिक विधि
53	खनन, (उत्खनन) शाखा	Excavation Branch	पुरातत्त्व-विभाग की एक शाखा
54	खारेदार	Fluted	
55	खरोष्ठी	Kharoshthi Script	ईरान की एरेमिक लिपि से उद्धत पश्चिमोत्तर भारत की प्राचीन लिपि।
56	गच	Stucco	चूना, मिट्टी, रेत आदि के योग से बना मसाला।
57	गजपृष्ठ ढेर (कूट निखात)	Barrow	भूमितल से ऊपर उठा हुआ ढेर
58	गरारी गुरिया की बेल	Beed and reel motif	एक प्रकार का अभिप्राय जिसमें गरारी और गोलों की सजावट हो।
59	गर्त-निखात, विवर निखात	Pit-burial	भूमि में गढ़ा खोद कर बनाई हुई कब्र।
60	गुफा मन्दिर, दर्रीगृह	Rock cut Temples	पर्वत को काट कर बनाया हुआ मन्दिर
61	गेरु-वर्ण कुम्भकला	Ochre-coloured pottery	रंग की प्रागैतिहासिक कुम्भकला
62	चाकलेटी या कत्थई रंग	Choclate colour	गहरा भूरा रंग
63	चित्रित सलेटी कुम्भकला या चित्रित धूम्रवर्ण कुम्भकला या	Painted Grey Ware	कुम्भकला जो उत्तरी भारत में महाभारत से सम्बद्ध अनेक प्राचीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
	चित्रित धूसर कुम्भकला।		स्थानों में पाई गई है। इसके सम्बन्ध में उत्खाताओं का विचार है कि यह वैदिक आर्यों की कृति थी।
64	चपटी कुल्हाड़ी (वैदिक वाशी, अश्ममयी और अयस्मयी वाशी)।	Celt	बिना कूपरंध्र के पत्थर अथवा तांबे का कुल्हाड़ा
65	चैत्य	Chaitya	मंदिर, समाधि, यज्ञवेदि
66	छायाचित्र	Photograph	फोटो
67	जरथुस्त्र	Zoraster	पारसियों का धर्माचार्य अथवा देवदूत (पैगम्बर)
68	जीर्णोद्धार	Conservation	जीर्ण इमारतों का संस्कार, मरम्मत
69	ट्रेयर ट्रोव एक्ट (भूमिनिखात निधि अधिनियम)।	Treasure Trove Act	वह एक्ट जिसके अधीन भूमि में गढ़ा हुआ कोष सरकार की सम्पत्ति बन जाता है।
70	डाल्मन-कोष्ठ (शिलागृहरूपी श्वभ्र-निखात। बस्तर की भाषा में हनाल धरिया या दान्यकल।	Dolmenoid Cist	एक प्रकार की दक्षिण भारत की महाश्म समाधि।
71	ढार	Cast	सांचे में ढाली हुई किसी वस्तु की प्रतिकृति, ढार।
72	ताम्रकोष-संस्कृति	Copper-hoard Culture	ताम्रयुग की एक संस्कृति (ई० पू० 1500–1000) जिसके प्रतीक कई तांबे की वस्तुओं के समुदाय उत्तरी भारत में मिले।
73	ताम्रयुग	Copper Age	वह प्रागैतिहासिक युग जब मनुष्य तांबे के हथियार औज़ार प्रयोग में लाता था।
74	त्रिकोण, त्रिभुज	Triangles	इस आकार के सूक्ष्माश्म साधन।
75	तोरण	Ornamental doorway	अलंकृत प्रवेश-द्वार, जैसे सांची के स्तूप का तोरण।
76	दीर्घवृत्ताकार या अण्डाकार	Elliptical	दीर्घवृत्त के आकार वाला
77	दो रुखे हथियार	Bifaces	पत्थर के दोधारे हथियार
78	धर्मचक्र-प्रवर्तन		सारनाथ में बुद्ध का कौंडिन्य आदि अपने पांच शिष्यों को बौद्धधर्म का पहला उपदेश।
79	धर्म-राजिका स्तूप		वह स्तूप जिसमें बुद्ध की अस्थियाँ पढ़ी थीं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
80	नदी-स्कंध	River terrace	नदी के दोनों किनारों पर बनी हुई प्राकृतिक मेधियां या चबूतरे ।
81	नृतत्त्व-शास्त्री	Anthropologist	मनुष्य जाति के विकास का अध्येता
82	नवीन-प्रस्तर युग	New Stone Age	वह युग जब मनुष्य पालिश किये हुए पत्थर के शस्त्रोपकरणों का प्रयोग करता था ।
83	नवीन-प्रस्तरयुगीन	Neolithic	नवीन-प्रस्तर युग का
84	निर्वाण-(परिनिर्वाण) मंदिर, निर्वाण-(परिनिर्वाण) स्तूप		वे स्तूप और मंदिर जो कुशीनगर में उस स्थान पर बनाए गये थे जहां बुद्ध ने निर्वाण प्राप्त किया था ।
85	पर्वतोत्कीर्ण मंदिर या गुफा-मंदिर	Rock-cut temples	पर्वत को उकेर कर बनाया हुआ मंदिर या भवन ।
86	पर्सिपालिस	Persepolis	ईरान में आहामनीस (हकमी) वंश के राजाओं के महलों का खंडहर ।
87	पंक, नदी पंक	Silt	नदी में बाढ़ों के द्वारा लाया हुआ कीच ।
88	पंकिल	Silty	कीच के जमाव वाली तह
89	पार्ट 'बी' राज्य	Part 'B' States	जो पहले देसी रियासतें थीं
90	पुरातत्त्व	Archaeology	प्राचीन वस्तुओं और विषयों का विज्ञान
91	पुरातत्त्व-रसायन शास्त्री	Archaeological Chemist	विशेषज्ञ जो प्राचीन वस्तुओं को रासायनिक विधि से सुरक्षित रखता है।
92	पुराण-प्रस्तर युग	Old Stone Age	वह युग जब असभ्य मनुष्य पत्थर के बेडौल हथियार और औज़ार प्रयोग में लाता था ।
93	पुराण-प्रस्तरयुगीन	Palaeolithic	पुराण-प्रस्तर युग का
94	पूर्वरूप	Prototype	किसी वस्तु का प्रारम्भिक रूप
95	पोर्ट होल (पार्श्व छिद्र)	Port Hole	दक्षिण भारत की महाश्म-कब्रों की पार्श्ववर्ती शिला में गोल छेद ।
96	प्रतिकृति	Copy	किसी वस्तु की यथार्थ नकल
97	प्रतीच्य (पश्चिमी) मंडल	Western Circle	पुरातत्त्व-विभाग का पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल ।
98	प्रस्तर-कुठार संस्कृति	Stone-Axe Culture	प्रागैतिहासिक संस्कृति जिसमें पत्थर का चपटा कुल्हाड़ा प्रयोग में आता था ।
99	स्तर-युग	Stone Age	वह युग जब मनुष्य पत्थर के शस्त्रोपकरण प्रयोग करता था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
100	प्राकृतिक भूतल	Natural Soil	बस्ती के नीचे की अछूती भूमि
101	प्रागैतिहासिक	Prehistoric	ऐतिहासिक काल के पहले का
102	प्रागैतिहासिक पुरातत्त्वज्ञ	Prehistorian	प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व का ज्ञाता
103	प्राचीन-स्मारक संरक्षण-अधिनियम	Ancient Monuments preservation Act	1904 की वह धारा जिसके अधीन स्मारकों का संरक्षण होता था।
104	प्राच्य मंडल, पूर्वी मंडल	Eastern Circle	भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण का पूर्वी क्षेत्र का मंडल।
105	प्रादेशिक	Regional	क्षेत्र विशेष से सम्बन्ध रखने वाला
106	प्रारम्भिक ऐतिहासिक काल	Early Historical Period	ईसवी सन् के आरम्भकाल के आस-पास की शताब्दियां।
107	प्लाइस्टोसीन, महायुग प्रातिनूतन या सन्नूतन युग	Pleistocene Period	भौगोलिक चतुर्थ महायुग जिसमें प्रस्तर युग के मनुष्य का आविर्भाव हुआ।
108	फलक, मूर्तिफलक	Sculptured Stele	अलंकरणों वाला शिलापट्ट
109	फियांस (सुन्दर काचदार मिट्टी)	Faience	चीनी मिट्टी के समान एक उत्तम मिट्टी
110	फिलिग्री या कारचोबी काम	Filigree Work	सोने-चांदी के बारीक तार का काम
111	बटखरा	Stone Weight	पत्थर का बाट
112	मूल्यवान	Semi-precious	कीमती
113	बास नमेडिकस	Bos Nomadicus	हिमयुग का वन-वृषभ जो अब लुप्त हो गया है।
114	बांझ तह	Sterile layer	टीले में मिट्टी की वह तह जिसमें कोई मानव हस्त-कृति न मिले।
115	बोगाज़ कोई	Boghaz Koi	लघु एशिया में हिटाईट लोगों की प्राचीन राजधानी खत्तीशिश का खंडहर।
116	बोल्डर कांग्लामोरेट (गोलाश्म-सपिण्डन, पहाड़ी दालो गालो)	Boulder Conglomerate	हिमयुग में हिमराशि के दबाव से शीर्ण शिलाएं।
117	भग्नावशेष	Relics	खंडहर, वास्तुखंड आदि
118	भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण	Archaeological Survey of India	भारत सरकार का वह विभाग जो स्मारकों का संरक्षण, उत्खनन आदि कराता है।
119	भारतीय लिपि शाखा	Indian Epigraphy Branch	वह शाखा जो प्राचीन अभिलेखों का अध्ययन और प्रकाशन करती है।
120	भित्तिचित्र	Wall Paintings	दीवारों पर बने हुए रंगीन चित्र
121	भू-कालमान विज्ञान	Geo-chronology	पृथ्वी के स्तरों की परीक्षा से काल का निर्धारण करना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
122	भूकालमान-वेत्ता	Geo-Chronologist	वह विशेषज्ञ जो इस प्रकार काल निर्धारण करने में प्रवीण हो ।
123	मध्यकाल	Mediaeval Times	प्राय: आठवीं से 16वीं सदियों के बीच का काल ।
124	मध्य-प्रस्तर युग	Middle Stone Age	पुराण और नवीन प्रस्तर युगों के बीच का काल ।
125	मध्य (उत्तर) प्रस्तर युगीन	Mesolithic	मध्य-प्रस्तर युग का
126	मलकूप, मण्डलकूप	Ring-wells	दूषित पानी आदि फेंकने की कुइयाँ ।
127	मलगर्त (वर्चकूप)	Soak-pit	मल फेंकने का गढ़ा ।
128	महाचैत्य		आंध्र शैली का भूमिस्थिति में चक्राकार बौद्ध चैत्य ।
129	महायान	Mahayana	बौद्धों का उत्तरकालीन सम्प्रदाय ।
130	महाश्म राक्षसगुल्लु (तेलुगु), पाण्डुकुलि (तमिल) ।	Megaliths	बड़े आकार के पत्थरों के बने स्मारक ।
131	महाश्म-कब्रें	Megalithic Burials	बड़ी शिलाओं की बनी कब्रें
132	मंडल	Circle	पुरातत्त्व विभाग की प्रान्तीय शाखा
133	मंडल-कूप	Ringwells	पकी मिट्टी की चकियाओं के बने मलकूप ।
134	मानचित्र	Map	पड़ा नक्शा, नक्शा
135	मिस्रदेश	Egypt	अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर में प्राचीन देश जिसमें नीलनद बहता है ।
136	मुद्रा, मुहर	Seal	ठप्पा लगाने की मुहर
137	मुद्राछाप	Sealing, Seal-impression	कोमल द्रव्य पर मुद्रा के दबाने से लगीं हुई छाप ।
138	मुद्राशास्त्र या मुद्रा विज्ञान	Numismatics	प्राचीन सिक्कों के पढ़ने की विद्या
139	मृत्तिका-विश्लेषण	Soil-analysis	रासायनिक विधि से मिट्टी के योग की परीक्षा ।
140	मेगेलिथिक (राक्षसगुल्लु सम्बन्धी, सोडर सम्बन्धी) ।	Megalithic	'महाश्म' देखिये
141	मेगेडेलेनियन	Magadalenian	यूरोप की एक प्रस्तर-युगीन संस्कृति जो सर्वप्रथम ला मेगडेलीन (फ्रांस) में मिली ।
142	मेगेरान कुम्भकला	Magaron Ware	एक विदेशी कुम्भकला
143	मेनहिर, सिल बिरल (तमिल)	Menhir	एक प्रकार का महाश्म स्मारक
144	मेसोपोटेमिया	Mesopotamia	अरब में दजला और फरात नदियों के बीच का देश ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
145	रक्ताश्म (ब्लडस्टोन)	Bloodstone	लहू के रंग का कीमती पत्थर
146	रचनात्मक वास्तु	Structural monument	ईंट, पत्थर आदि से बनी हुई इमारत
147	रसायन-शास्त्री	Chemist	पदार्थों के गुण-दोषों का जानने वाला
148	राष्ट्रीय स्मारक	National Monument	वे स्मारक जो केन्द्रीय सरकार ने अपने संरक्षण में ले लिये हैं।
149	'रूलेट' (चक्रांकित) अभिप्राय (दन्तुरितखांचा)	Roulette design	एक प्रकार का अलंकरण अभिप्राय जो रोमन काल की कुम्भकला पर मिलता है।
150	रेखाचित्र	Drawing	रेखाओं का बना चित्र, खाका
151	लिपिशास्त्र या लिपि विज्ञान	Epigraphy	प्राचीन लिपियों के पढ़ने की विद्या
152	लिपिशास्त्री	Epigraphist	प्राचीन लिपियों का विशेषज्ञ
153	लेटराइट (मुरम)	Laterite	चिकनी मिट्टी और बालू के योग से बना हुआ पत्थर जो दक्षिण भारत में मिलता है।
154	वर्गीकरण	Classification	वर्गों या श्रेणियों में विभक्त करना
155	वर्षा-बहुल युग	Pluvial Cycle	वह युग जब पृथ्वी पर बड़े ज़ोर की बारिशें होती थीं।
156	वास्तुकला	Architecture	स्थापत्य कला, वास्तु बनाने की कला
157	वास्तु खंड	Architectural Fragments	इमारतों के भग्नावशेष
158	विलिखित	Incised	नोकदार औज़ार से लिखा हुआ
159	वैधानिक सुधार	Constitutional Reforms	लोकसभा के द्वारा बनाए गए विधान के अधीन जो सुधार हों।
160	शलाका-मुद्रा	Cylinder Seal	गोल सलाख के आकार की मुद्रा जो मेसोपोटेमिया की एक विलक्षणता है।
161	शव-भांड	Burial-urn	मटका जिसमें शव रखा जाए
162	शव-मंजूषा	Sarcophagus	मुर्दा रखने की बड़ी पेटी या संदूक
163	संरक्षण	Protection	प्राचीन स्मारकों की रक्षा
164	'सत्ति-सत्ता' मूर्तियां	Satti-Satta Figures	सतियों की स्मृति में बनाई हुई दम्पत्ति-मूर्तियां।
165	सर्व-निर्देशक, महानिदेशक या मुख्याध्यक्ष	Director-General	डाइरेक्टर जनरल
166	सर्वेक्षण	Survey	वैज्ञानिक जांच पड़ताल
167	संगीति (बौद्ध)	Buddhist Conference	बौद्ध धर्माचार्यों की विराट् सभा
168	संग्रहालय	Museum	वह इमारत जहां प्राचीन वस्तुएं संगृहीत और प्रदर्शित हों।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)	(2)	(3)	(4)
169	संघाराम	Monastery	बौद्ध-मठ
170	संहत रिपोर्ट	Consolidated Report	बृहत् रिपोर्ट
171	सिगलास	Siglos	ईरान की प्राचीन मुद्रा
172	सिग्मा	Sigma	यूनानी वर्णमाला का एक अक्षर
173	सिंधु-सभ्यता	Indus Civilization	वह सभ्यता जो पांच हजार वर्ष पहले सिंध के काठे में व्याप्त थी।
174	सूक्ष्माश्म	Microliths	कड़े पत्थर के सूक्ष्म आकार के उपकरण।
175	सूची	List, catalogue	क्रमबद्ध विवरण
176	सूचीकरण	Listing, cataloguing	सूचीबद्ध करना
177	सूर्यकान्तमणि या कपिशमणि	Jasper	एक कीमती पत्थर
178	सेक्शन, व्यत्यस्त दर्शन, छेवा	Section	काट, मोटाई, छेदन, खंड
179	सेल्ट (वाशी)	Celt	चपटा कुल्हाड़ा, बिना नली या रंध्र-कूप के।
180	सोहन-संस्कृति	Sohan Culture	पुराण प्रस्तरयुग की संस्कृति जो पश्चिमोत्तर भारत के पोटवार प्रान्त में सोहन नदी के तटों पर व्याप्त थी।
181	स्तर	Stratum	टीले में विविध बस्तियों की उत्तरोत्तर तहें।
182	स्तर-रचना स्तर-विज्ञान	Stratigraphy	उत्तरोत्तर तहों की रचना का यथार्थ ज्ञान।
183	स्मारक	Monuments	प्राचीन वास्तु आदि
184	हड़प्पा-संस्कृति	Harappa-Culture	देखो 'सिंधु-सभ्यता'
185	हथ-कुल्हाड़ा	Hand-axe	पत्थर का भारी कुल्हाड़ा
186	हम्मुराबी	Hammurabi	बेबीलोन का प्रसिद्ध राजा (ई० पू० 1792–1750)।
187	हर्मिका	Harmika	बौद्ध स्तूप के अण्ड और छत्र के बीच का भाग।
188	हस्तकृति, दस्तकारी	Industry	मनुष्य के हाथ की बनी विशेष लक्षणों वाली वस्तुएं।
189	हिमयुग	Ice Age	वह युग जब पृथ्वी का बहुत बड़ा भाग उत्तर और दक्षिण में आत्यन्तिक हिमाटोप से ढका था।
190	होलोसीन युग	Holocene Age	अन्तिम या आधुनिक भौगोलिक युग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

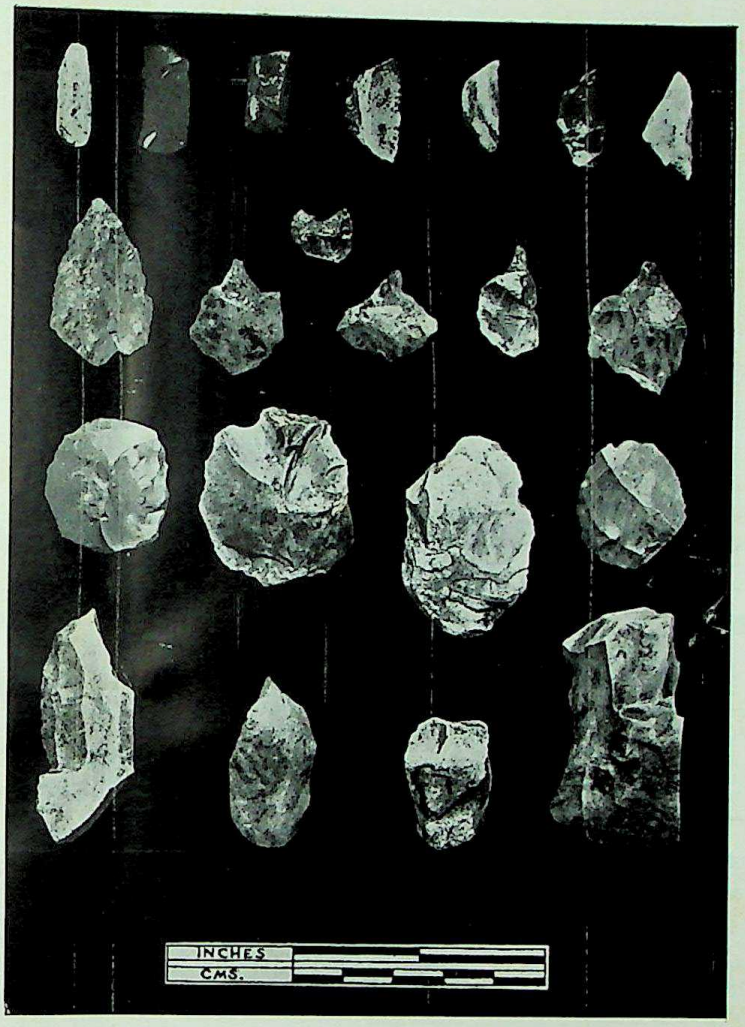

(क) बीरभानपुर : सूक्ष्माश्म उपकरण (पृ० 3)

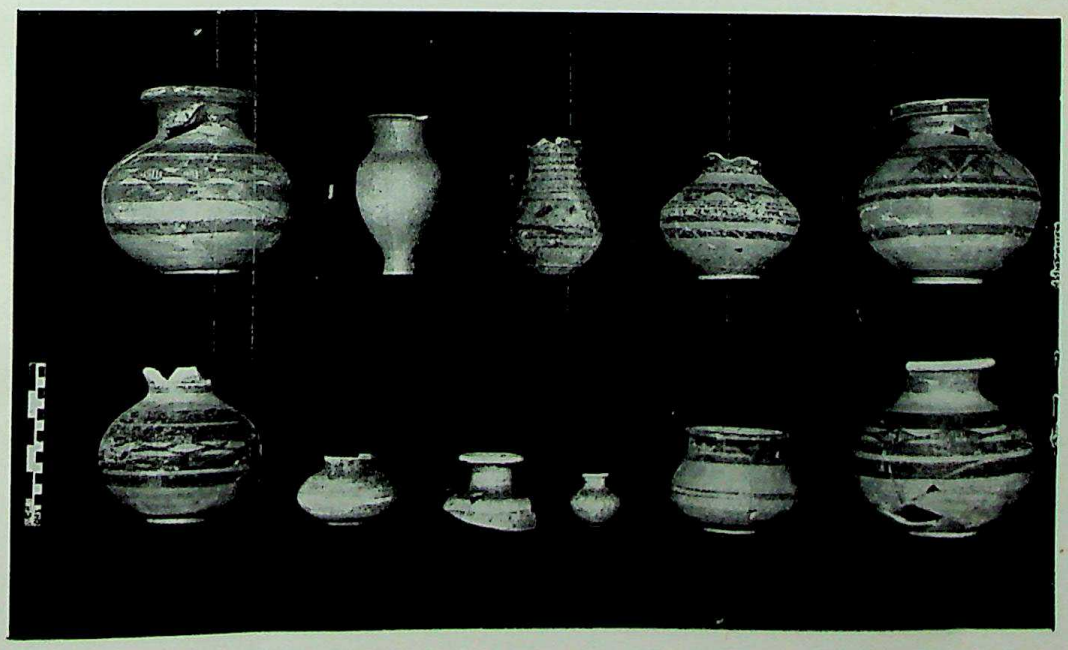

(ख) रोपड़ : हड़प्पा संस्कृति के मृत्पात्र (पृ० 3)

M1DGA/63—7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

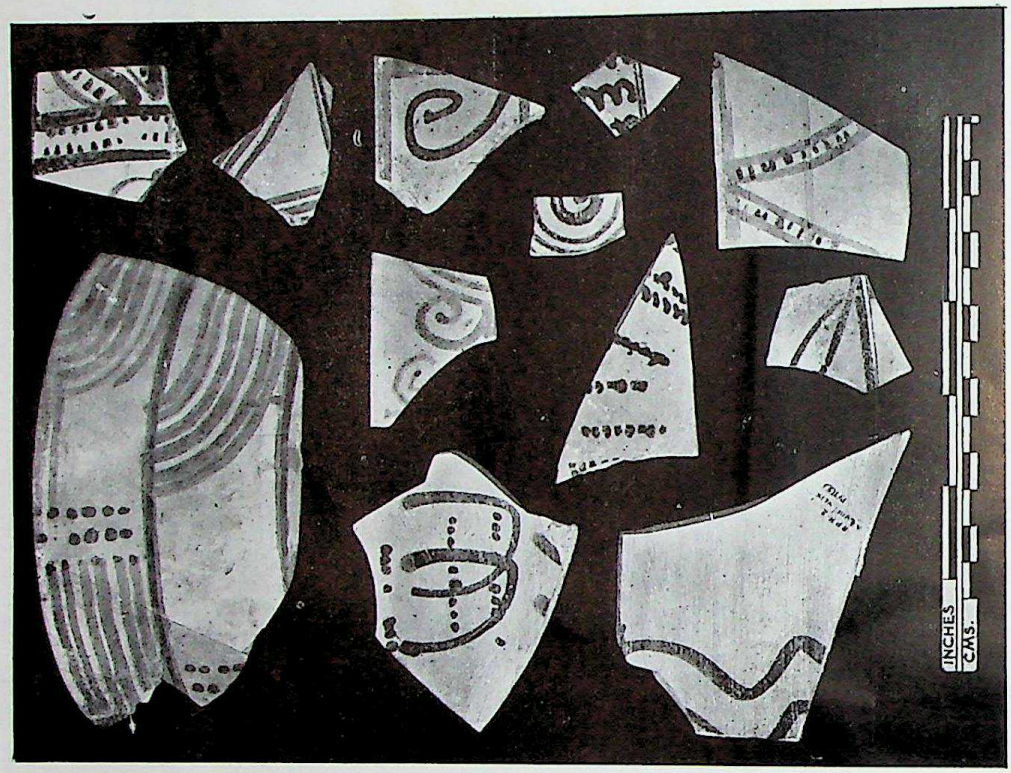

(ख)

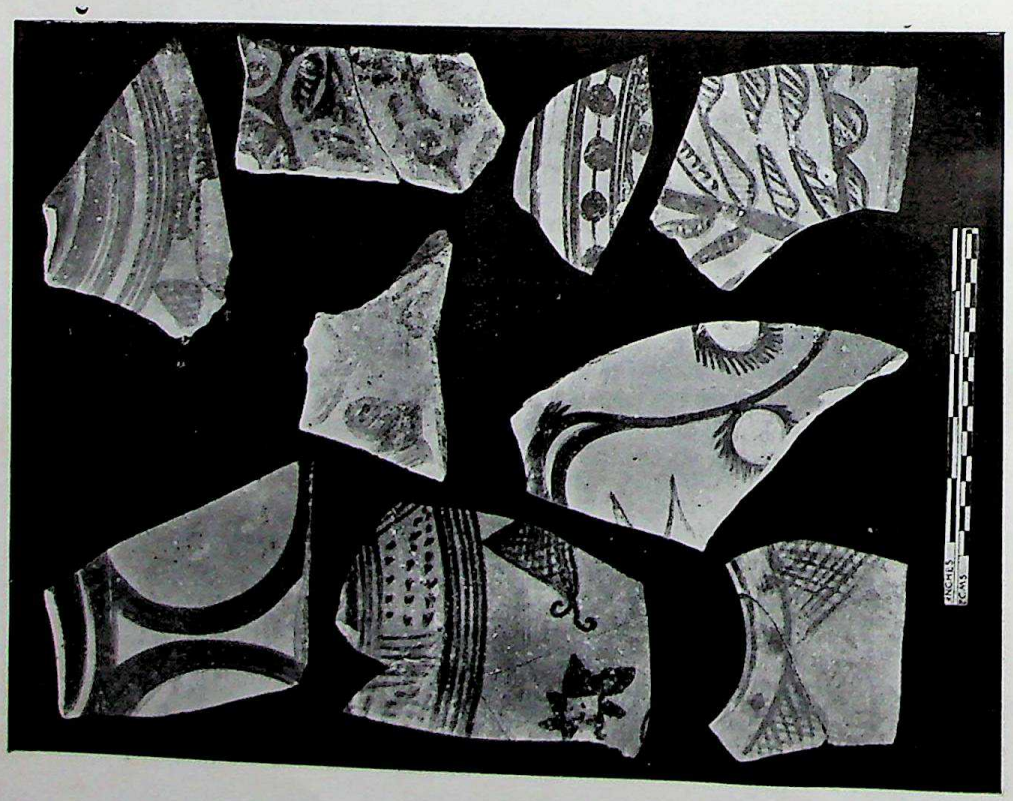

(क)

रोपड़ : चित्रित ठीकरे (क) हड़प्पा कुम्भकला, (ख) चित्रित सलेटी कुम्भकला (पृ० 3)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

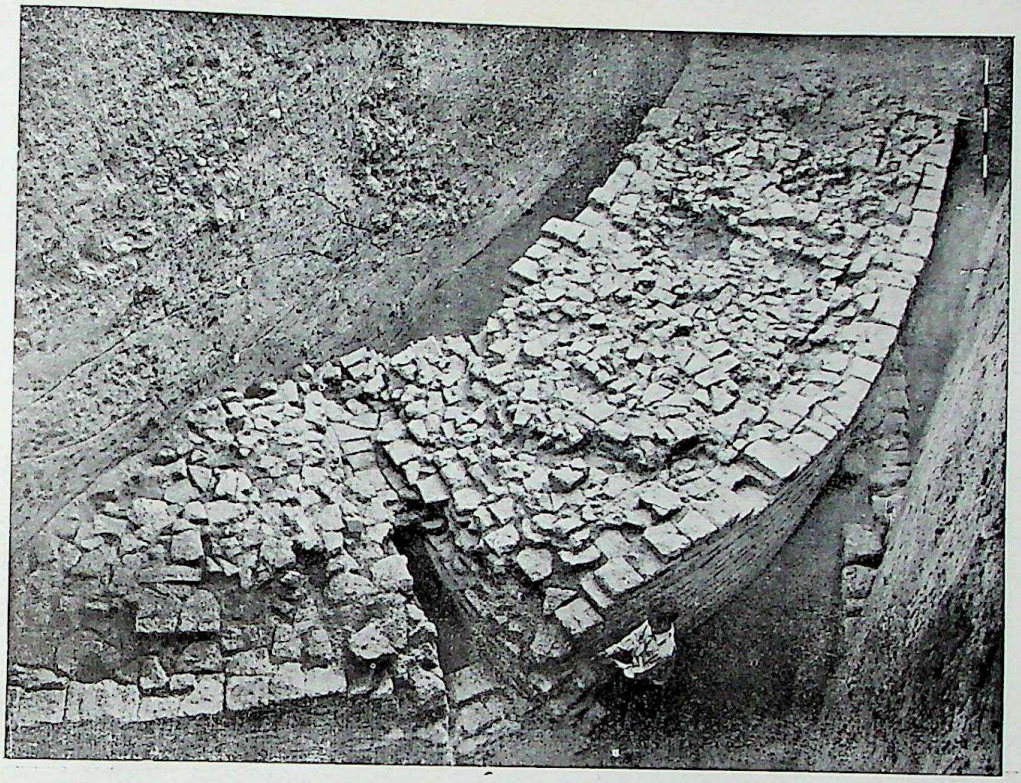

रोपड़ : बड़ी दीवार (काल 3)

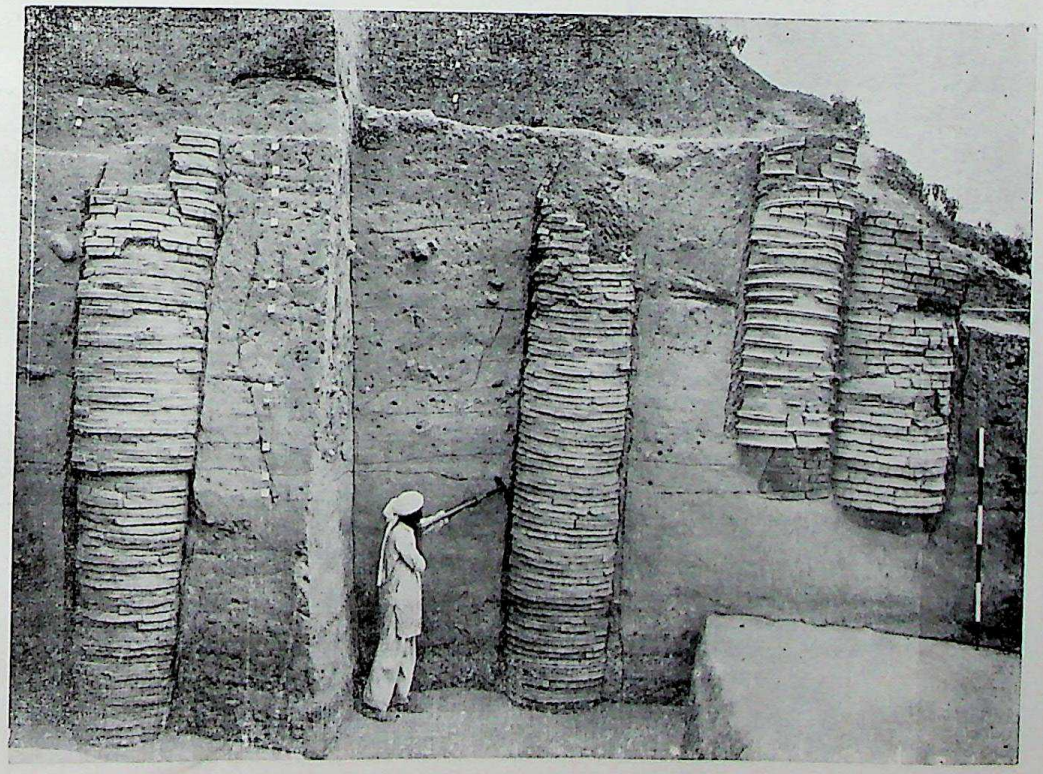

रोपड़ : मिट्टी के मण्डल-कूप, तृतीय काल (पृ० 4)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

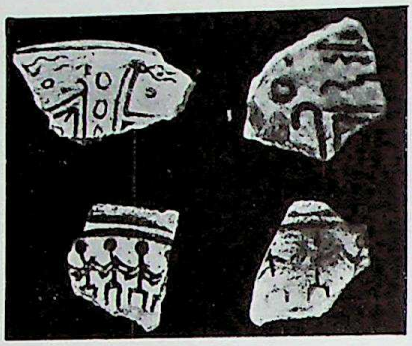

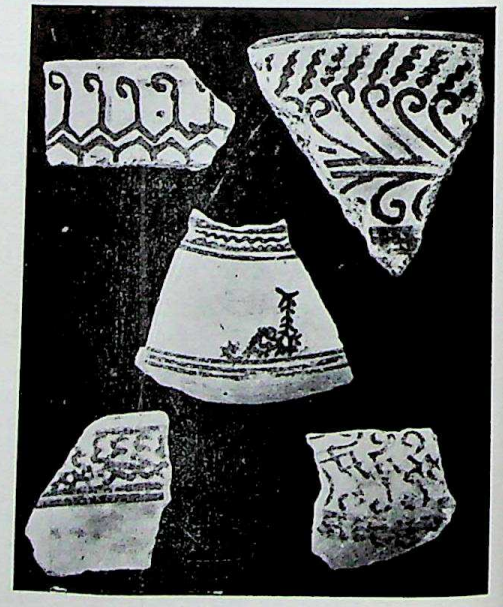

महेश्वर : चित्रित ठीकरे (पृ० 5)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कौशाम्बी : घोषिताराम विहार का एक भाग, विहंगम दृश्य (पृ० 6)

फलक 6

(क)

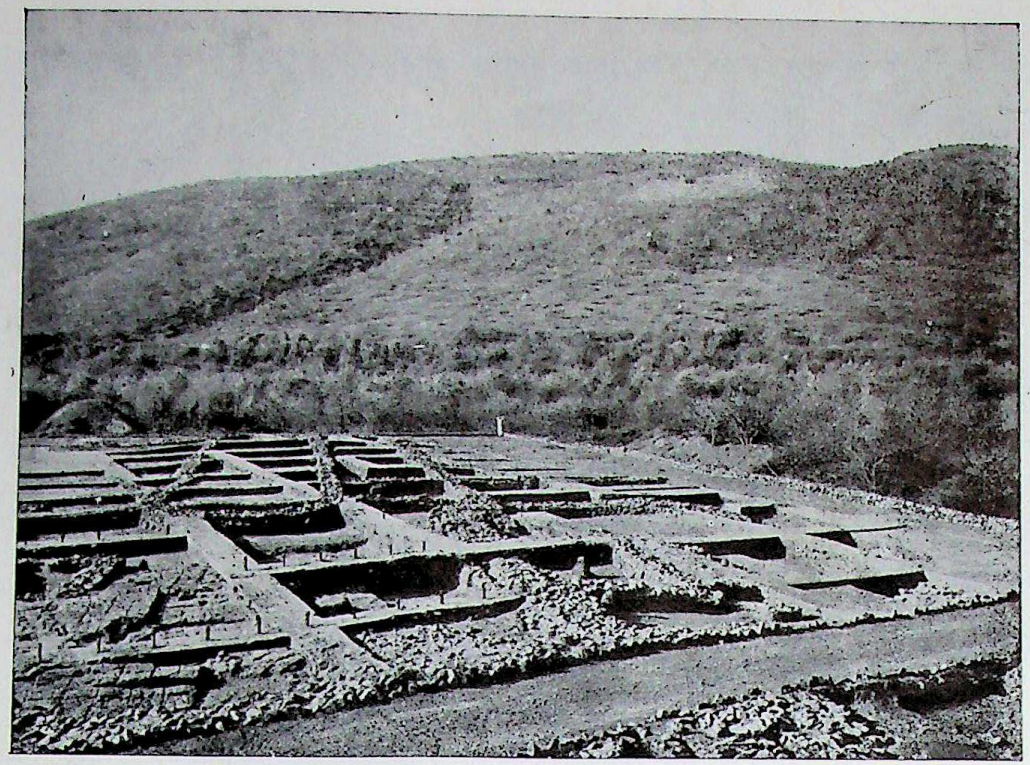

(ख)

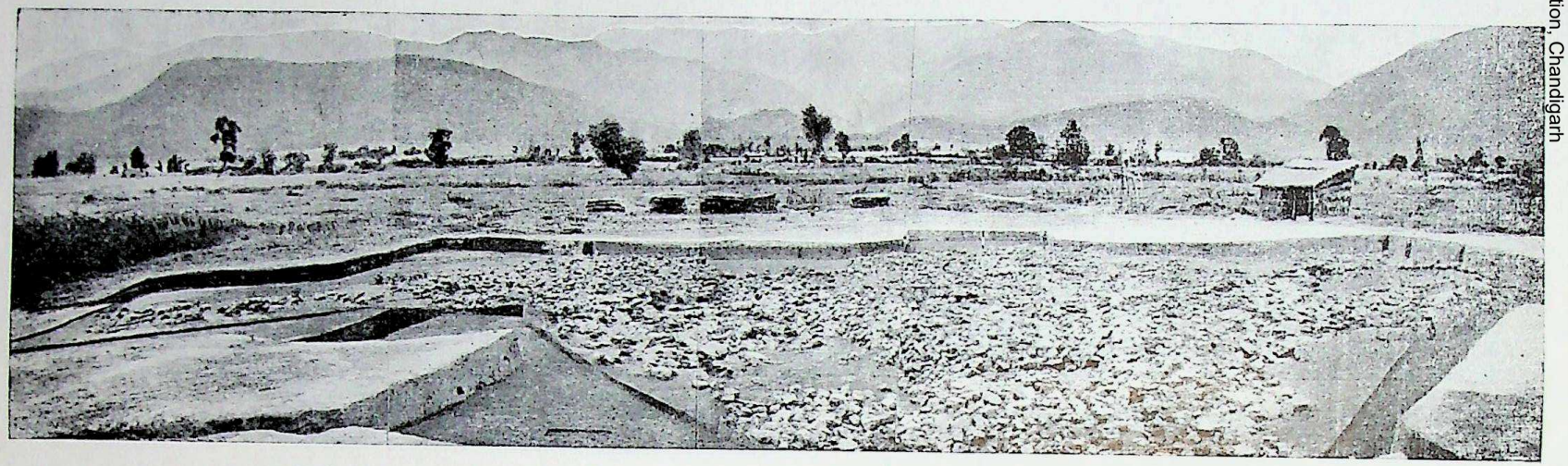

(क) राजगिर : उत्खात अवशेष, विहंगम दृश्य (पृ० 5), (ख) जगत्ग्राम : अश्मेध वेदि 1, विहंगम दृश्य (पृ० 7)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

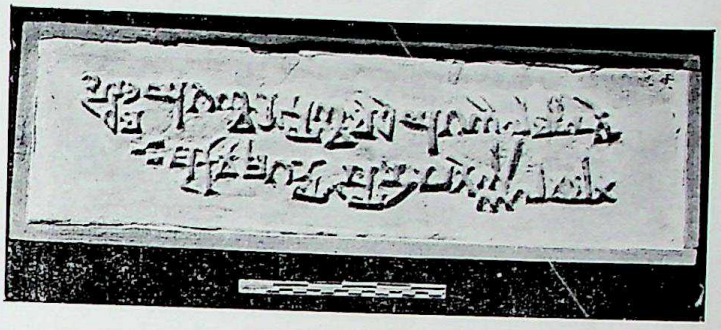

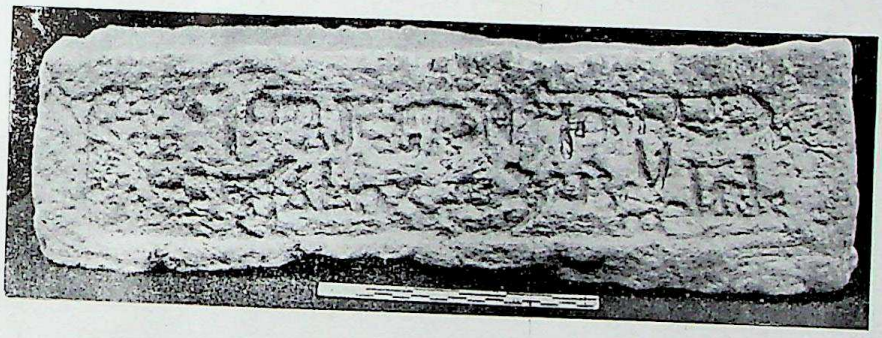

जगत्ग्राम : लेखांकित ईंटें (पृ० 7)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

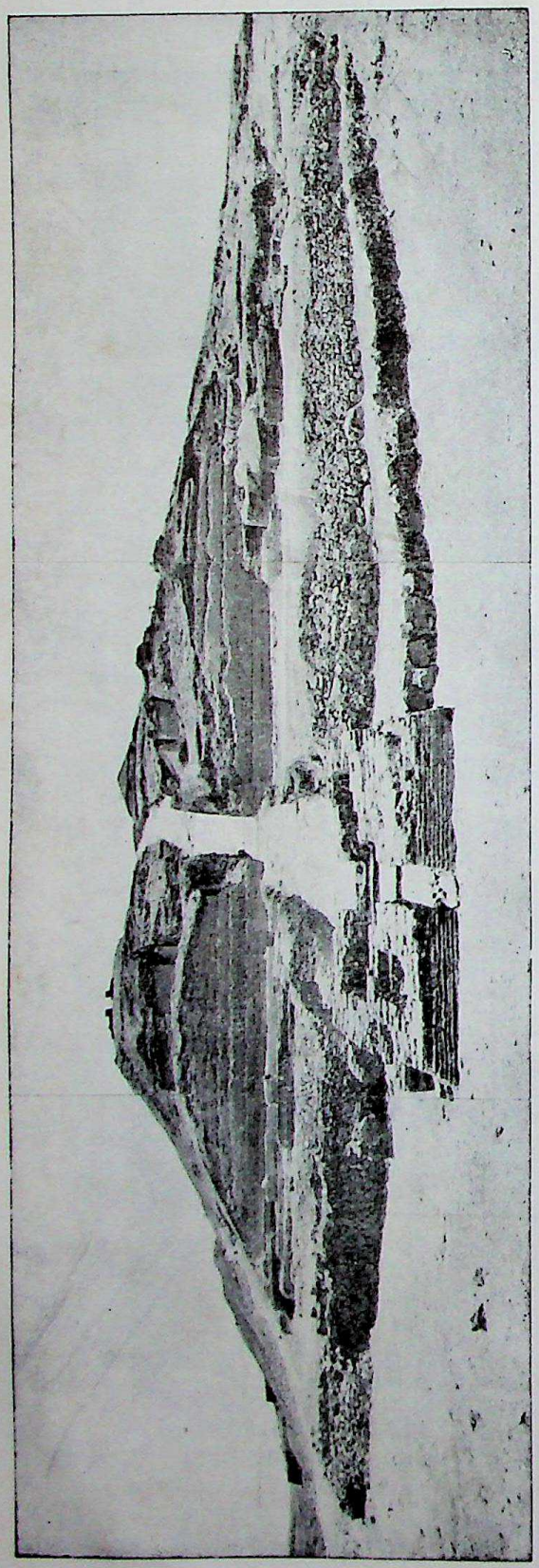

(क)

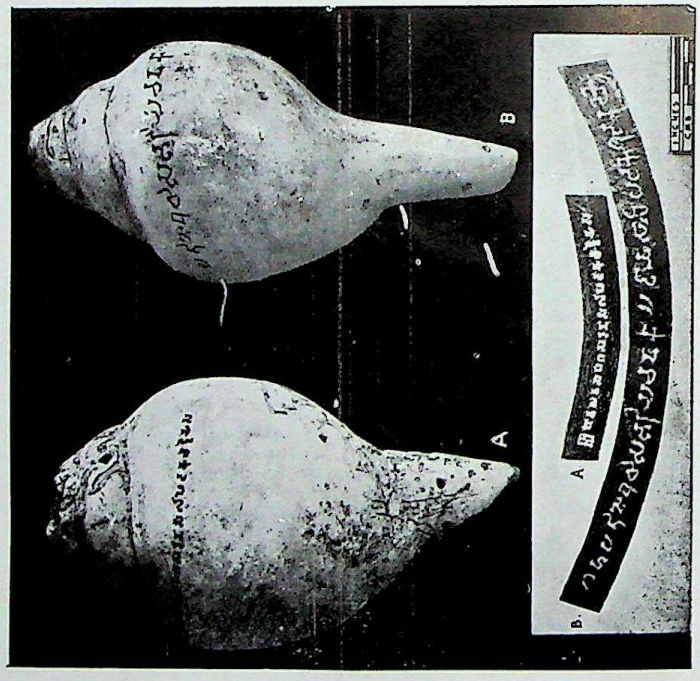

(ख)

(क) राजगिर : उत्खनन, विहंगम दृश्य, (ख) शालिकुण्डम : लेखांकित शंख (पृ० 8)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

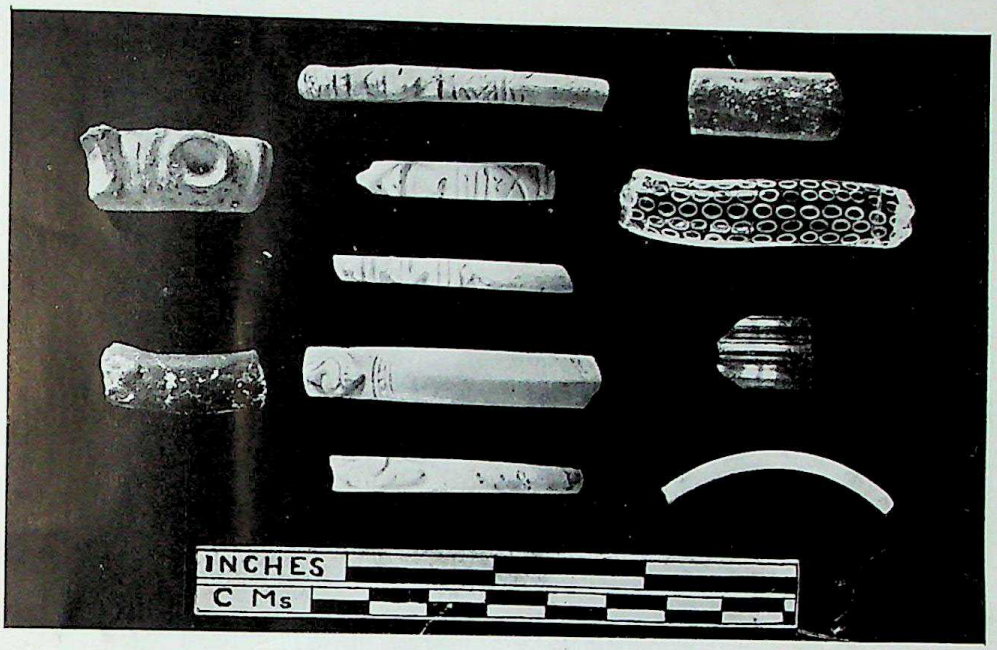

पल्लवमेडु : विभिन्न प्रकार की चूड़ियां (पृ० 8)

सीरपुर : प्रस्तर मूर्तियां (पृ० 8)

M1DGA/63—8

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

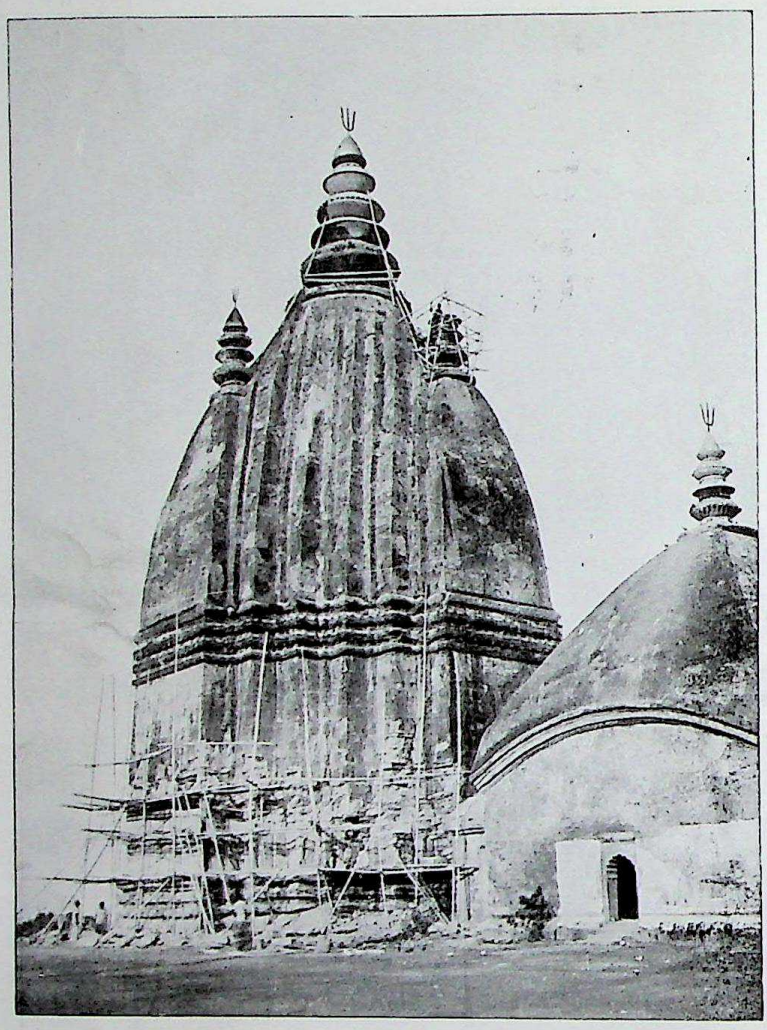

(क) शिबसागर : शिबडोल मन्दिर (पृ० 10)

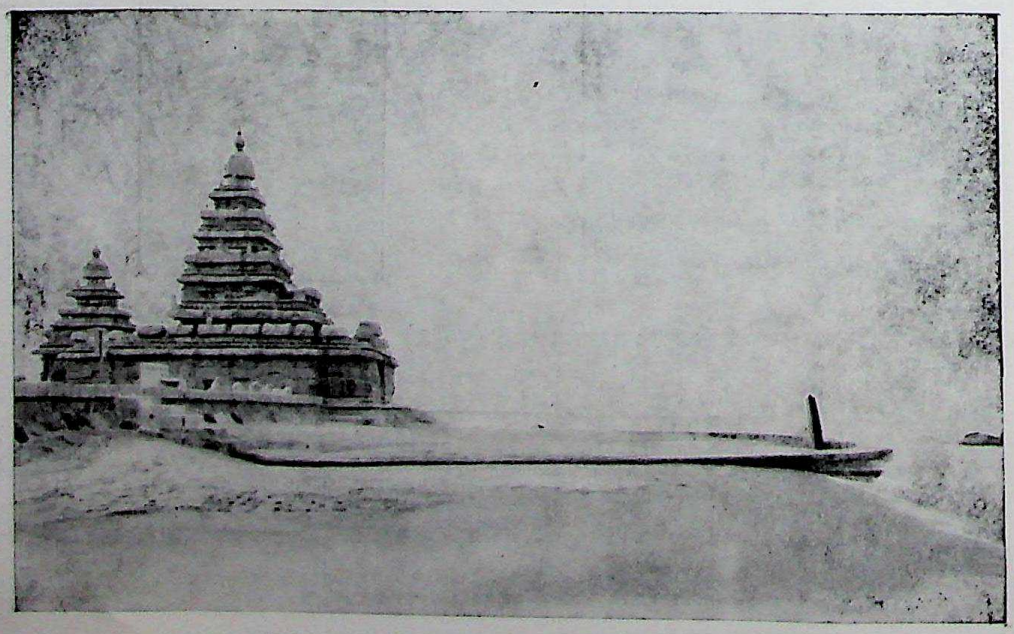

(ख) महाबलीपुरम् : तटवर्ती मन्दिर, विहंगम दृश्य (पृ० 10)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

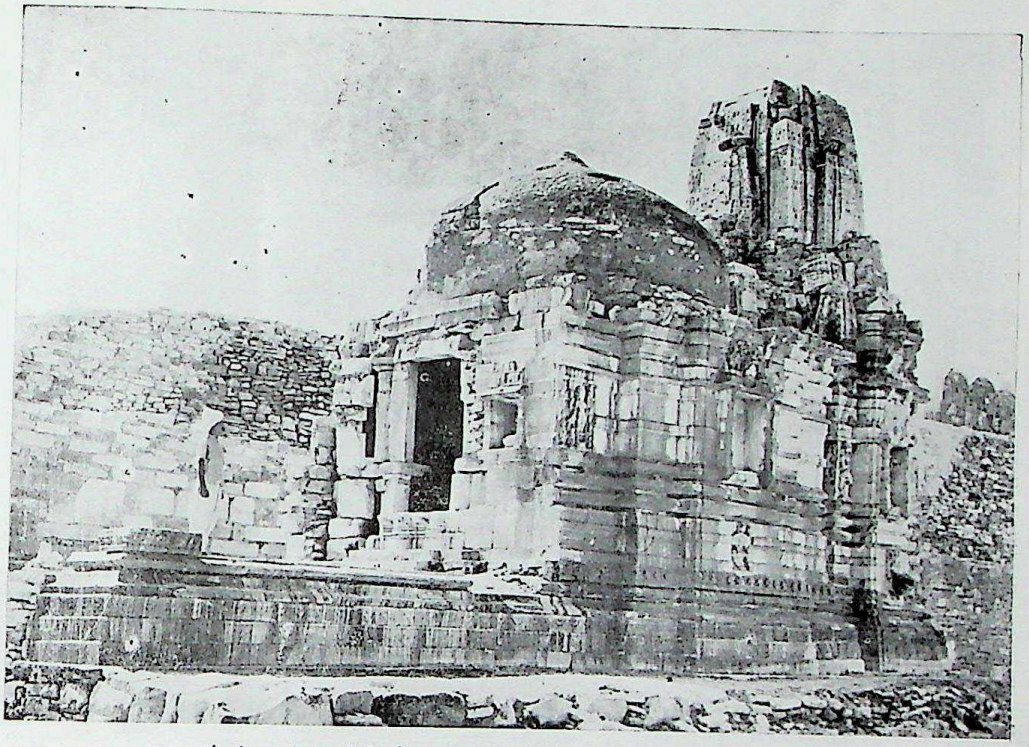

(क) श्रृंगारचौरी जैन मन्दिर, जीर्णोद्धार के अनन्तर (पृ० 11)

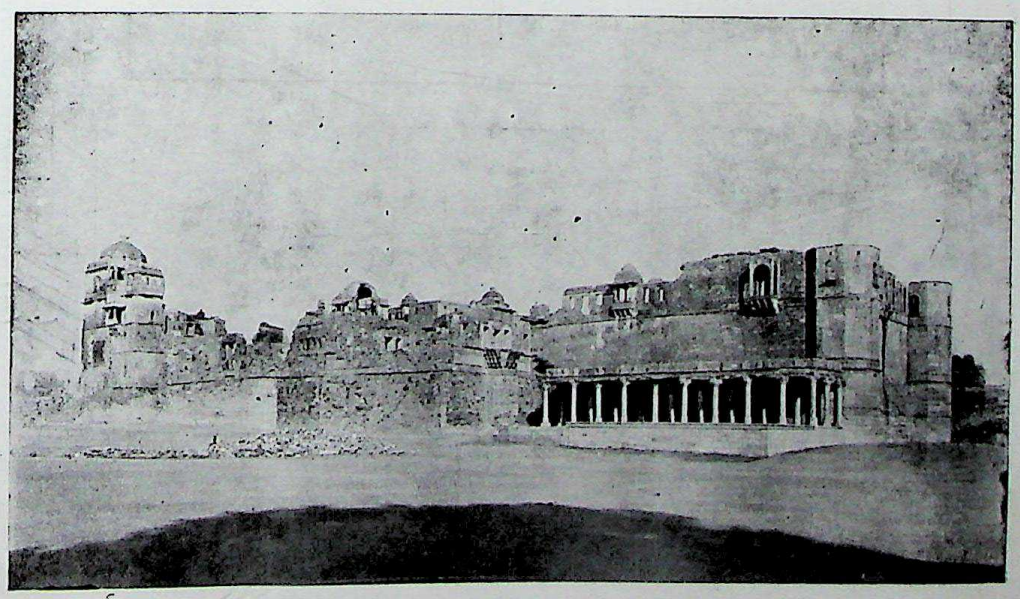

(ख) चित्तौड़गढ़ का किला : राणा कुम्भा का महल और दीवाने आम (पृ० 11)

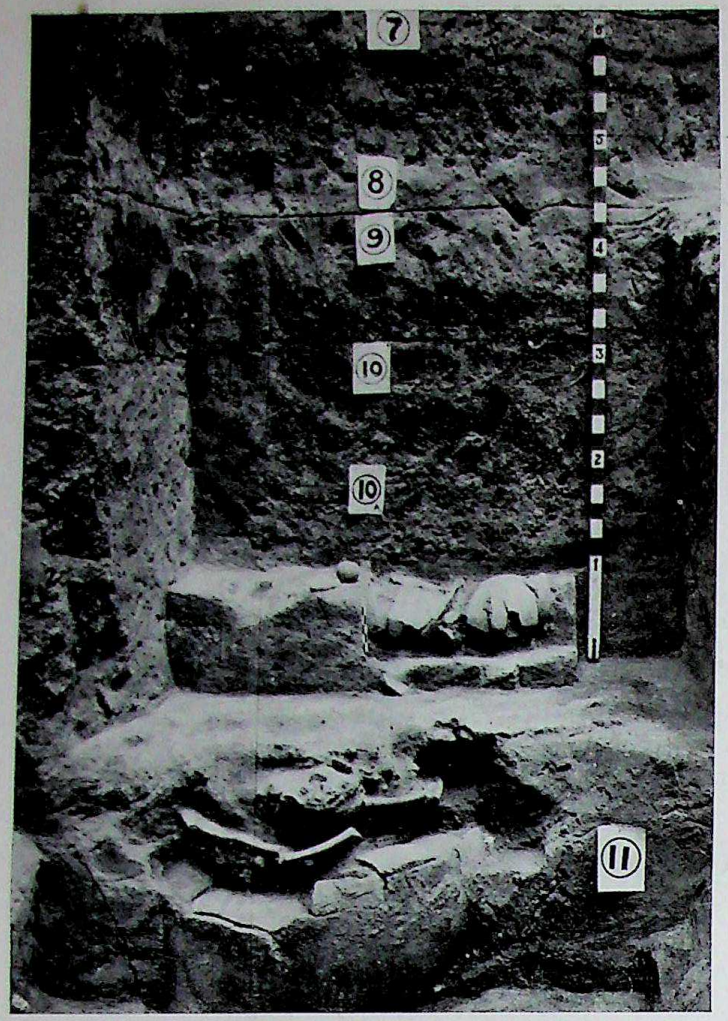

(क)

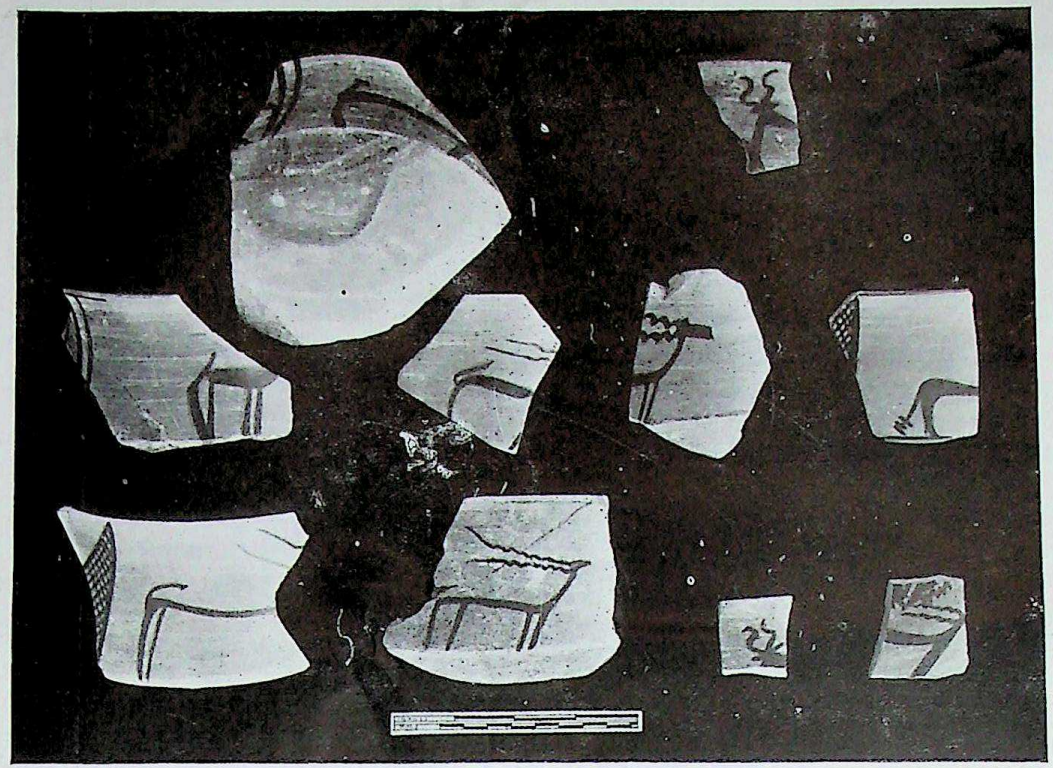

(ख)

(क) नेवासा : उत्खनन, मूलस्थिति में शवभाण्ड तथा प्रस्तर कुठार (पृ० 11)
(ख) रंगपुर : हड़प्पा संस्कृति से परवर्ती काल के चित्रित ठीकरे (पृ० 14)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

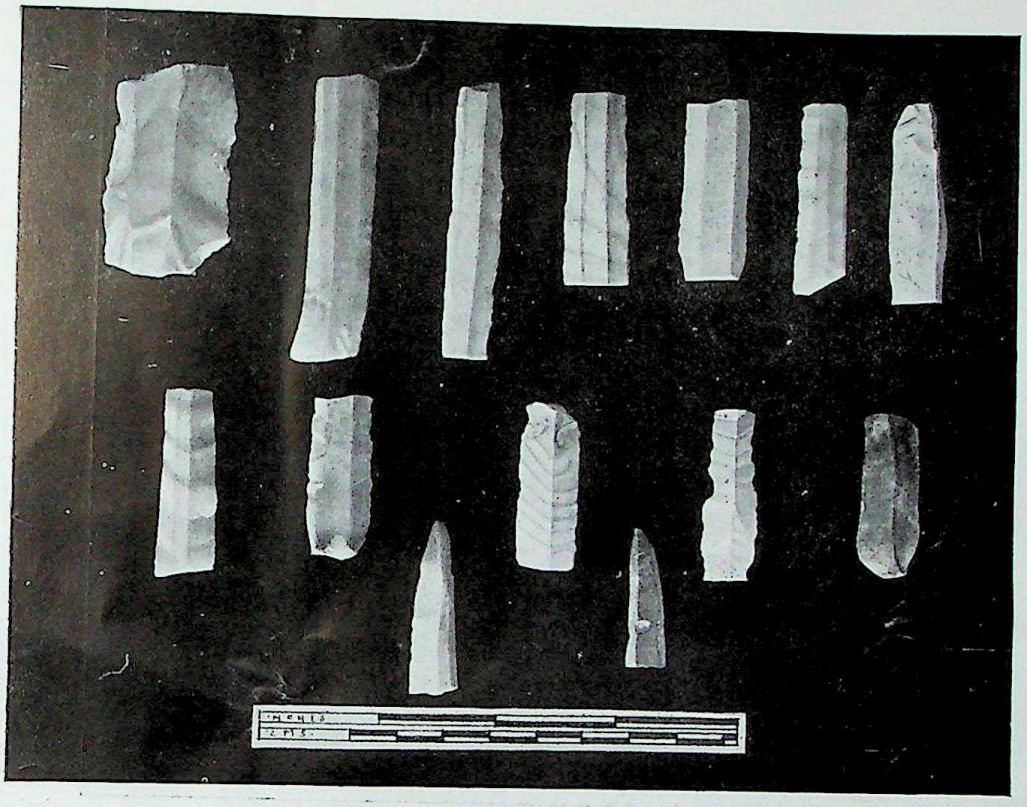

(क) लोथल : चकमक (चर्ट) पत्थर के सूक्ष्माश्म उपकरण (पृ० 14)

(ख) लोथल : हड़प्पा संस्कृति की मुद्राएं तथा मुद्राछापें (पृ० 14)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

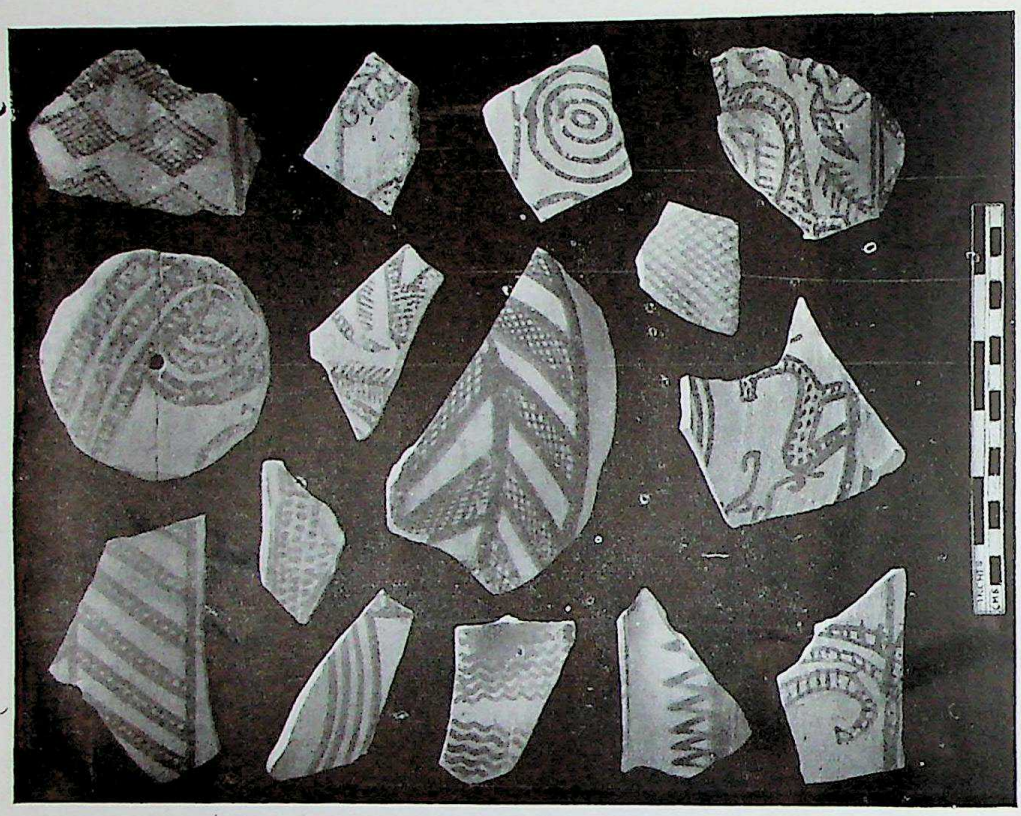

(ख)

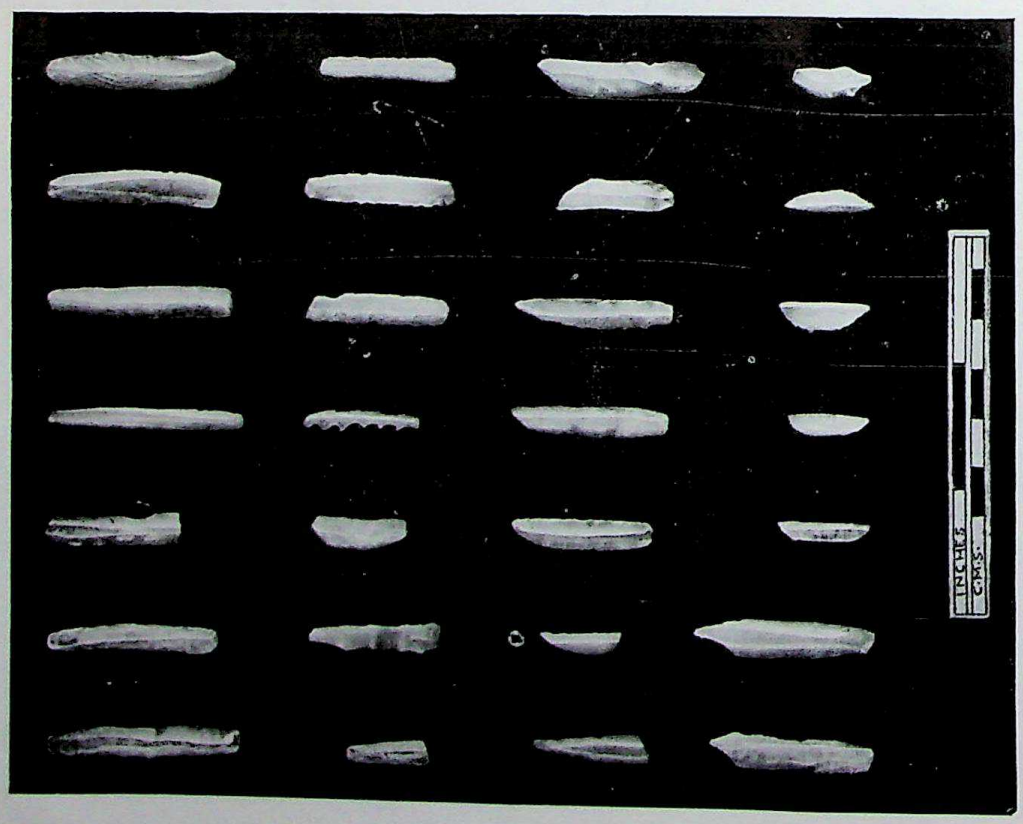

(क)

प्रकाश : (क) सूक्ष्माश्म उपकरण, (ख) काल 1 के चित्रित ठीकरे (प० 14)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख)

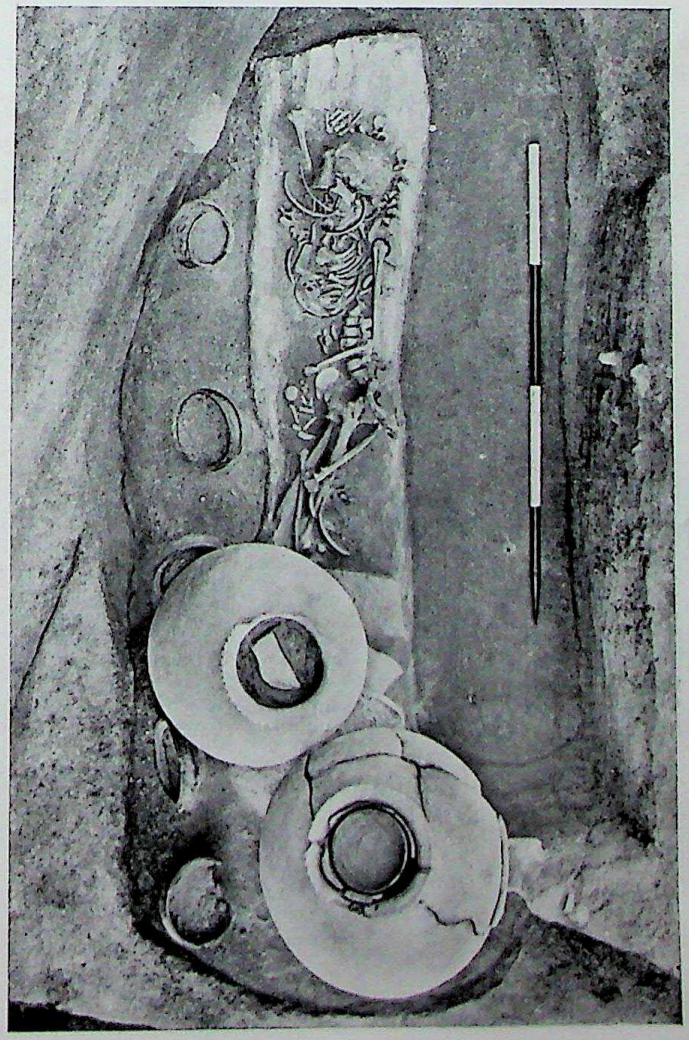

(क)

(क) मास्की : एक महाश्मयुगीन शवाधान (पृ० 5); (ख) कौशाम्बी : रथारूढ़ पुरुषांकित मृन्मय परिचक्र (पृ० 17)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

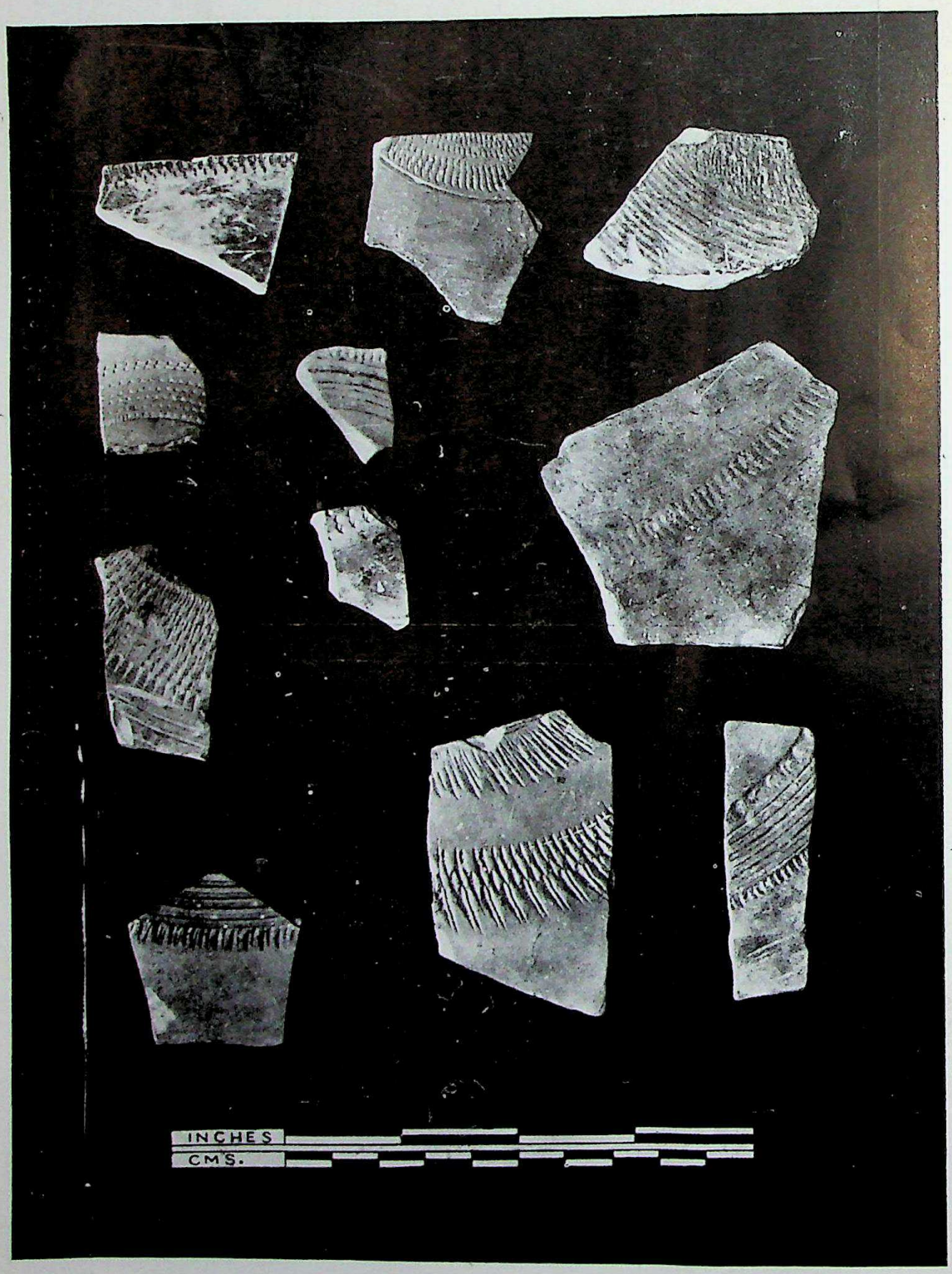

तामलुक : चक्रांकित ठीकरे, काल 3 (पृ० 18)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

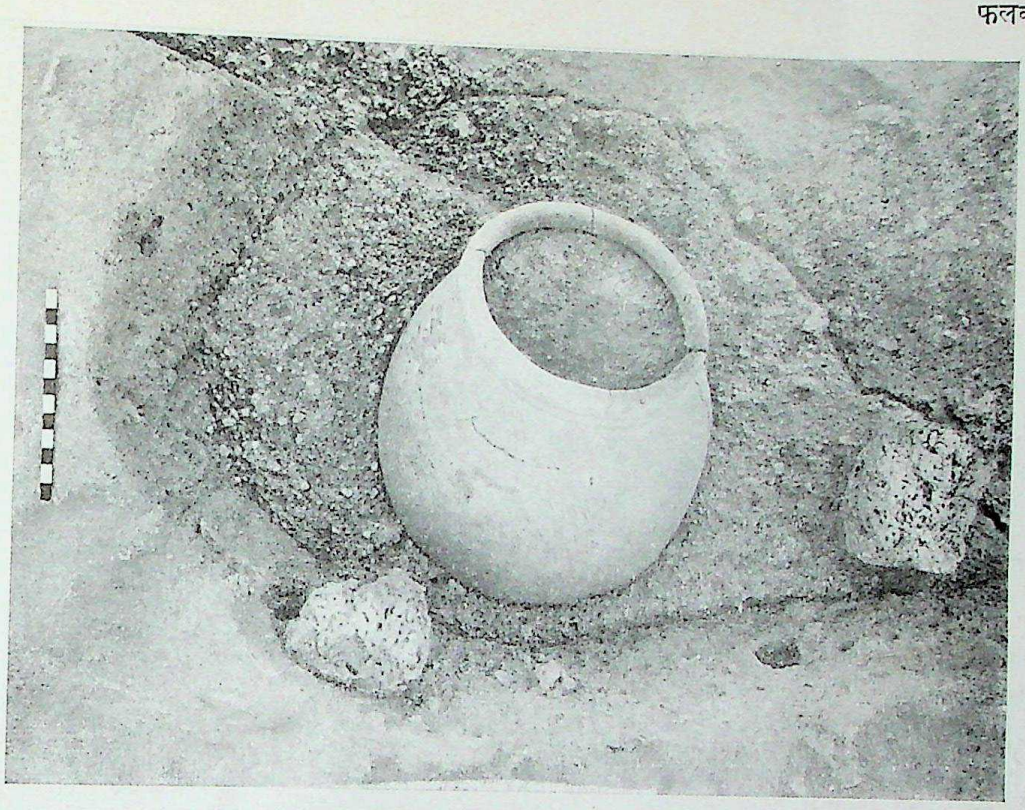

(क) अमृतमगलम् : शवभाण्ड (पृ० 19)

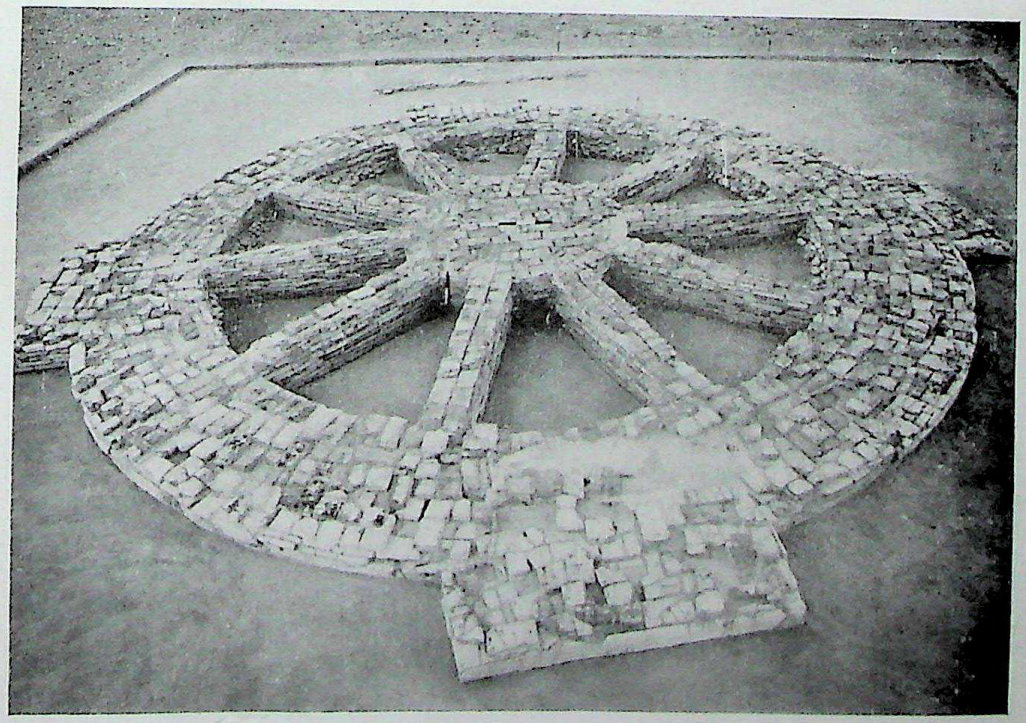

(ख) नागार्जुनकोंडा : महाचैत्य की चक्राकार पीठिका (पृ० 20)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तामलुक : चक्रांकित ठीकरे, काल 3 (पृ० 18)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

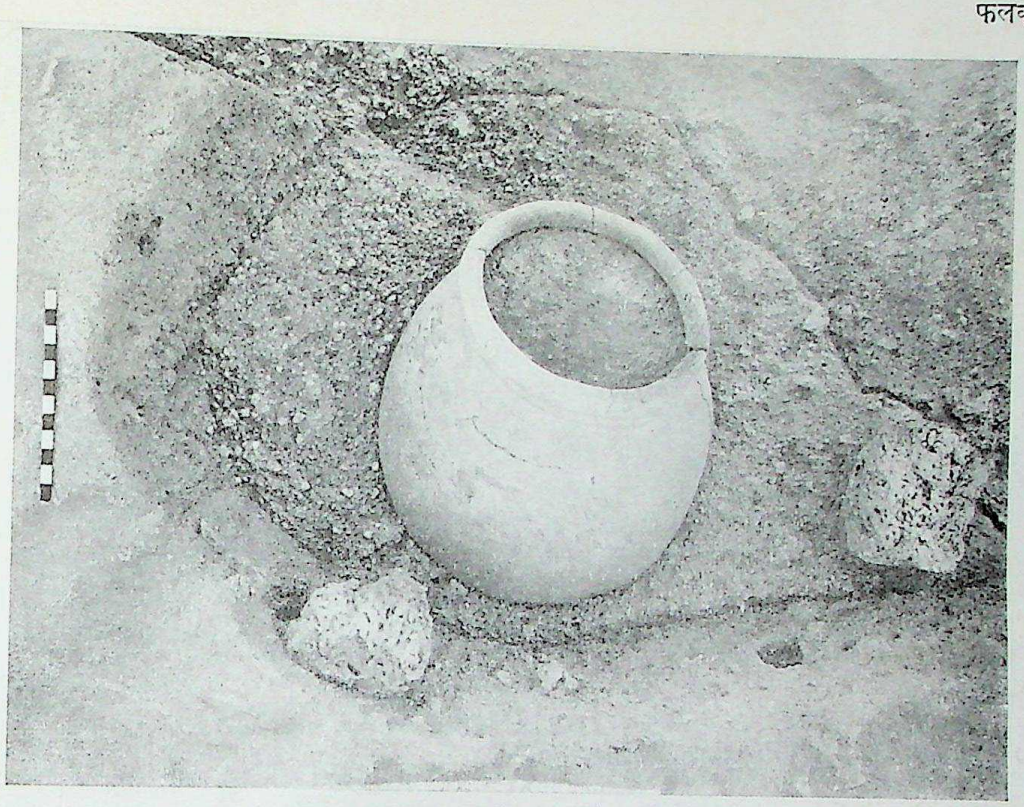

(क) अमृतमगलम् : शवभाण्ड (पृ० 19)

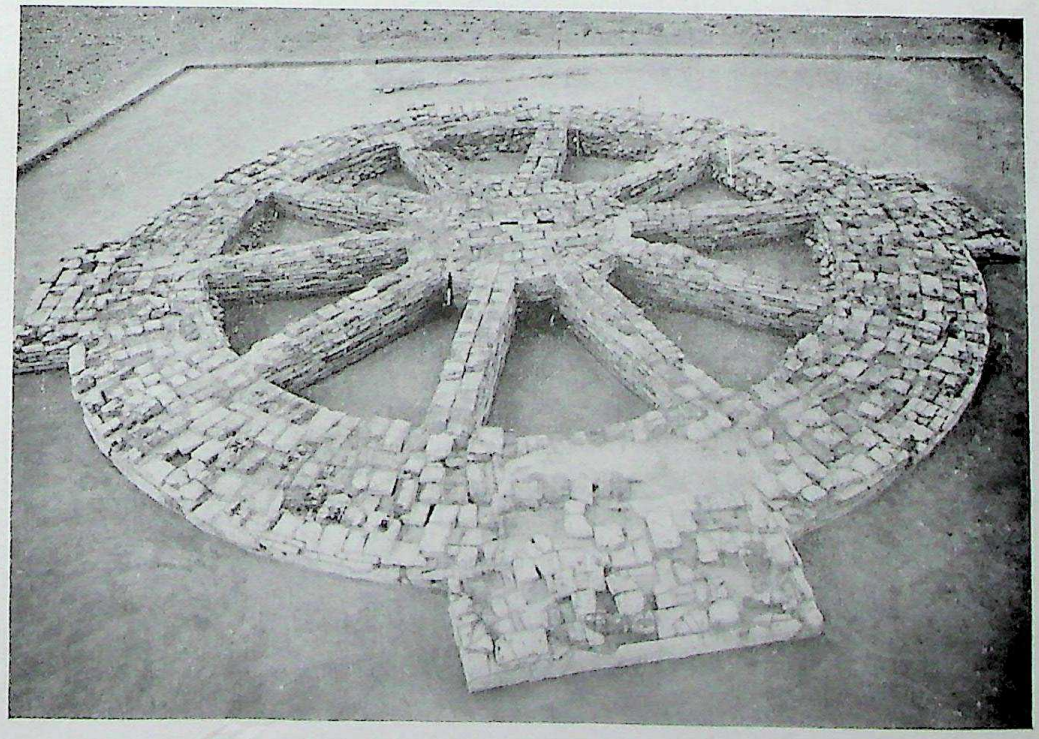

(ख) नागार्जुनकोंडा : महाचैत्य की चक्राकार पीठिका (पृ० 20)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

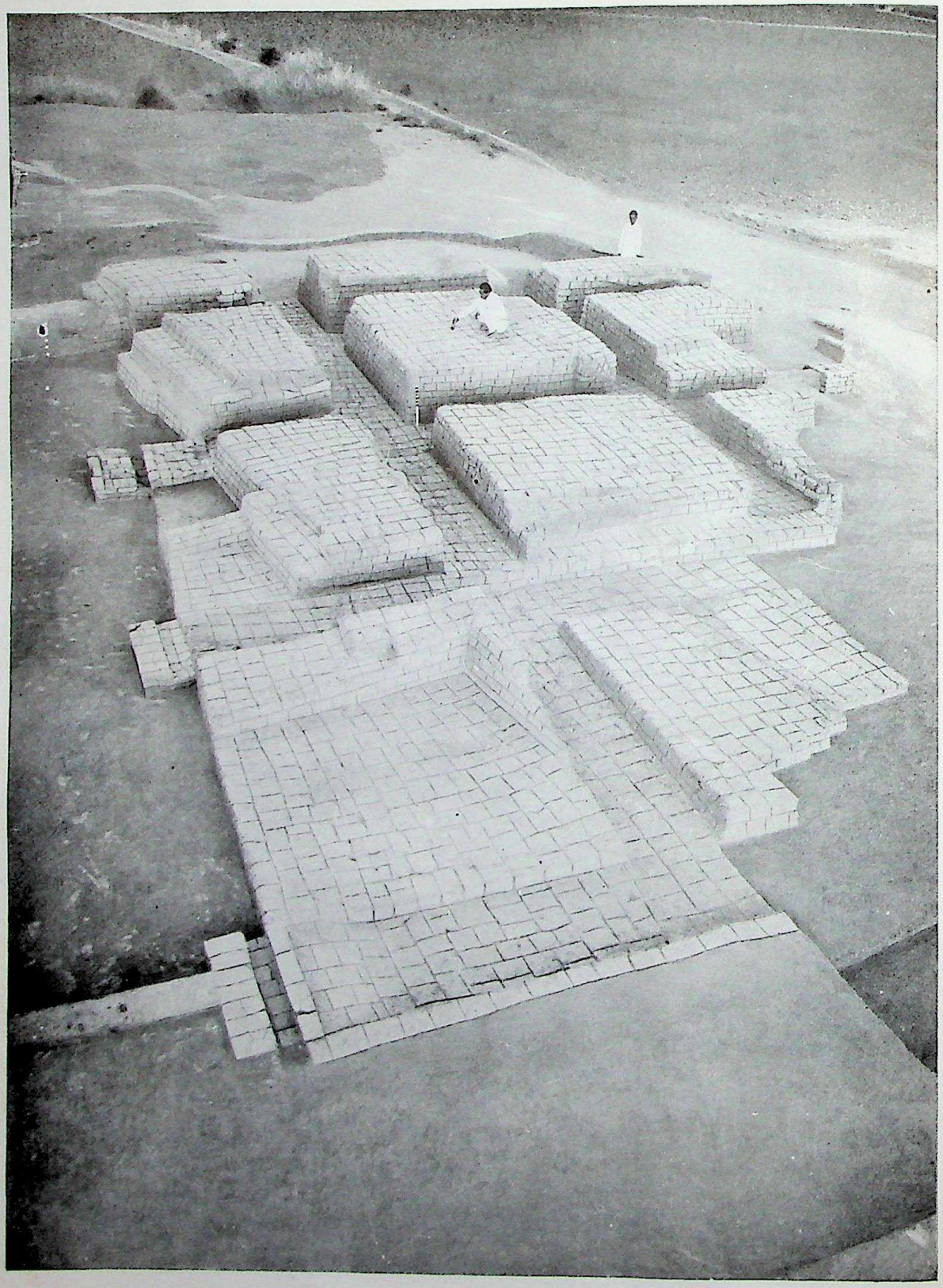

[लोथल : नालियों से विभाजित कच्ची ईंटों के ठोस चबूतरों का समूह, सम्भवतः एक भट्टा (पृ० 25)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

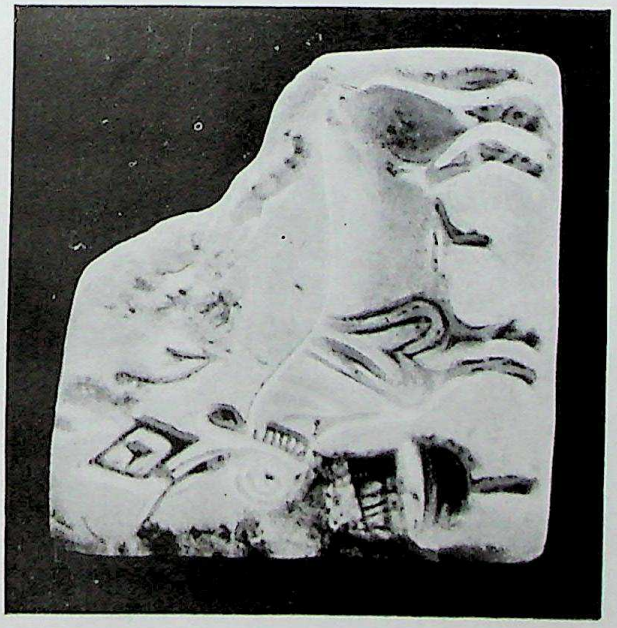

लोथल : खड़िया पत्थर की मुद्राएं (पृ० 25)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(क) नागदा : प्राचीन टोल की विहंगम दृश्य (पृ० 21)

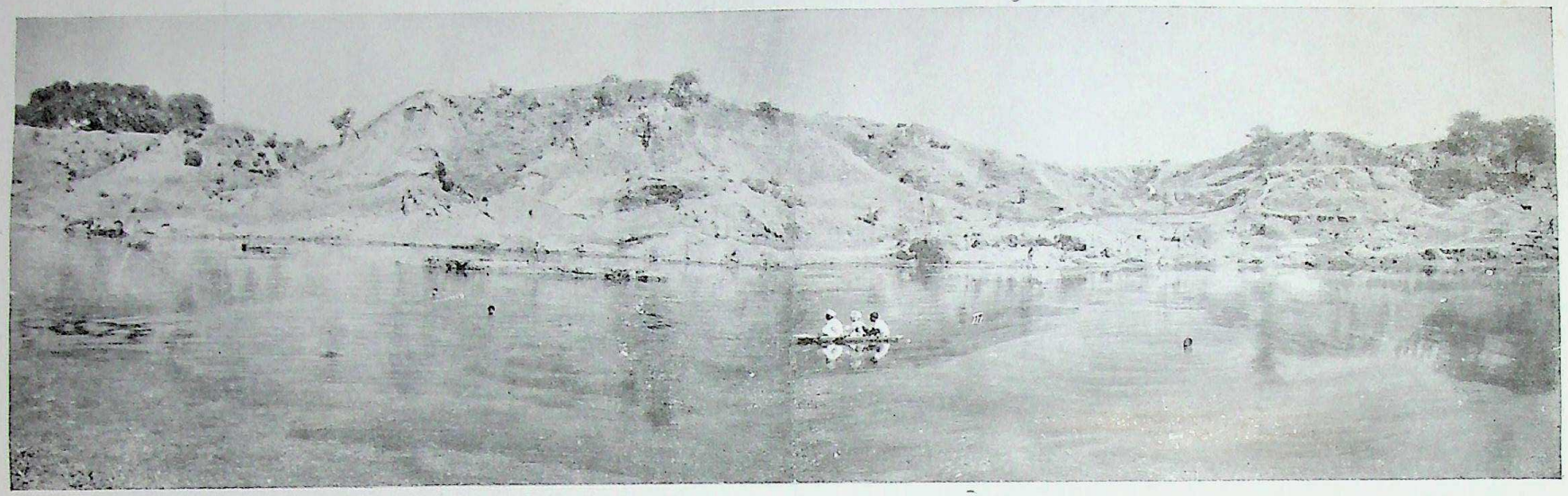

(ख) उज्जैन : गढ़कालिका टीले का विहंगम दृश्य (पृ० 28)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

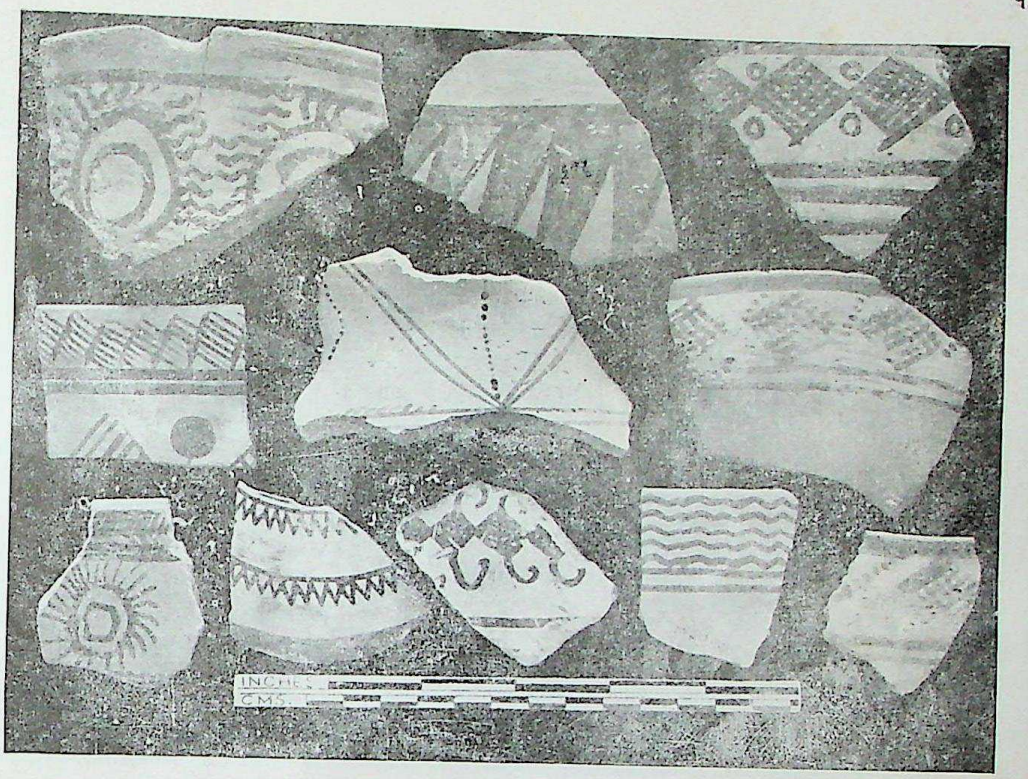

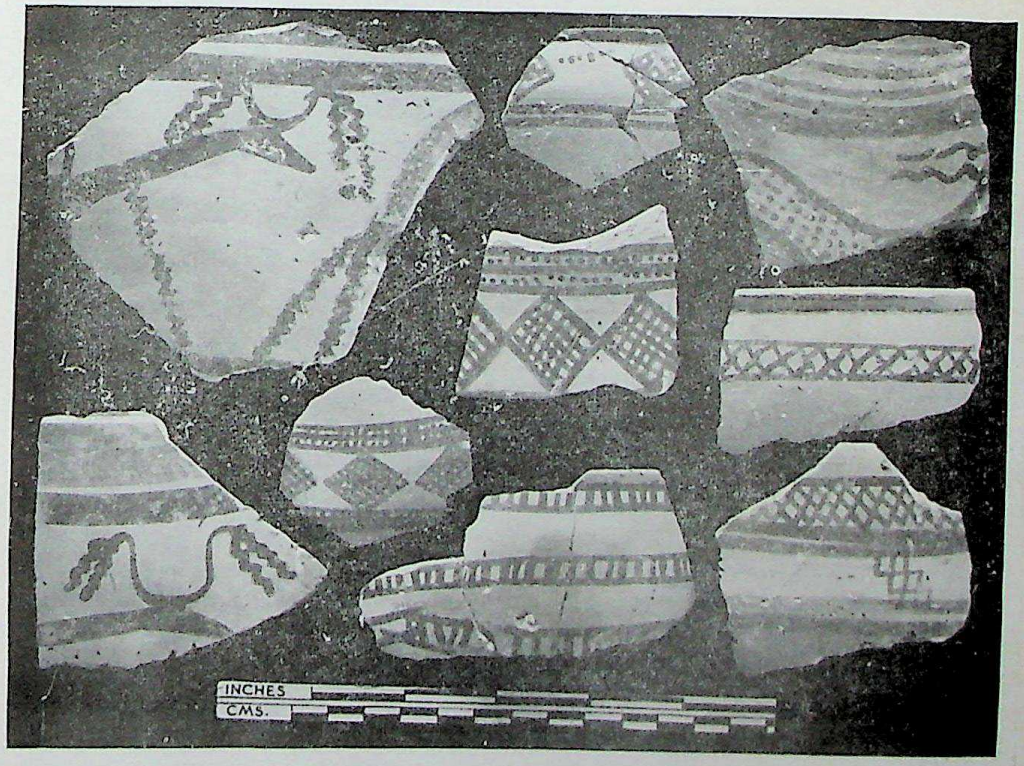

नागदा : चित्रित ठीकरे, काल 1, ताम्राश्मयुग (पृ० 28)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

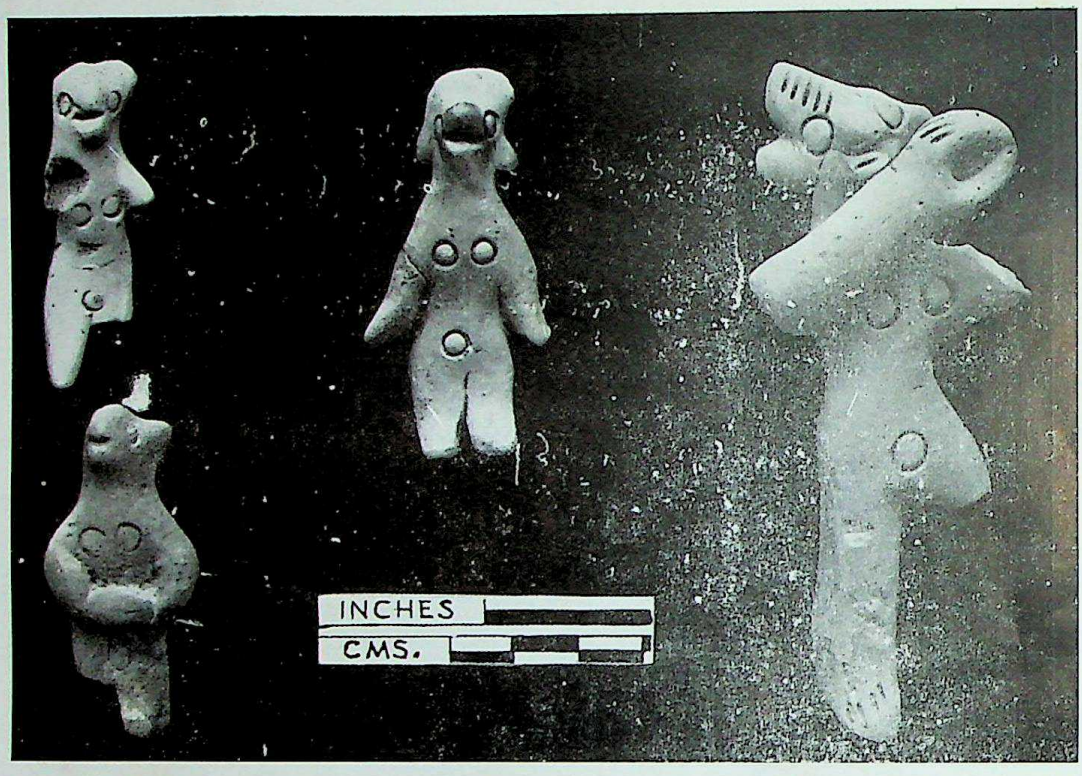

(क) पाटलिपुत्र : मृन्मय मूर्त्तियाँ, काल 1 (पृ० 30)

(ख) पाटलिपुत्र : अशोकस्तम्भ का ओपदार शीर्षखण्ड (पृ० 30)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(क) पाटलिपुत्र : सोने का एक तावीज, कुषाण मुद्रा की अनुकृति (पृ० 31)

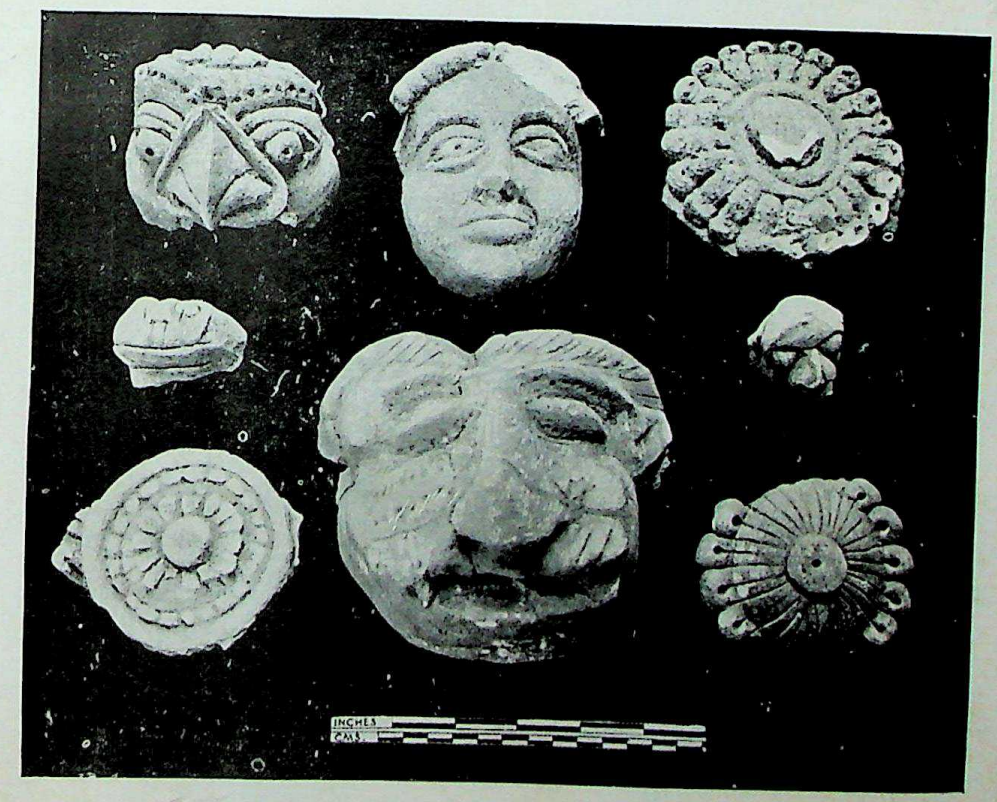

(ख) नागार्जुनकोंडा : गच की मूर्त्तियां (पृ० 33)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

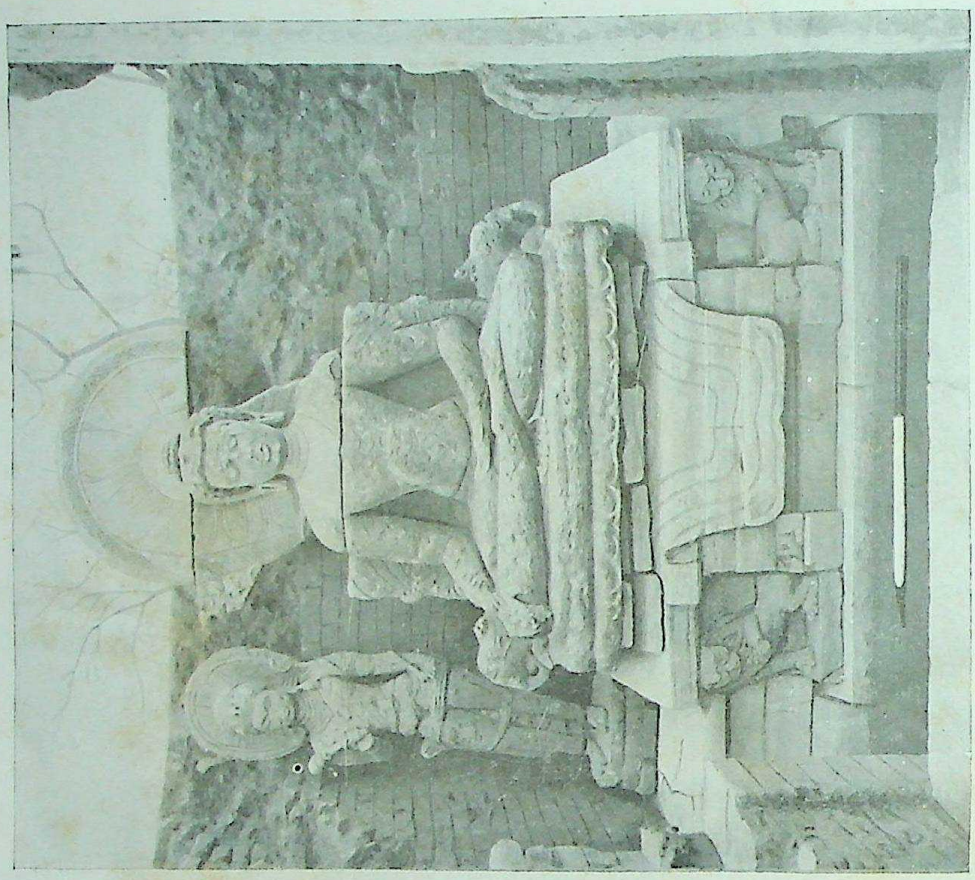

(ख) स्वस्तिकाकार विहार में स्थित बुद्ध और अवलोकितेश्वर (पृ० 34)

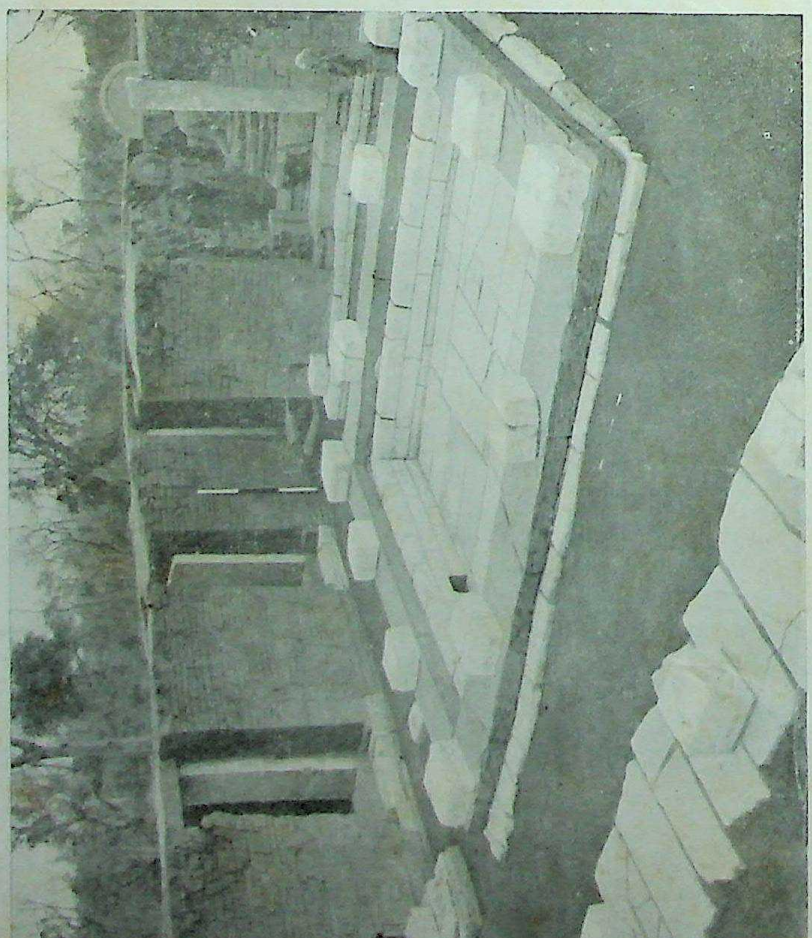

(क) सीरपर : स्वस्तिकाकार विहार, भीतरी भाग (पृ० 34)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

DGA.71.II
1000

Price : Inland Rs. 4.85 Paise
Foreign 11 sh. 4 d. or 1 $ 75 cents.

निदेशक, प्रकाशन विभाग, पुराना सचिवालय, दिल्ली-6, द्वारा सम्पादित तथा प्रकाशित और
प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित।